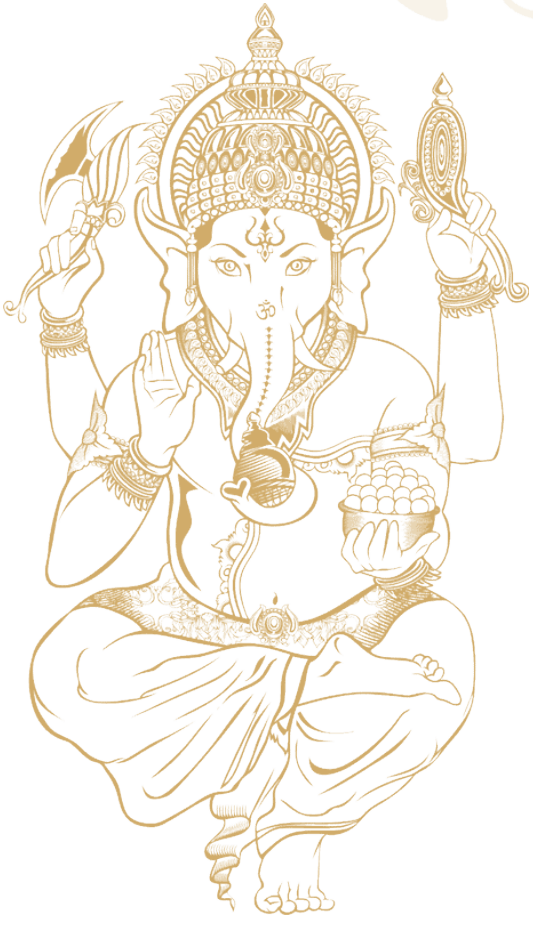

Mr. Mukesh shakya

15 Aug 1965

05:30 PM

Farrukhabad

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 119816301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**15/08/1965**
दिन	रविवार
जन्म समय	**17:30:00 घंटे**
इष्ट	29:29:09 घटी
स्थान	**Farrukhabad**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	27:23:00 उत्तर
रेखांश	79:35:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:11:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	17:18:20 घंटे
वेलान्तर	-00:04:29 घंटे
साम्पातिक काल	14:53:05 घंटे
सूर्योदय	05:42:20 घंटे
सूर्यास्त	18:49:33 घंटे
दिनमान	13:07:13 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	29:03:35 कर्क
लग्न के अंश	06:45:48 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मकर - शनि
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 1**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	सुकर्मा
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	दू-दूधेश्वर
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1887	श्रावण	24
पंजाबी	संवत : 2022	श्रावण	31
बंगाली	सन् : 1372	श्रावण	30
तमिल	संवत : 2022	आदी	31
केरल	कोल्लम : 1140	कर्कदम	31
नेपाली	संवत : 2022	श्रावण	31
चैत्रादि	संवत : 2022	भाद्रपद	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2022	श्रावण	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 19:32:41
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 16:00:28 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 17:49:21 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण _____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 06:46:52 घंटे
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 03:43:48
भभोग _____: 64:48:19
भोग्य दशा काल _____: शनि 17 वर्ष 10 मा 29 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

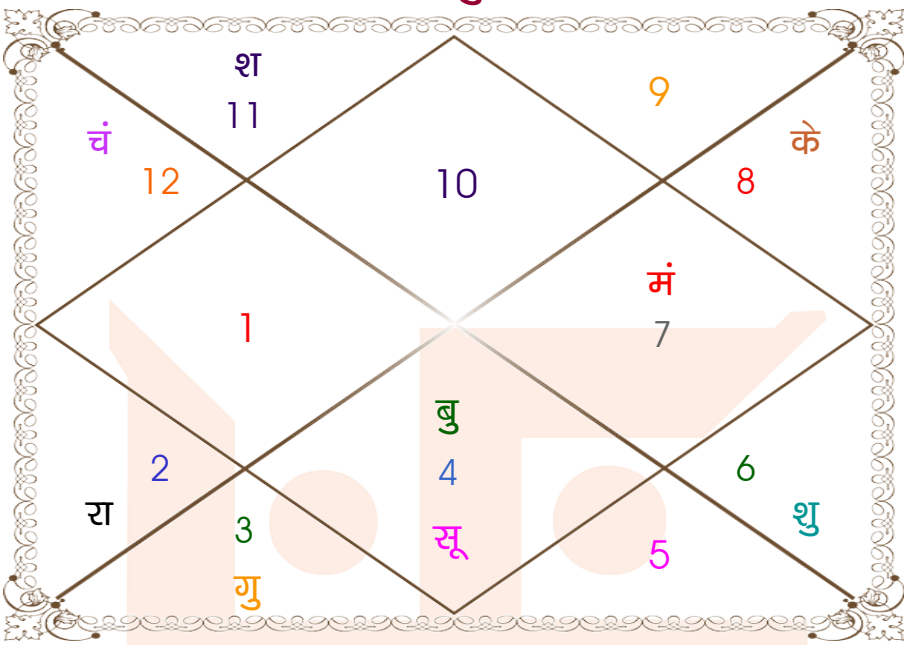

चन्द्र कुंडली

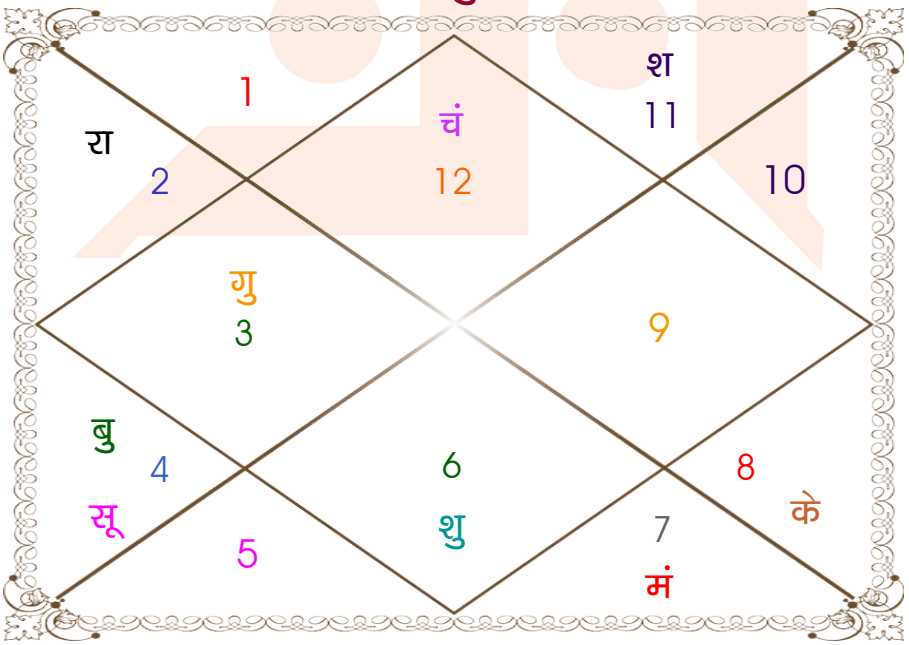

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

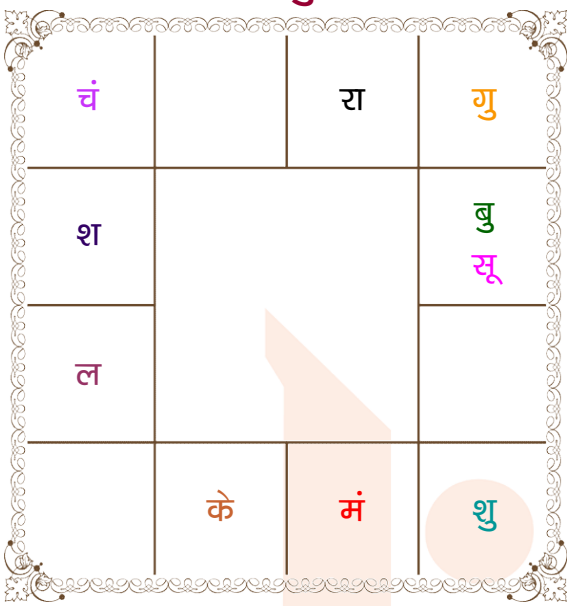

लग्न कुंडली

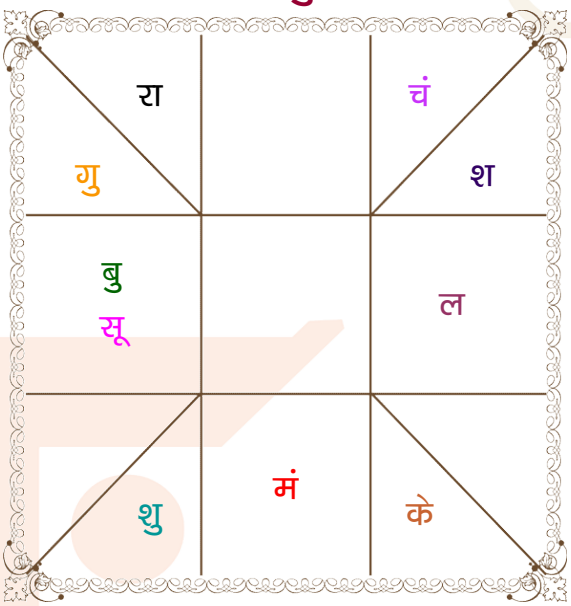

विंशोत्तरी
शनि 17वर्ष 10मा 29दि

शनि

15/08/1965

14/07/2084

शनि	15/07/1983
बुध	14/07/2000
केतु	15/07/2007
शुक्र	15/07/2027
सूर्य	15/07/2033
चन्द्र	15/07/2043
मंगल	15/07/2050
राहु	14/07/2068
गुरु	14/07/2084

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 8मा 17दि

संकटा

03/05/2019

03/05/2027

संकटा	11/02/2021
मंगला	03/05/2021
पिंगला	12/10/2021
धान्या	13/06/2022
भ्रामरी	03/05/2023
भद्रिका	12/06/2024
उल्का	12/10/2025
सिद्धा	03/05/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	06:45:48	395:45:22	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	बुध	---
सूर्य			कर्क	29:03:35	00:57:39	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र			मीन	04:05:45	12:16:07	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
मंगल			तुला	03:29:19	00:37:17	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
बुध	व	अ	कर्क	29:35:49	00:50:13	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
गुरु			मिथु	01:43:36	00:10:16	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	01:46:58	01:11:55	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	नीच राशि
शनि	व		कुंभ	22:04:22	00:04:01	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	स्वराशि
राहु	व		वृष	17:25:32	00:10:07	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	17:25:32	00:10:07	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	मित्र राशि
हर्ष			सिंह	20:23:53	00:03:35	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
नेप			तुला	23:56:07	00:00:32	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
प्लूटो			सिंह	21:52:26	00:02:00	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			तुला	22:21:44	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:22:22

लग्न-चलित

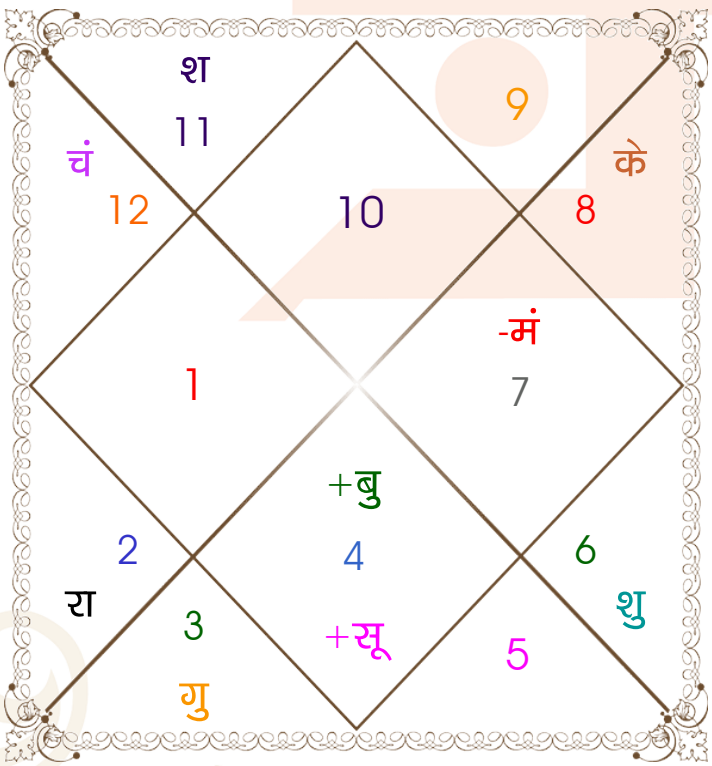

चन्द्र कुंडली

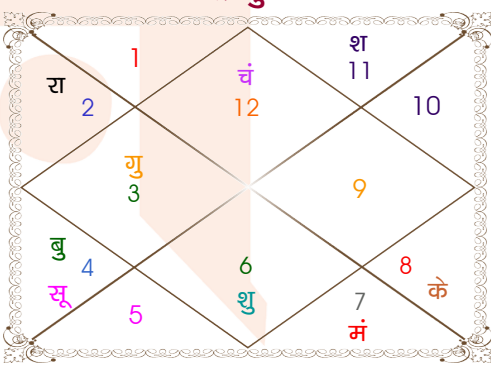

नवमांश कुंडली

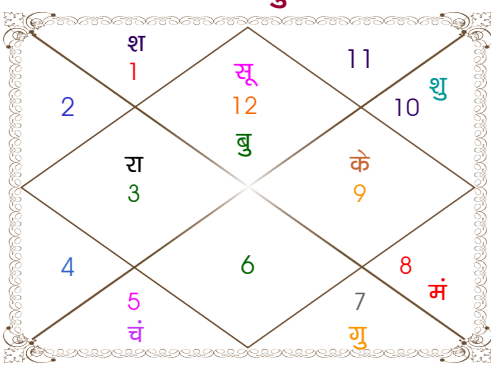

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	धनु	24:21:47	मकर	06:45:48
2	मकर	24:21:47	कुम्भ	11:57:47
3	कुम्भ	29:33:46	मीन	17:09:45
4	मेष	04:45:45	मेष	22:21:44
5	वृष	04:45:45	वृष	17:09:45
6	वृष	29:33:46	मिथुन	11:57:47
7	मिथुन	24:21:47	कर्क	06:45:48
8	कर्क	24:21:47	सिंह	11:57:47
9	सिंह	29:33:46	कन्या	17:09:45
10	तुला	04:45:45	तुला	22:21:44
11	वृश्चिक	04:45:45	वृश्चिक	17:09:45
12	वृश्चिक	29:33:46	धनु	11:57:47

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	06:45:48
2	कुम्भ	15:23:50
3	मीन	22:11:15
4	मेष	22:21:44
5	वृष	17:26:14
6	मिथुन	10:53:12
7	कर्क	06:45:48
8	सिंह	15:23:50
9	कन्या	22:11:15
10	तुला	22:21:44
11	वृश्चिक	17:26:14
12	धनु	10:53:12

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

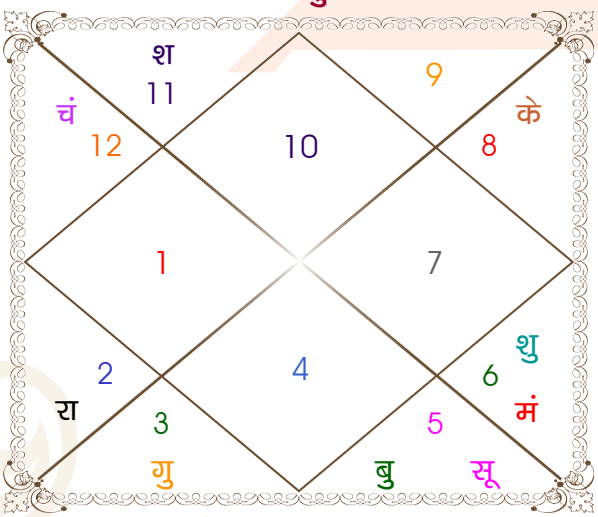

भाव कुंडली

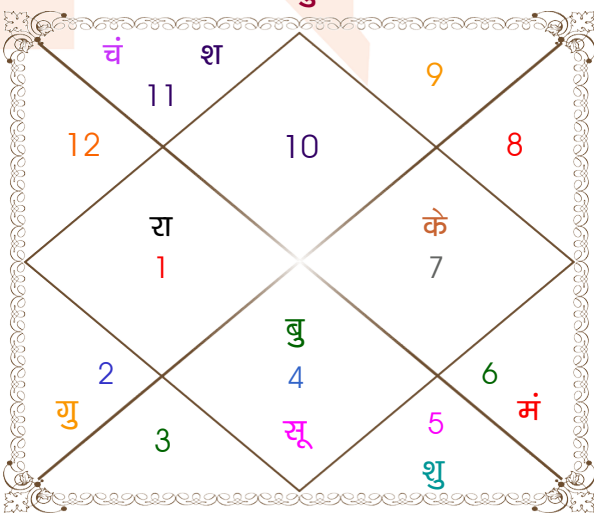

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	बाल	मुदित	उपवेशन	3.94	69 %
चंद्र	मातृ	मातृ	मृत	शक्त	शयन	7.27	59 %
मंगल	पुत्र	भ्रातृ	बाल	निपीदित	गमन	2.18	34 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	विकल	गमन	0.00	58 %
गुरु	कलत्र	धन	बाल	खल	आगमन	5.71	68 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	भीत	गमन	1.49	63 %
शनि	भ्रातृ	आयु	वृद्ध	स्वस्थ	आगमन	2.41	47 %
राहु	---	ज्ञान	युवा	मुदित	गमन	0.00	97 %
केतु	---	मोक्ष	युवा	मुदित	गमन	0.00	97 %
कुल						23.00	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

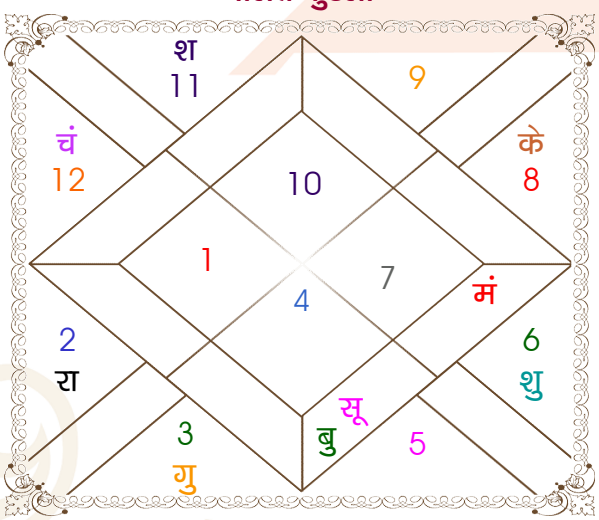

लग्न-चलित

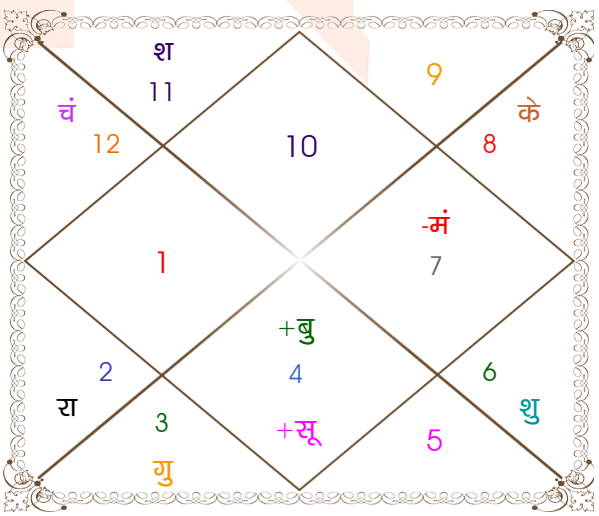

सुदर्शन चक्र

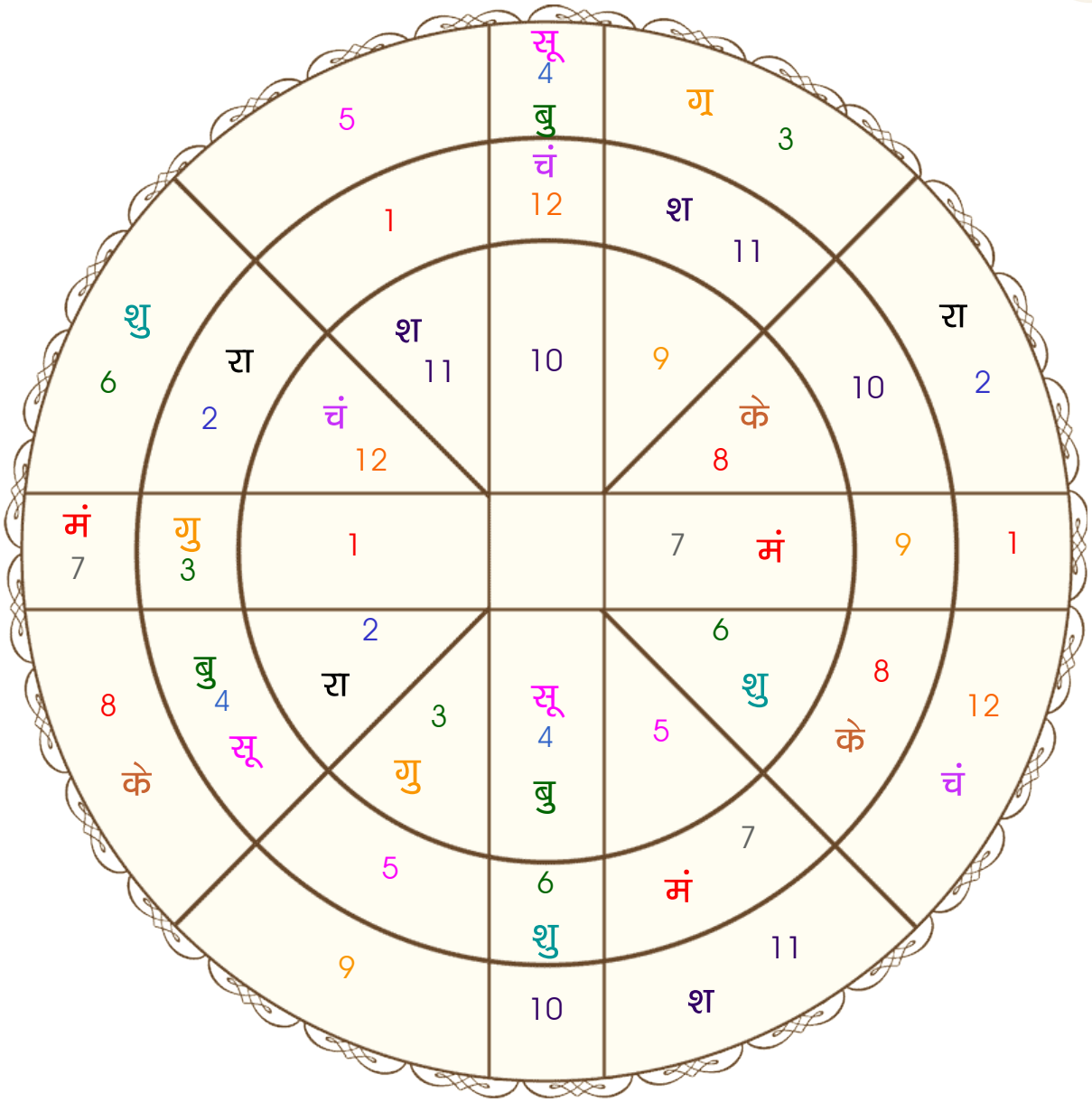

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 9 मास 9 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कर्क	29:09:25	चंद्र	बुध	शनि	चंद्र
चंद्र		मीन	04:11:35	गुरु	शनि	शनि	शुक्र
मंगल		तुला	03:35:09	शुक्र	मंगलशुक्र		राहु
बुध	व	कर्क	29:41:40	चंद्र	बुध	शनि	राहु
गुरु		मिथु	01:49:26	बुध	मंगलबुध		शनि
शुक्र		कन्या	01:52:49	बुध	सूर्य	गुरु	बुध
शनि	व	कुंभ	22:10:13	शनि	गुरु	शनि	बुध
राहु	व	वृष	17:31:22	शुक्र	चंद्र	शनि	गुरु
केतु	व	वृश्चि	17:31:22	मंगलबुध	बुध		चंद्र
हर्ष		सिंह	20:29:44	सूर्य	शुक्र	गुरु	शनि
नेप		तुला	24:01:58	शुक्र	गुरु	बुध	बुध
प्लूटो		सिंह	21:58:17	सूर्य	शुक्र	शनि	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मक	06:51:38	शनि	सूर्य	बुध	शनि
2	कुंभ	15:29:41	शनि	राहु	शुक्र	शुक्र
3	मीन	22:17:05	गुरु	बुध	चंद्र	चंद्र
4	मेष	22:27:35	मंगलशुक्र		शनि	बुध
5	वृष	17:32:05	शुक्र	चंद्र	शनि	गुरु
6	मिथु	10:59:03	बुध	राहु	शनि	बुध
7	कर्क	06:51:38	चंद्र	शनि	बुध	गुरु
8	सिंह	15:29:41	सूर्य	शुक्र	शुक्र	केतु
9	कन्या	22:17:05	बुध	चंद्र	शुक्र	बुध
10	तुला	22:27:35	शुक्र	गुरु	शनि	केतु
11	वृश्चि	17:32:05	मंगलबुध		बुध	चंद्र
12	धनु	10:59:03	गुरु	केतु	शनि	राहु

के.पी. अयनांश : 23:16:31

फॉरच्युना : सिंह 11:53:48

लग्न कुंडली

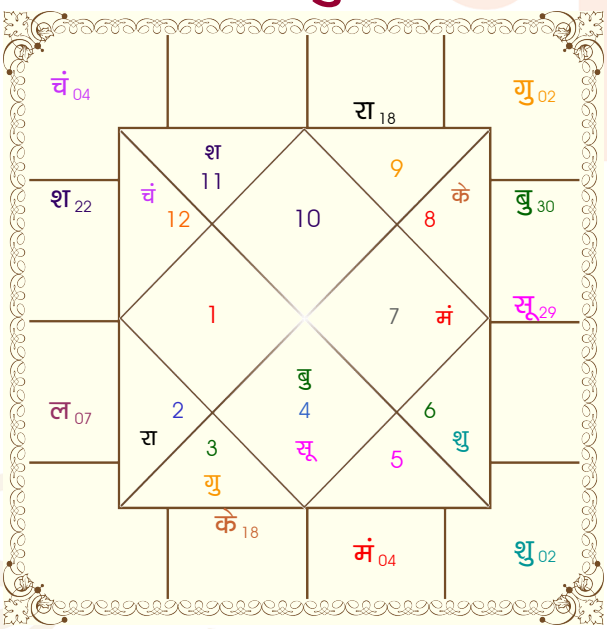

भाव कुंडली

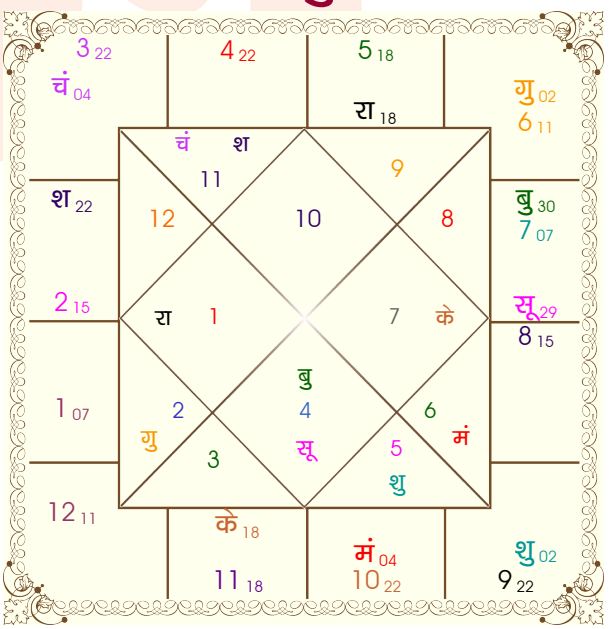

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- शनि-
2	चंद्र+ शनि, राहु,
3	गुरु- शनि-
4	मंगल, गुरु- राहु,
5	गुरु, शुक्र- शनि,
6	सूर्य- बुध, केतु-
7	सूर्य+ चंद्र- बुध+ शुक्र, राहु- केतु,
8	सूर्य- शुक्र+
9	सूर्य- मंगल+ बुध, गुरु, केतु-
10	शुक्र- केतु,
11	मंगल, गुरु-
12	गुरु- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	6- 7+ 8- 9-
चंद्र	1- 2+ 7-
मंगल	4, 9+ 11,
बुध	6, 7+ 9,
गुरु	3- 4- 5, 9, 11- 12-
शुक्र	5- 7, 8+ 10-
शनि	1- 2, 3- 5, 12-
राहु	2, 4, 7-
केतु	6- 7, 9- 10,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	सूर्य
लग्न राशि स्वामी	शनि
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	सूर्य
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	चं	श
2	चं रा	चं श	चं	श
3	--	--	श	गु
4	--	रा	मं गु	मं
5	श	गु	--	शु
6	--	--	सू बु के	बु
7	सू बु शु के	सू बु	रा	चं
8	--	शु	शु	सू
9	मं गु	मं	सू बु के	बु
10	--	के	--	शु
11	--	--	मं गु	मं
12	--	--	श	गु

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	8	1	कर्क	7
चंद्र	7	5,9	मीन	2
मंगल	4,11	---	तुला	9
बुध	6,9	3,11	कर्क	7
गुरु	3,12	10	मिथुन	5
शुक्र	5,10	4,8	कन्या	8
शनि	1,2	7	कुम्भ	2
राहु	---	2,6	वृष	4
केतु	---	12	वृश्चिक	10

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	6,9	3,11	7	1,2	7	2
चंद्र	1,2	7	2	1,2	7	2
मंगल	4,11	---	9	5,10	4,8	8
बुध	6,9	3,11	7	1,2	7	2
गुरु	4,11	---	9	6,9	3,11	7
शुक्र	8	1	7	3,12	10	5
शनि	3,12	10	5	1,2	7	2
राहु	7	5,9	2	1,2	7	2
केतु	6,9	3,11	7	6,9	3,11	7

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	119.06	334.10	183.49	119.60	61.73	151.78	322.07	47.43	227.43	140.40	203.94	141.87
सूर्य	--	--	तृती	युति	--	--	--	--	--	--	चतु	--
119.06	0.00	0.00	1.20	9.98	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.68	0.00
चंद्र	--	--	--	--	चतु	सप्त	युति	--	--	सप्त	--	सप्त
334.10	0.00	0.00	0.00	0.00	2.44	9.71	3.07	0.00	0.00	1.36	0.00	2.87
मंगल	--	षष्ठ	--	--	--	--	--	8वां	--	--	--	--
183.49	0.00	0.58	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.11	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	युति	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--
119.60	9.98	0.00	1.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.27	0.00
गुरु	तृती	--	5वां	तृती	--	चतु	--	युति	सप्त	--	--	--
61.73	2.30	0.00	9.83	2.55	0.00	3.00	0.00	0.73	0.73	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	सप्त	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	--	युति
151.78	0.00	9.71	0.00	0.00	0.00	0.00	5.26	0.00	0.00	3.70	0.00	5.08
शनि	--	युति	--	--	--	सप्त	--	चतु	10वा	सप्त	--	सप्त
322.07	0.00	3.07	0.00	0.00	0.00	5.26	0.00	1.04	8.84	9.85	0.00	10.00
राहु	पंचा	--	--	पंचा	युति	--	--	--	सप्त	चतु	--	चतु
47.43	0.84	0.00	0.00	0.96	0.73	0.00	0.00	0.00	10.00	2.14	0.00	1.19
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	चतु	सप्त	--	--	--	--
227.43	0.00	0.00	0.00	0.00	0.73	0.00	1.04	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	युति	सप्त	--	चतु	--	तृती	युति
140.40	0.00	1.36	0.00	0.00	0.00	3.70	9.85	0.00	2.14	0.00	1.80	9.88
नेप	--	--	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--
203.94	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	युति	सप्त	--	चतु	युति	तृती	--
141.87	0.00	2.87	0.00	0.00	0.00	5.08	10.00	0.00	1.19	9.88	2.57	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	276.76	311.96	347.16	22.36	47.16	71.96	96.76	131.96	167.16	202.36	227.16	251.96
सूर्य	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
119.06	0.00	2.18	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.18	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--
334.10	0.00	0.00	2.01	0.00	0.00	0.00	2.30	0.00	2.01	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	--	--	8वां	8वां	--	--	--	--	--	--	--
183.49	9.42	0.00	0.00	3.95	1.38	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
बुध	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
119.60	0.00	2.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.72	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	5वां	--	सप्त	सप्त
61.73	0.00	4.78	0.00	0.00	0.00	4.78	0.00	0.00	0.46	0.00	0.46	4.78
शुक्र	पंच	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
151.78	0.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	चतु	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
322.07	0.00	4.90	0.00	10.00	0.84	0.00	0.00	4.90	0.00	0.00	8.71	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--
47.43	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	2.99	0.00	10.00	0.00
केतु	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
227.43	0.00	0.42	2.99	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--
140.40	0.00	6.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.35	0.00	0.00	1.99	0.00
नेप	पंचा	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
203.94	0.27	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00
प्लूटो	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--
141.87	0.98	5.08	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.08	0.00	2.98	0.99	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	276.76	315.40	352.19	22.36	47.44	70.89	96.76	135.40	172.19	202.36	227.44	250.89
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
119.06	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	पंच	--	--	--	--	--
334.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	--	--	8वां	8वां	--	--	--	युति	--	--	--
183.49	9.42	0.00	0.00	3.95	1.10	0.00	0.00	0.00	3.78	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
119.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	9वां	--	--	--	युति	--	--	5वां	--	सप्त	सप्त
61.73	0.00	1.39	0.00	0.00	0.00	5.74	0.00	0.00	5.41	0.00	0.74	5.74
शुक्र	पंच	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
151.78	0.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	युति	--	3रा	चतु	--	--	सप्त	--	--	10वा	--
322.07	0.00	7.65	0.00	10.00	1.05	0.00	0.00	7.65	0.00	0.00	8.84	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--
47.43	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.96	0.00	10.00	0.00
केतु	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
227.43	0.00	2.59	0.96	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00
हर्ष	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--
140.40	0.00	8.66	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.66	0.00	0.00	2.14	0.00
नेप	पंचा	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
203.94	0.27	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00
प्लूटो	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--
141.87	0.98	7.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.79	0.00	2.98	1.19	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

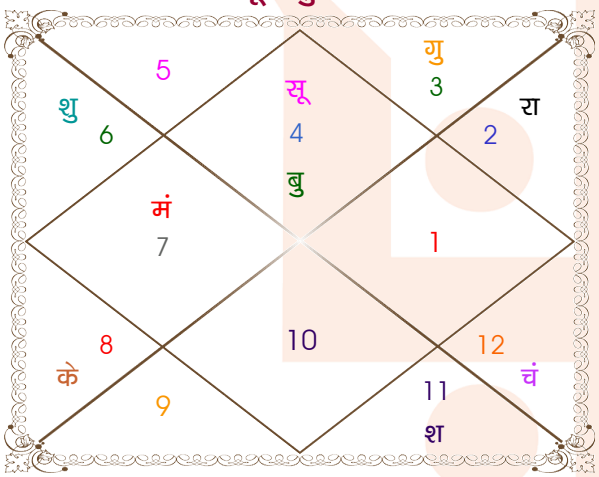

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

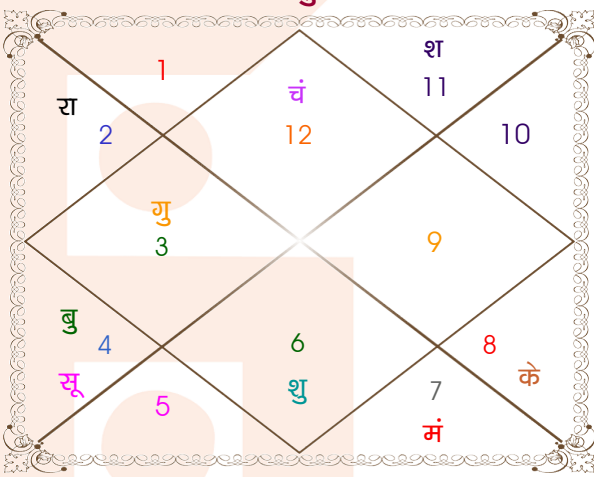

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

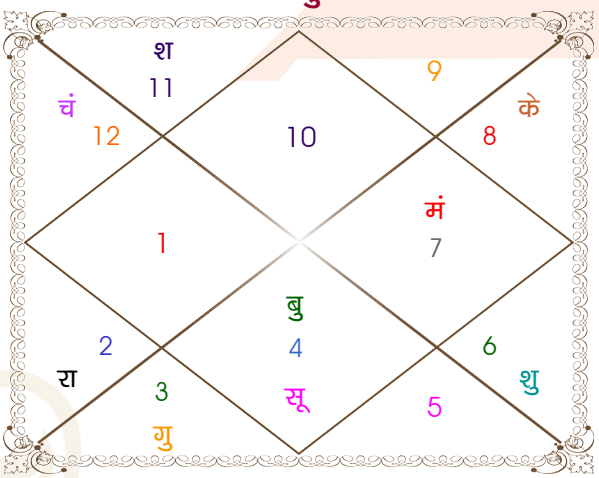

देह विचारः

होरा कुंडली

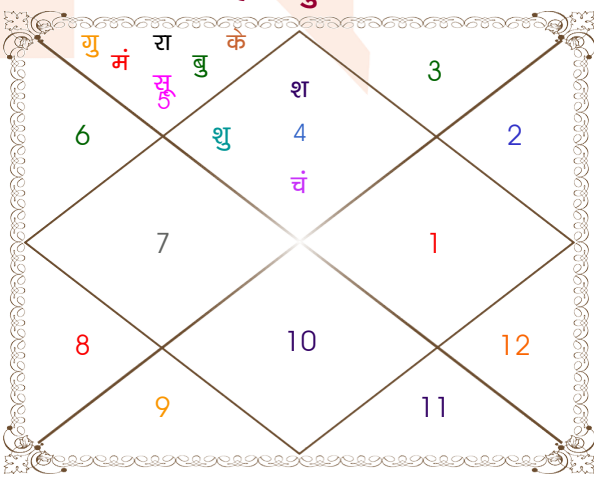

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

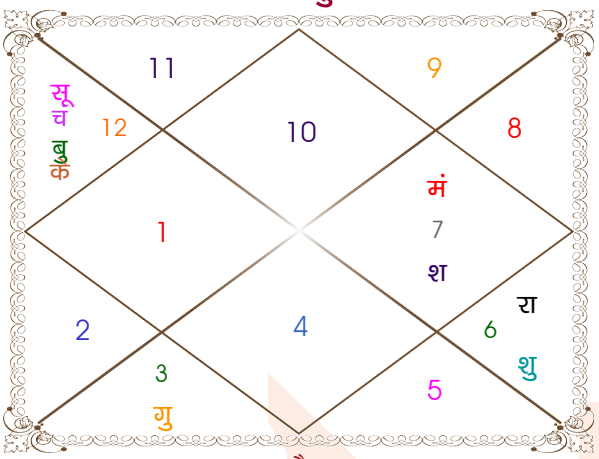

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

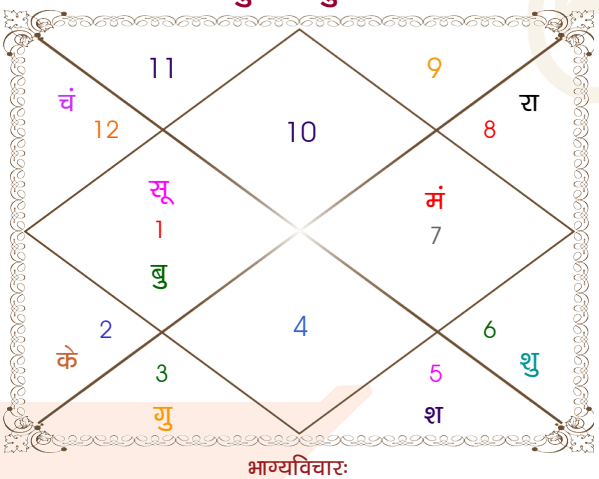

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

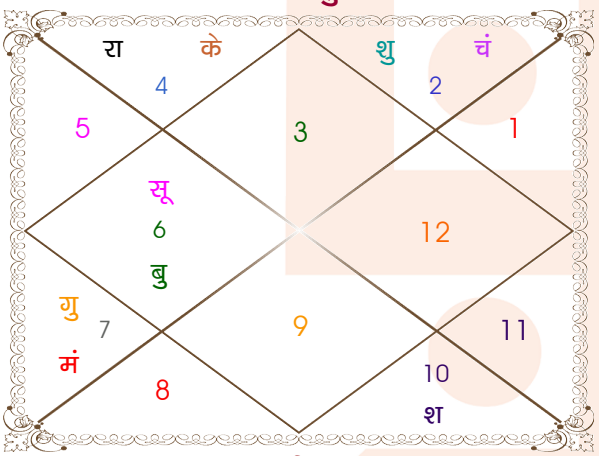

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

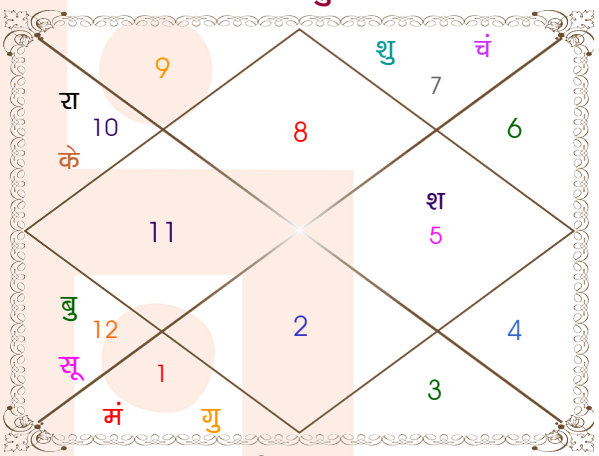

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

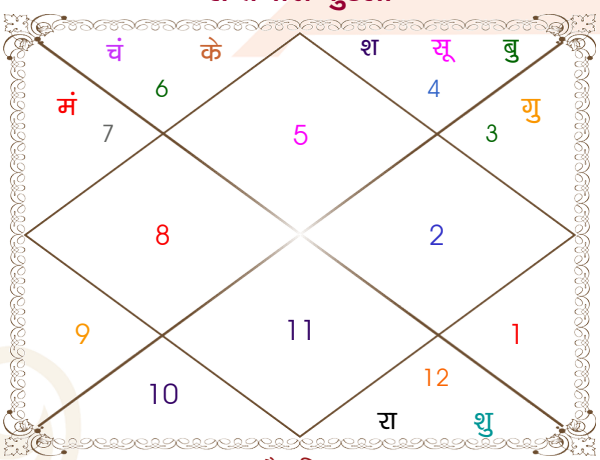

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

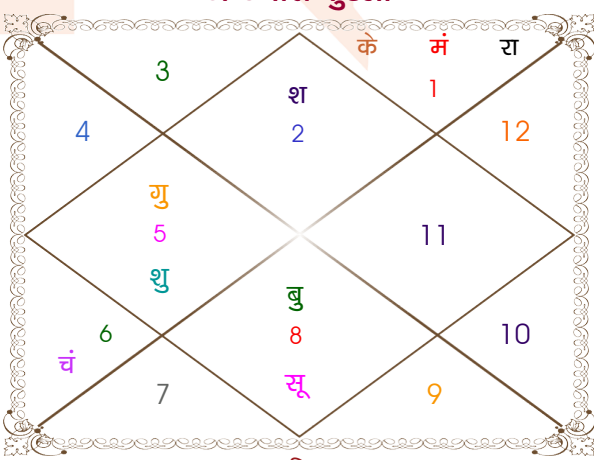

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

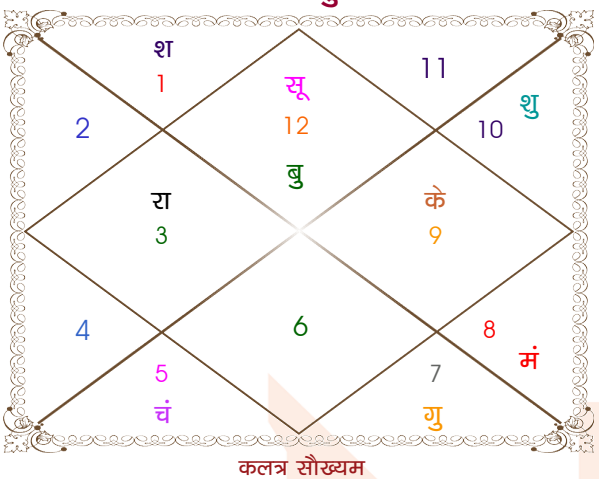

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

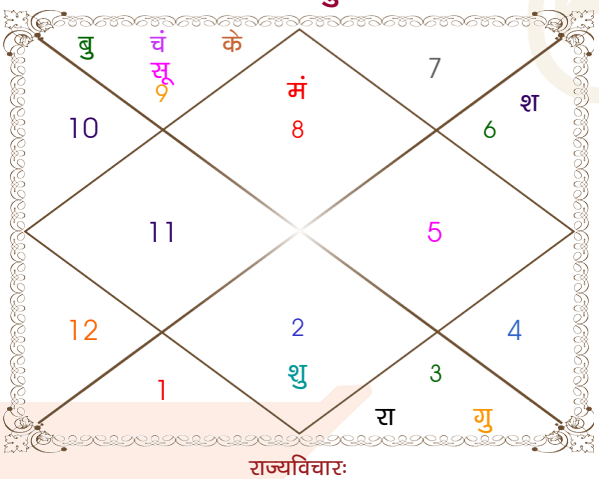

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

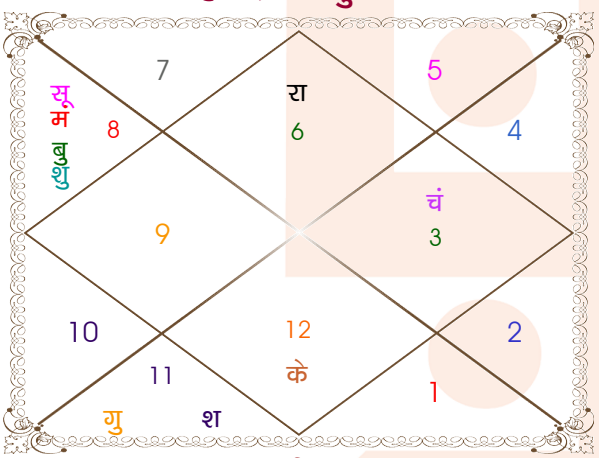

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

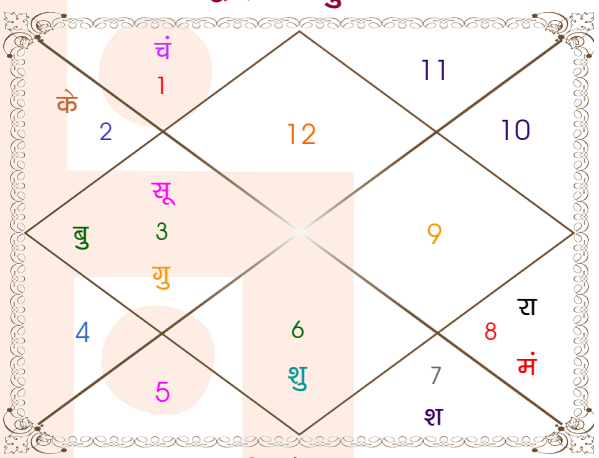

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

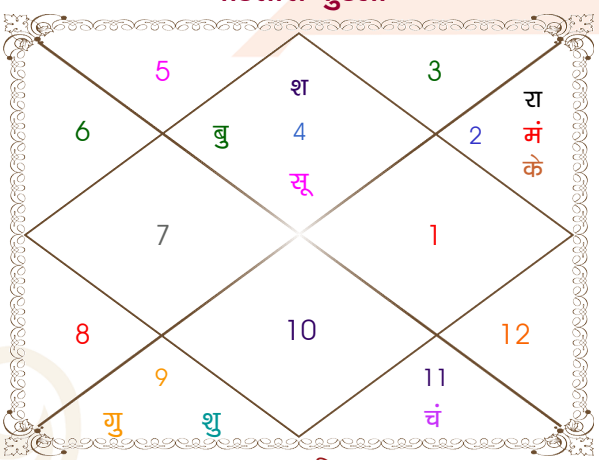

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

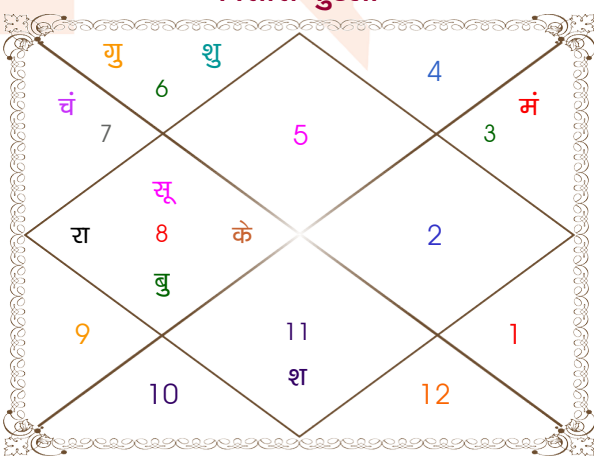

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

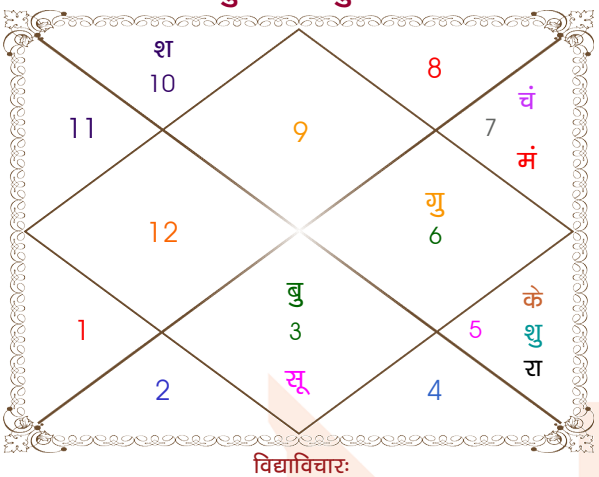

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

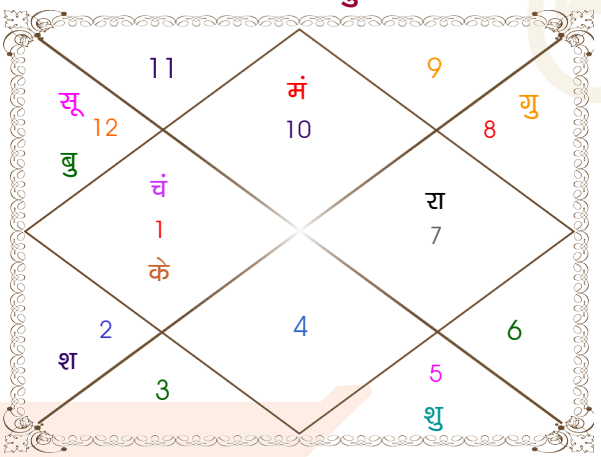

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

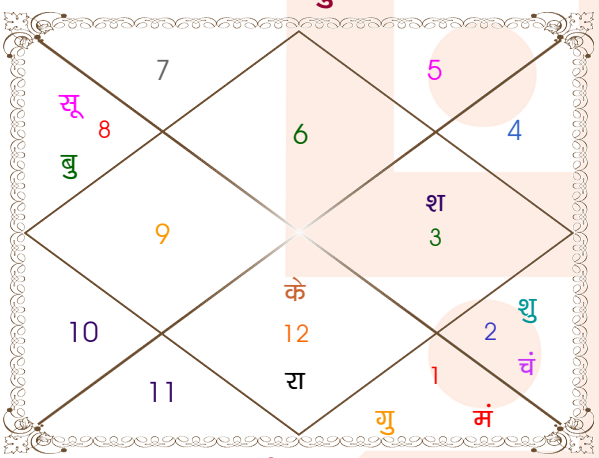

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

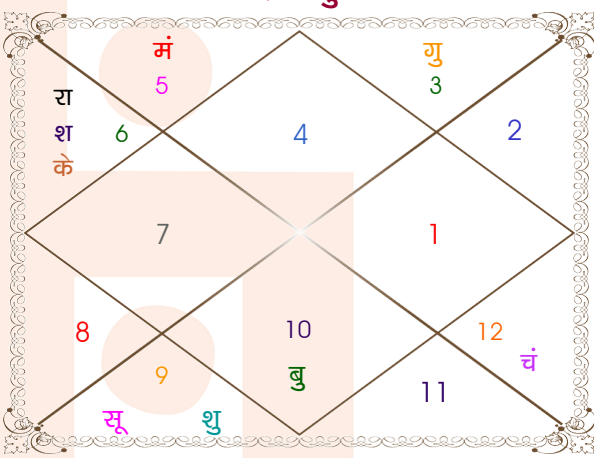

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

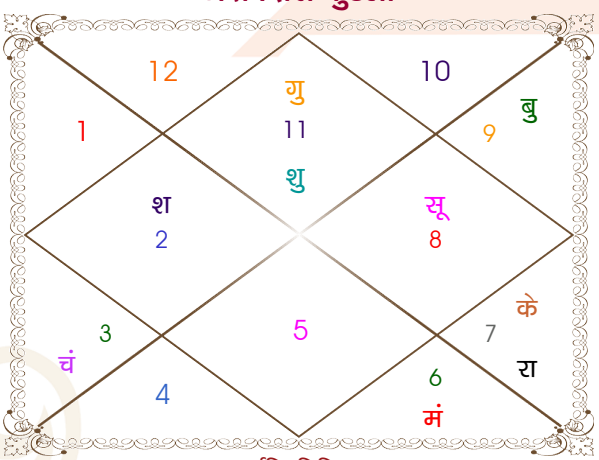

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

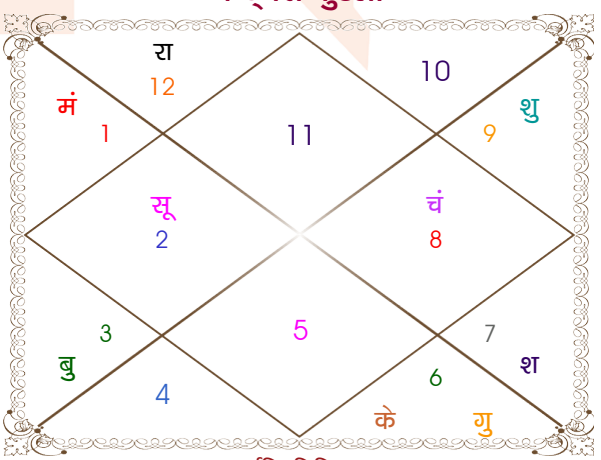

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मक	कर्क	मीन	तुला	कर्क	मिथु	कन्या	कुंभ	वृष	वृश्चि
होरा	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	मीन	मीन	तुला	मीन	मिथु	कन्या	तुला	कन्या	मीन
चतुर्थांश	मक	मेष	मीन	तुला	मेष	मिथु	कन्या	सिंह	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	सिंह	कर्क	कन्या	तुला	कर्क	मिथु	मीन	कर्क	मीन	कन्या
नवमांश	मीन	मीन	सिंह	वृश्चि	मीन	तुला	मक	मेष	मिथु	धनु
दशमांश	वृश्चि	धनु	धनु	वृश्चि	धनु	मिथु	वृष	कन्या	मिथु	धनु
द्वादशांश	मीन	मिथु	मेष	वृश्चि	मिथु	मिथु	कन्या	तुला	वृश्चि	वृष
षोडशांश	कर्क	कर्क	कुंभ	वृष	कर्क	धनु	धनु	कर्क	वृष	वृष
विंशांश	सिंह	वृश्चि	तुला	मिथु	वृश्चि	कन्या	कन्या	कुंभ	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	धनु	मिथु	तुला	तुला	मिथु	कन्या	सिंह	मक	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	मक	मीन	मेष	मक	मीन	वृश्चि	सिंह	वृष	तुला	मेष
त्रिंशांश	कन्या	वृश्चि	वृष	मेष	वृश्चि	मेष	वृष	मिथु	मीन	मीन
खवेदांश	कर्क	धनु	मीन	सिंह	मक	मिथु	धनु	कन्या	कन्या	कन्या
अक्षवेदांश	कुंभ	वृश्चि	मिथु	कन्या	धनु	कुंभ	कुंभ	वृष	तुला	तुला
षष्ट्यंश	कुंभ	वृष	वृश्चि	मेष	मिथु	कन्या	धनु	तुला	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	5 सिंहान	6 केरल
बुध	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
शुक्र	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
केतु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	14.70	13.05	17.30	12.00	10.80	14.80	11.75	12.00	11.20
सप्तवर्ग	14.10	12.55	17.18	11.25	10.80	14.63	11.38	12.25	10.65
दशवर्ग	12.93	11.43	17.98	13.25	11.35	15.53	11.13	12.75	10.15
षोडशवर्ग	13.55	11.45	17.03	12.80	11.33	14.65	11.38	12.25	11.25

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	---	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	अतिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	24	40	22	45	49	8	19
सप्तवर्गज बल	116	83	158	86	68	122	84
ओजयुग्मक बल	0	15	15	0	30	30	30
केन्द्र बल	60	15	60	60	15	15	30
द्रेष्काण बल	0	0	15	0	15	0	0
कुल स्थान बल	200	153	269	191	176	175	164
कुल दिग्बल	32	44	54	8	12	17	15
नतोन्नत बल	34	26	26	60	34	34	26
पक्ष बल	12	97	12	12	48	48	12
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	30	0	0	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	97	31	16	48	60	33	38
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	187	154	84	135	202	115	195
कुल चेष्टाबल	0	0	29	48	22	22	53
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	1	-3	7	0	-7	11	-5
कुल षट्बल	480	399	460	408	439	383	431
रूप षट्बल	8.0	6.6	7.7	6.8	7.3	6.4	7.2
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.1	1.5	1.0	1.1	1.2	1.4
संबंधित पद	1	6	2	7	5	4	3

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	31.71	44.16	25.01	46.49	32.70	13.67	31.87
कष्ट फल	25.21	15.14	34.58	13.38	20.57	44.14	17.33

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	431	431	439	460	383	408	399	480	408	383	460	439
भावदिग्बल	30	50	50	0	10	10	30	40	20	30	20	50
भावदृष्टि बल	45	95	41	-3	-17	-2	2	19	45	72	65	63
कुल भाव बल	505	576	530	457	375	415	431	539	473	484	545	552
रूप भाव बल	8.4	9.6	8.8	7.6	6.3	6.9	7.2	9.0	7.9	8.1	9.1	9.2
संबंधित पद	6	1	5	9	12	11	10	4	8	7	3	2

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

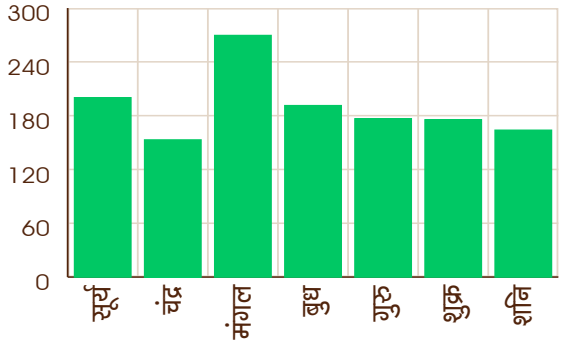

दिग्बल

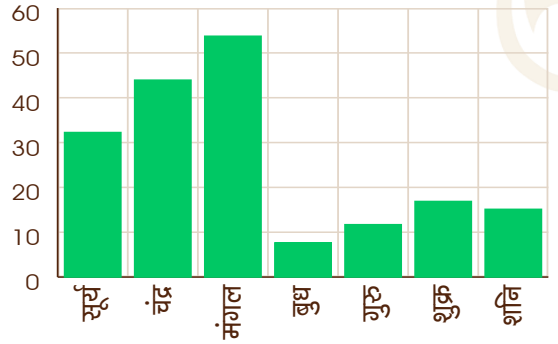

कालबल

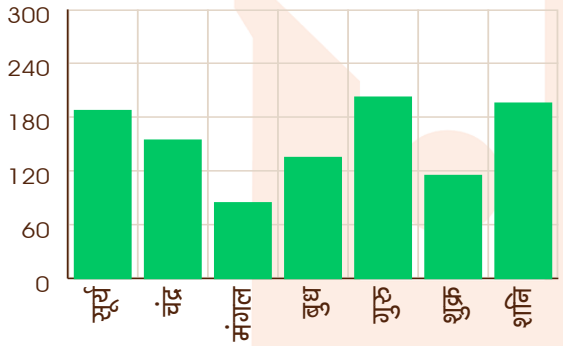

चेष्टाबल

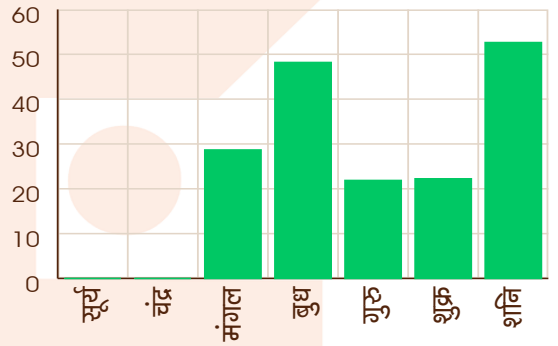

नैसर्गिक बल

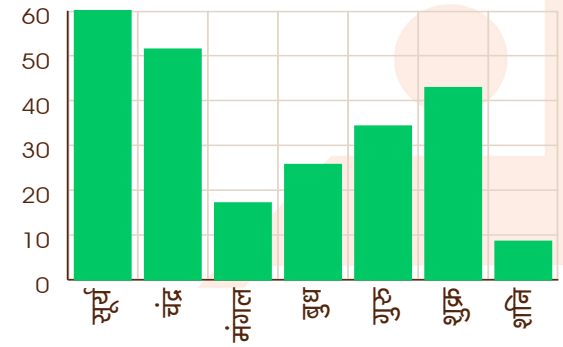

दृग्बल

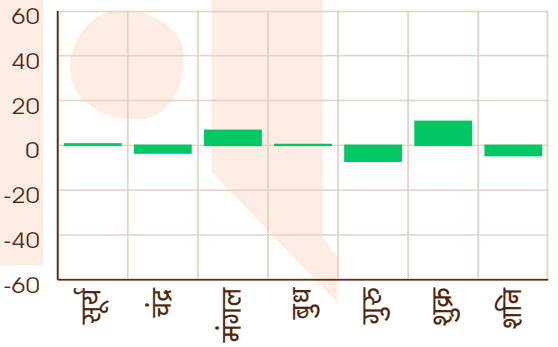

रूप षट्बल

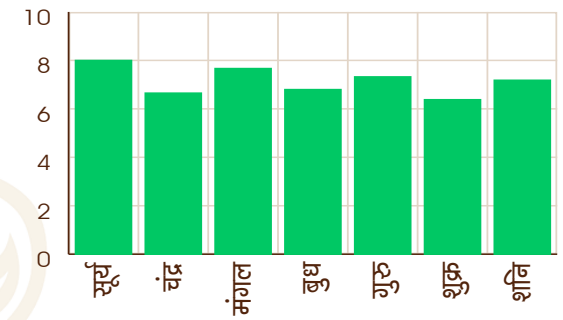

न्यूनतम षट्बल

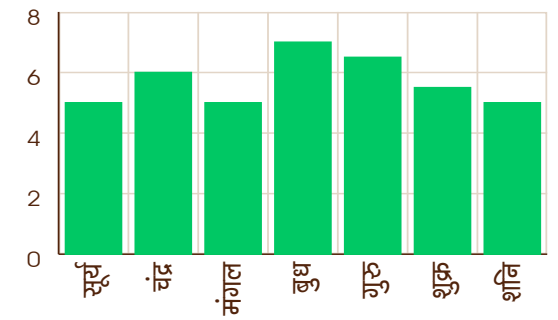

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

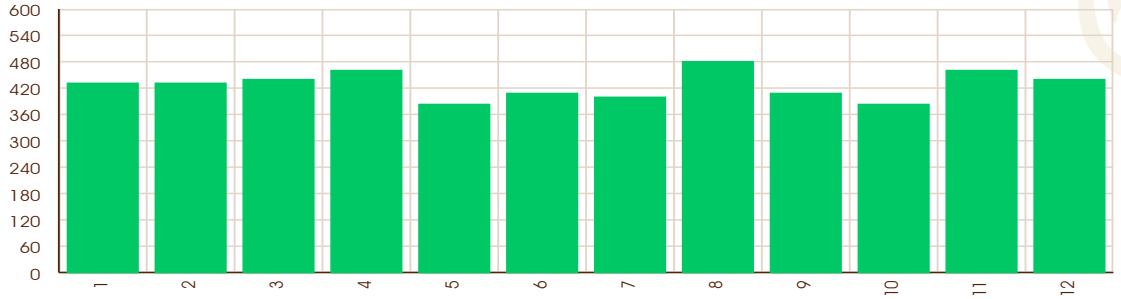

भावदिग्बल

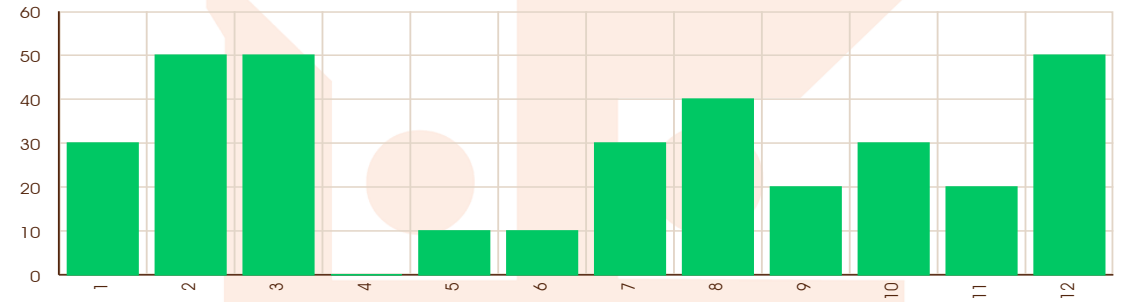

भावदृष्टि बल

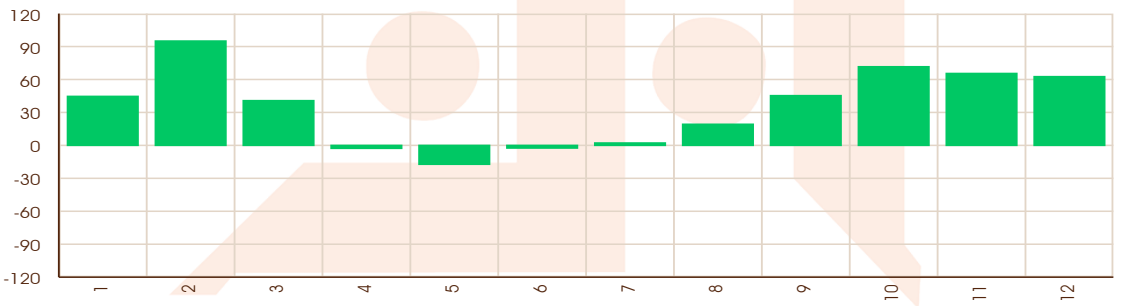

भाव बल

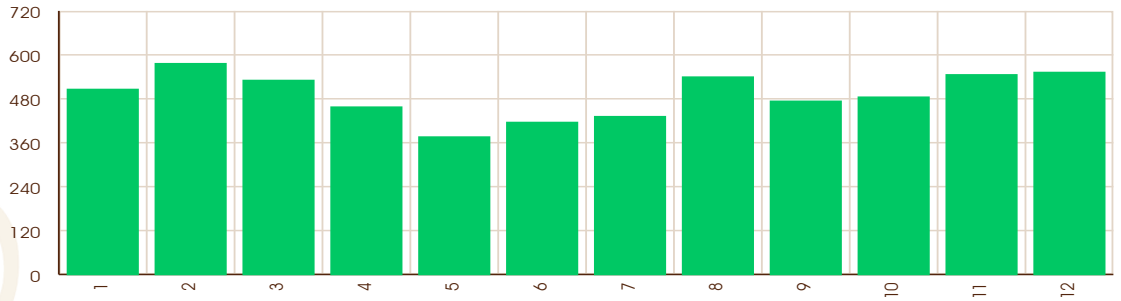

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

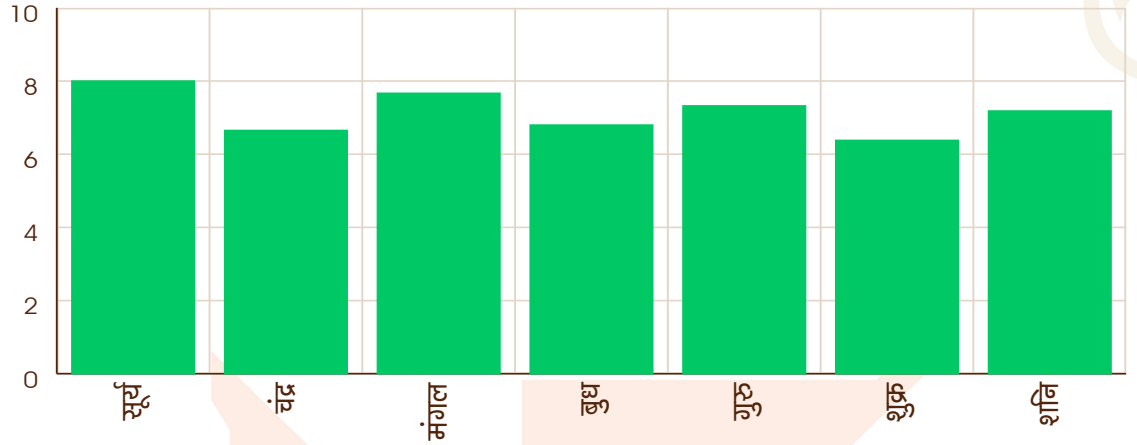

इष्ट - कष्ट फल

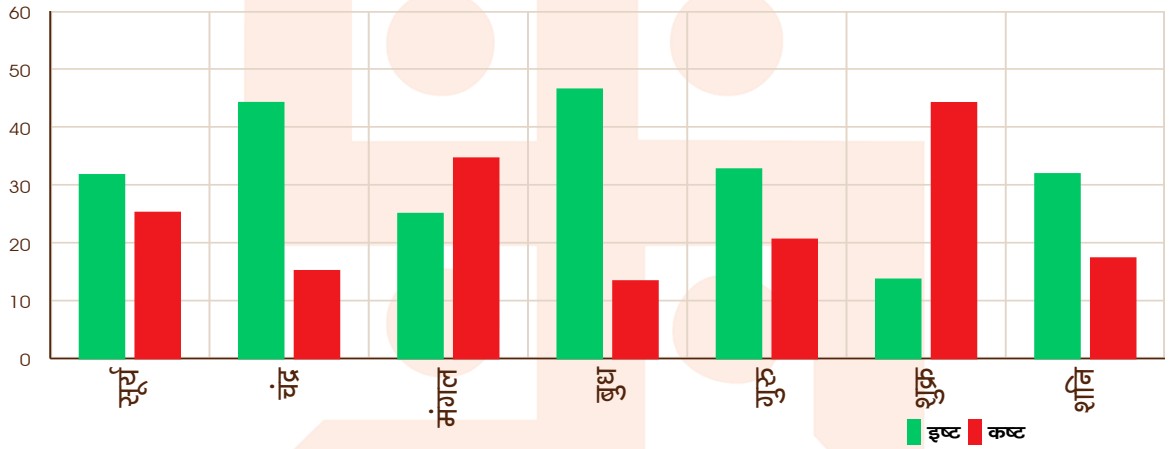

रूप भाव बल

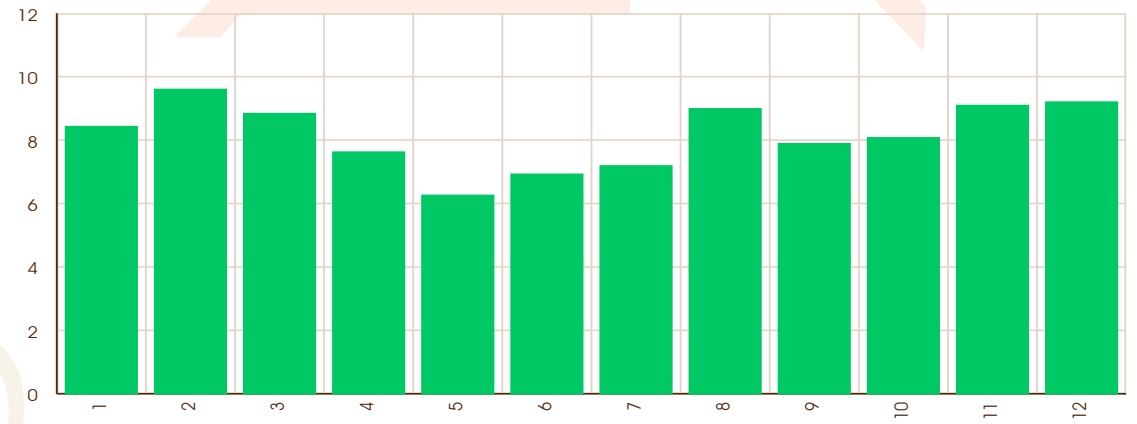

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मक	06:45:48	--	--	उत्तराषाढ़ा	4	21
गुलिक	गु	मक	01:40:36	--	--	उत्तराषाढ़ा	2	21
काल	का	सिंह	19:33:54	--	--	पू०फाल्गुनी	2	11
मृत्यु	मृ	तुला	03:16:54	--	--	चित्रा	3	14
यमघंटक	यम	वृश्चि	15:34:54	--	--	अनुराधा	4	17
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	तुला	24:38:49	--	--	विशाखा	2	16
धूम	धू	धनु	12:23:35	--	--	मूल	4	19
व्यतिपात	व्य	कर्क	17:36:25	--	--	आश्लेषा	1	9
परिवेश	परि	मक	17:36:25	--	--	श्रवण	3	22
इन्द्रचाप	इ	मिथु	12:23:35	नीच	--	आर्द्रा	2	6
उपकेतु	उप	मिथु	29:03:35	--	--	पुनर्वसु	3	7

प्राणपद	:	वृष	27:21:19	कारकाँश लग्न	:	मीन	26:22:22
भाव लग्न	:	कर्क	03:40:41	होरा लग्न	:	मक	00:35:34
घटी लग्न	:	मक	13:38:01	वर्णद लग्न	:	तुला	07:21:22

उपग्रह कुंडली

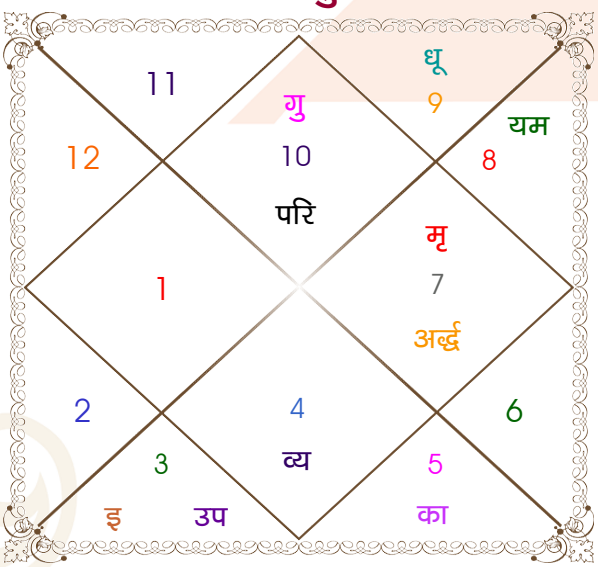

आरूढ़ कुंडली

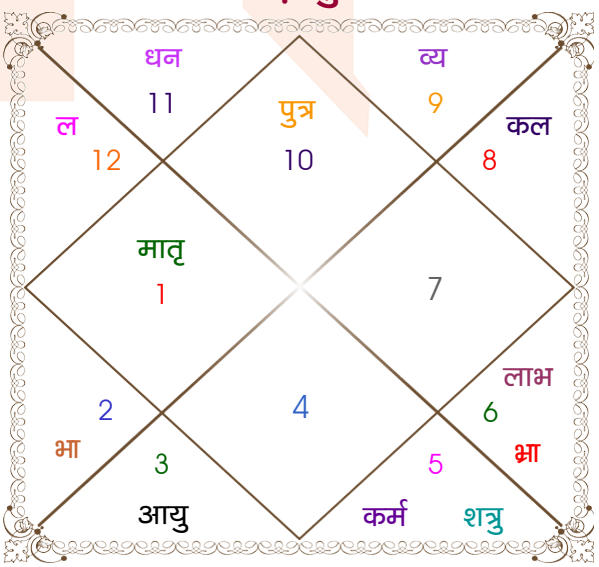

षन्नाडी चक्र

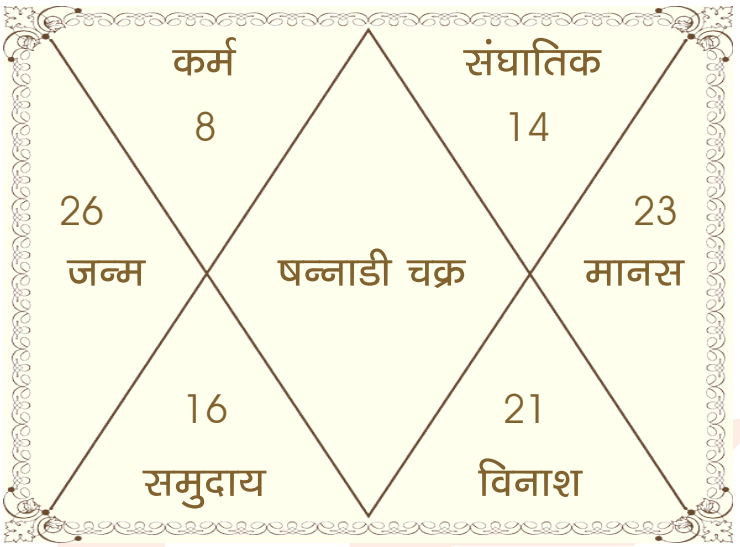

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
कुल	2	5	2	5	5	4	3	4	5	5	5	3	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
मंगल	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	6
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
कुल	5	4	4	4	5	2	4	2	5	6	5	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
कुल	3	6	3	3	2	2	4	6	1	2	4	3	39

बुध का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
कुल	3	4	3	5	7	5	5	2	3	6	6	5	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
सूर्य	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	4	8	4	4	5	4	2	7	3	3	7	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	8
कुल	5	4	5	4	5	4	5	5	6	5	2	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	6
कुल	4	3	5	4	3	4	4	1	3	2	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	7
बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चंद्र	1	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	4	3	5	5	3	4	3	3	6	4	7	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	4	3	4	4	1	3	2	3	3	4	3	39
गुरु	7	5	4	8	4	4	5	4	2	7	3	3	56
मंगल	4	6	1	2	4	3	3	6	3	3	2	2	39
सूर्य	5	5	3	2	5	2	5	5	4	3	4	5	48
शुक्र	5	6	5	2	2	5	4	5	4	5	4	5	52
बुध	6	6	5	3	4	3	5	7	5	5	2	3	54
चंद्र	4	4	4	5	2	4	2	5	6	5	3	5	49
बिन्दु	36	36	25	26	25	22	27	34	27	31	22	26	337
रेखा	20	20	31	30	31	34	29	22	29	25	34	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	0	2	1	0	0	0	0	2	1	1	12
गुरु	5	1	1	5	2	0	2	1	0	3	0	0	20
मंगल	1	3	0	0	1	0	2	4	0	0	1	0	12
सूर्य	1	3	0	0	1	0	2	3	0	1	1	3	15
शुक्र	3	1	1	0	0	0	0	3	2	0	0	3	13
बुध	2	3	3	0	0	0	3	4	1	2	0	0	18
चंद्र	2	0	2	0	0	0	0	0	4	1	1	0	10
रेखा	16	14	7	7	5	0	9	15	7	9	4	7	100

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	3	0	2	1	0	0	0	0	1	1	1	11
गुरु	4	0	1	5	2	0	2	1	0	3	0	0	18
मंगल	1	1	0	0	1	0	2	3	0	0	1	0	9
सूर्य	1	1	0	0	1	0	2	2	0	0	1	3	11
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	3	5
बुध	2	0	3	0	0	0	3	2	1	2	0	0	13
चंद्र	2	0	2	0	0	0	0	0	4	0	1	0	9
रेखा	12	6	7	7	5	0	9	8	5	6	4	7	76

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	104	77	76	94	113	54	90
ग्रह पिंड	36	25	21	54	76	25	30
शोध्य पिंड	140	102	97	148	189	79	120

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

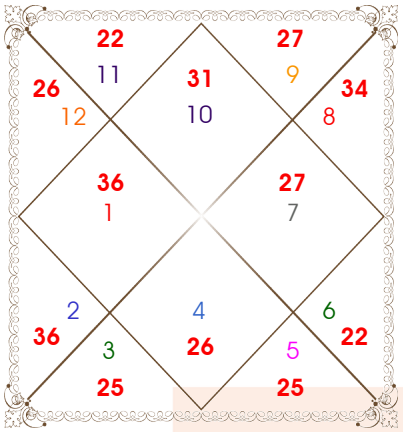

सूर्य का अष्टकवर्ग

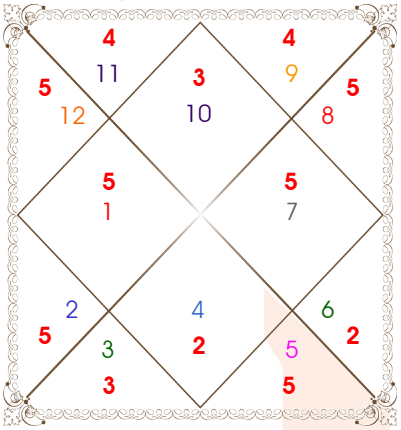

चंद्र का अष्टकवर्ग

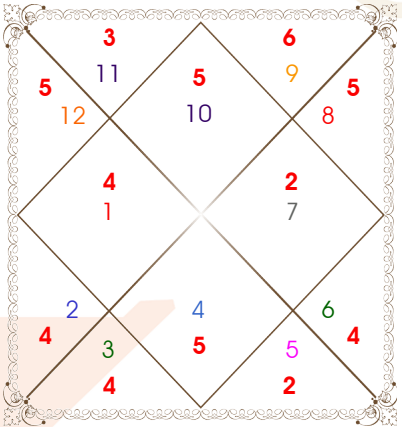

मंगल का अष्टकवर्ग

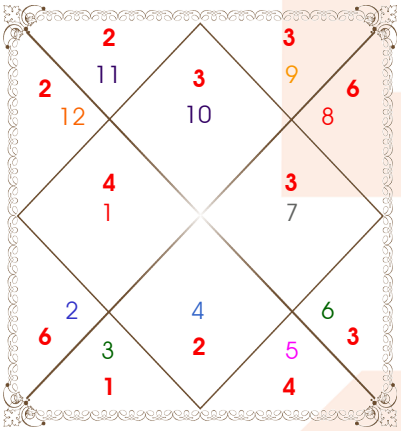

बुध का अष्टकवर्ग

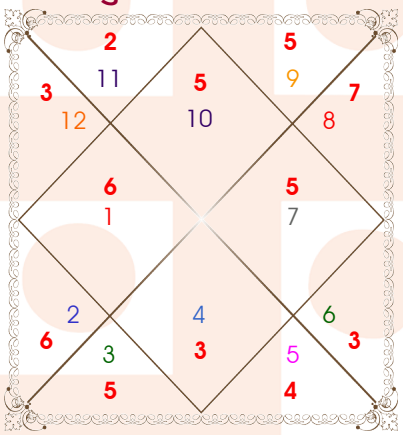

गुरू का अष्टकवर्ग

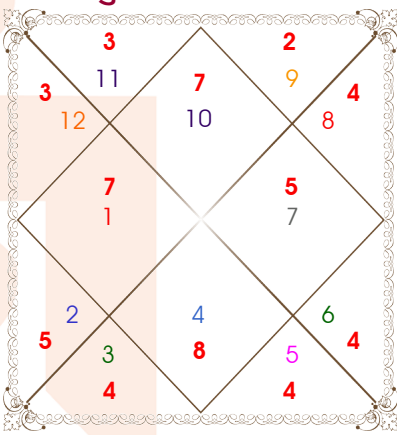

शुक्र का अष्टकवर्ग

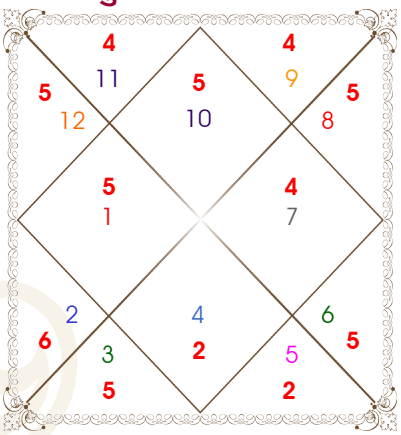

शनि का अष्टकवर्ग

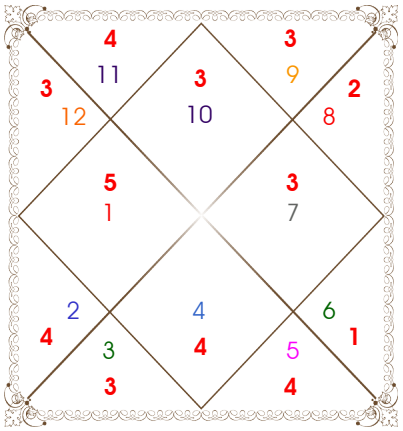

लग्न का अष्टकवर्ग

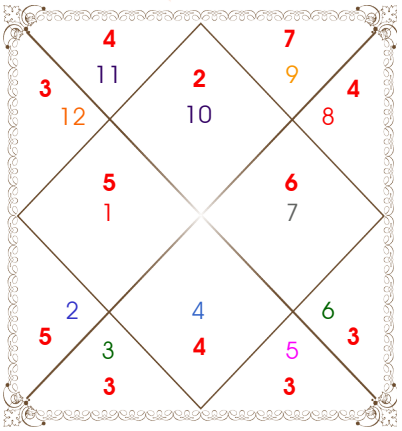

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

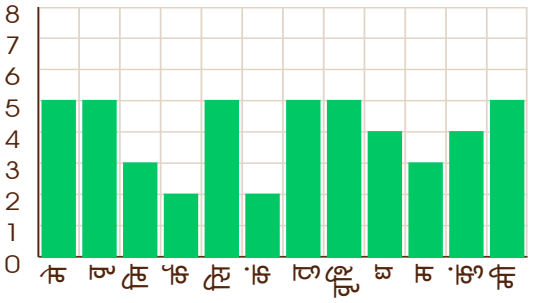

चन्द्र

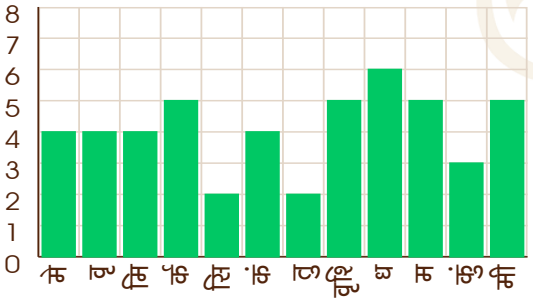

मंगल

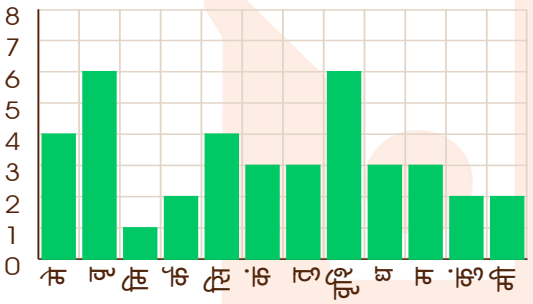

बुध

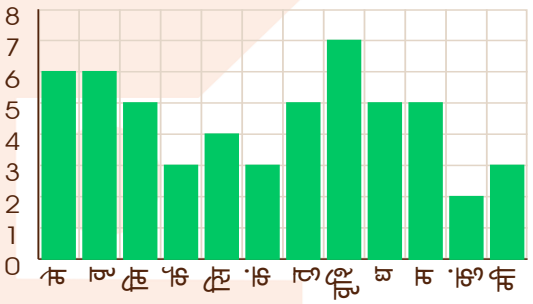

गुरु

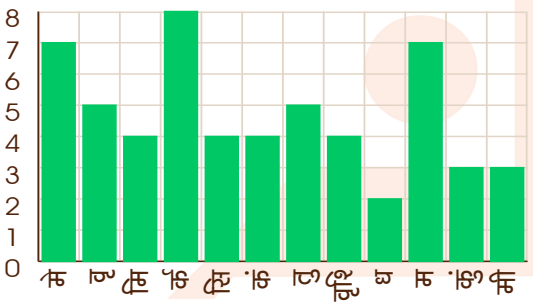

शुक्र

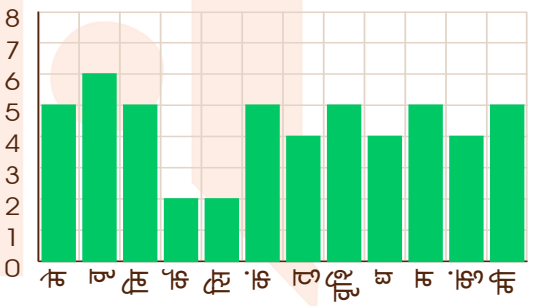

शनि

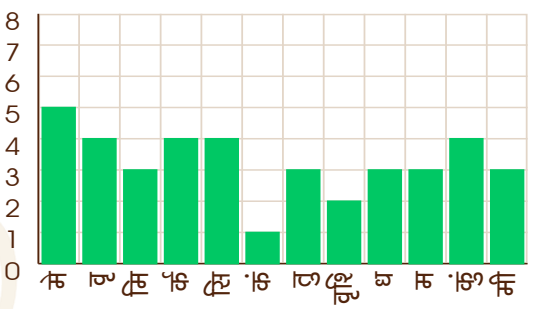

लग्न

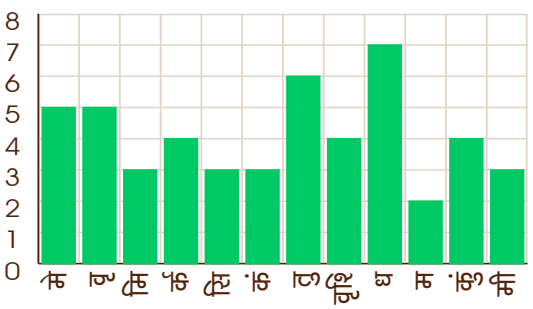

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

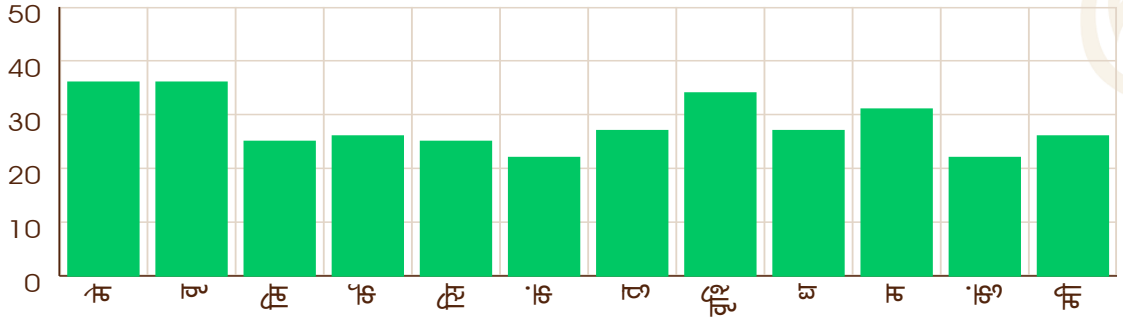

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

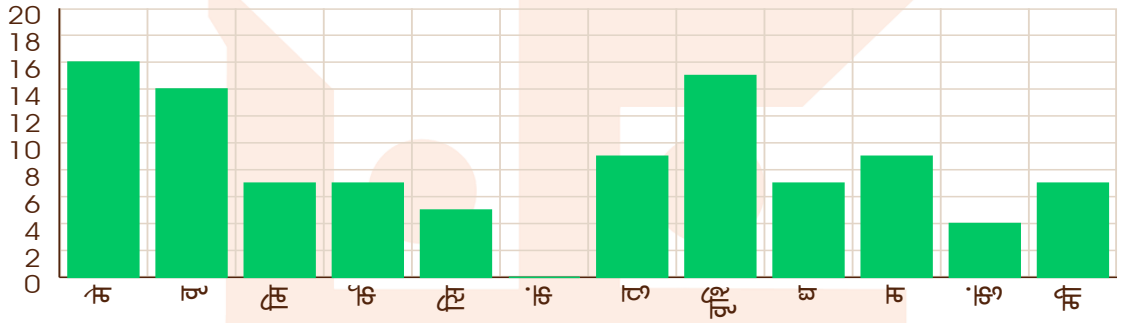

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

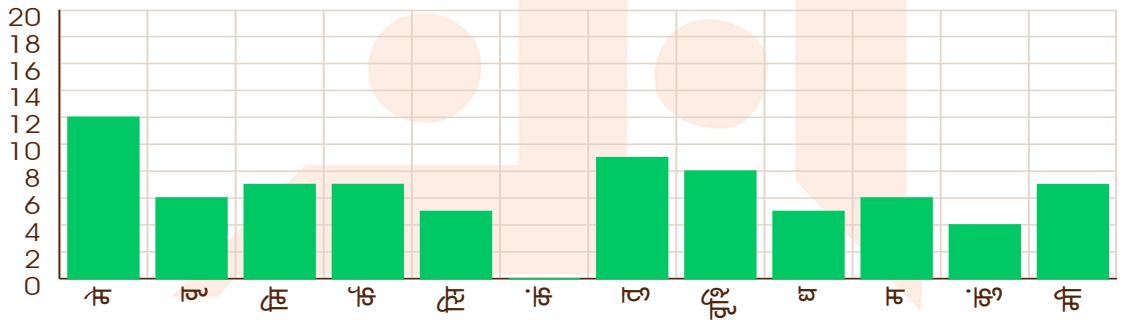

शोध्य पिंड

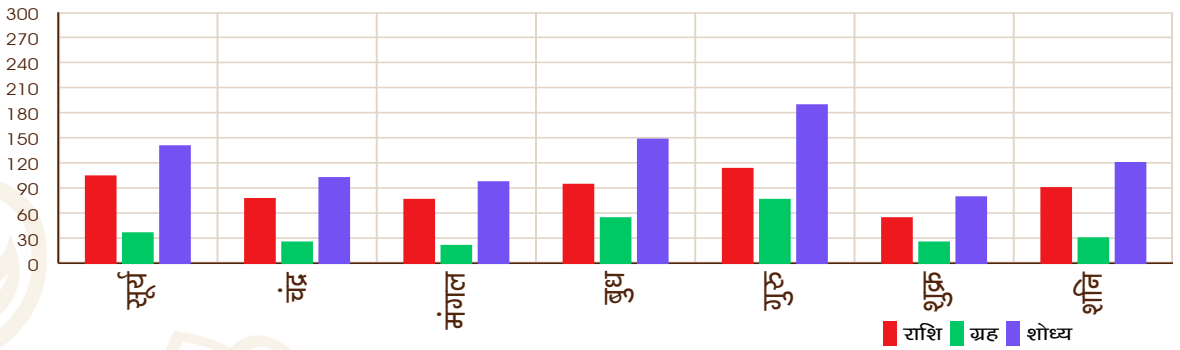

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 17 वर्ष 10 मास 29 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
15/08/1965		15/07/1983		14/07/2000		15/07/2007		15/07/2027	
15/07/1983		14/07/2000		15/07/2007		15/07/2027		15/07/2033	
शनि	18/07/1967	बुध	11/12/1985	केतु	11/12/2000	शुक्र	14/11/2010	सूर्य	02/11/2027
बुध	27/03/1970	केतु	08/12/1986	शुक्र	10/02/2002	सूर्य	14/11/2011	चंद्र	02/05/2028
केतु	06/05/1971	शुक्र	08/10/1989	सूर्य	18/06/2002	चंद्र	15/07/2013	मंगल	07/09/2028
शुक्र	06/07/1974	सूर्य	14/08/1990	चंद्र	17/01/2003	मंगल	14/09/2014	राहु	02/08/2029
सूर्य	18/06/1975	चंद्र	14/01/1992	मंगल	15/06/2003	राहु	14/09/2017	गुरु	21/05/2030
चंद्र	16/01/1977	मंगल	10/01/1993	राहु	02/07/2004	गुरु	15/05/2020	शनि	03/05/2031
मंगल	25/02/1978	राहु	30/07/1995	गुरु	08/06/2005	शनि	15/07/2023	बुध	09/03/2032
राहु	01/01/1981	गुरु	04/11/1997	शनि	18/07/2006	बुध	15/05/2026	केतु	14/07/2032
गुरु	15/07/1983	शनि	14/07/2000	बुध	15/07/2007	केतु	15/07/2027	शुक्र	15/07/2033

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
15/07/2033		15/07/2043		15/07/2050		14/07/2068		14/07/2084	
15/07/2043		15/07/2050		14/07/2068		14/07/2084		00/00/0000	
चंद्र	15/05/2034	मंगल	11/12/2043	राहु	27/03/2053	गुरु	02/09/2070	शनि	15/08/2085
मंगल	14/12/2034	राहु	29/12/2044	गुरु	21/08/2055	शनि	15/03/2073		00/00/0000
राहु	14/06/2036	गुरु	05/12/2045	शनि	27/06/2058	बुध	21/06/2075		00/00/0000
गुरु	14/10/2037	शनि	14/01/2047	बुध	13/01/2061	केतु	27/05/2076		00/00/0000
शनि	15/05/2039	बुध	11/01/2048	केतु	01/02/2062	शुक्र	26/01/2079		00/00/0000
बुध	14/10/2040	केतु	08/06/2048	शुक्र	31/01/2065	सूर्य	14/11/2079		00/00/0000
केतु	15/05/2041	शुक्र	08/08/2049	सूर्य	26/12/2065	चंद्र	15/03/2081		00/00/0000
शुक्र	14/01/2043	सूर्य	14/12/2049	चंद्र	27/06/2067	मंगल	19/02/2082		00/00/0000
सूर्य	15/07/2043	चंद्र	15/07/2050	मंगल	14/07/2068	राहु	14/07/2084		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 17 वर्ष 10 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
15/08/1965		18/07/1967		27/03/1970		06/05/1971		06/07/1974	
18/07/1967		27/03/1970		06/05/1971		06/07/1974		18/06/1975	
	00/00/0000	बुध	04/12/1967	केतु	20/04/1970	शुक्र	15/11/1971	सूर्य	23/07/1974
	00/00/0000	केतु	31/01/1968	शुक्र	26/06/1970	सूर्य	12/01/1972	चंद्र	21/08/1974
	15/08/1965	शुक्र	13/07/1968	सूर्य	17/07/1970	चंद्र	17/04/1972	मंगल	10/09/1974
शुक्र	11/02/1966	सूर्य	31/08/1968	चंद्र	19/08/1970	मंगल	24/06/1972	राहु	01/11/1974
सूर्य	07/04/1966	चंद्र	21/11/1968	मंगल	12/09/1970	राहु	14/12/1972	गुरु	18/12/1974
चंद्र	08/07/1966	मंगल	17/01/1969	राहु	12/11/1970	गुरु	17/05/1973	शनि	11/02/1975
मंगल	10/09/1966	राहु	14/06/1969	गुरु	05/01/1971	शनि	16/11/1973	बुध	01/04/1975
राहु	22/02/1967	गुरु	23/10/1969	शनि	10/03/1971	बुध	29/04/1974	केतु	21/04/1975
गुरु	18/07/1967	शनि	27/03/1970	बुध	06/05/1971	केतु	06/07/1974	शुक्र	18/06/1975

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
18/06/1975		16/01/1977		25/02/1978		01/01/1981		15/07/1983	
16/01/1977		25/02/1978		01/01/1981		15/07/1983		11/12/1985	
चंद्र	05/08/1975	मंगल	09/02/1977	राहु	31/07/1978	गुरु	04/05/1981	बुध	17/11/1983
मंगल	08/09/1975	राहु	10/04/1977	गुरु	17/12/1978	शनि	28/09/1981	केतु	07/01/1984
राहु	03/12/1975	गुरु	03/06/1977	शनि	31/05/1979	बुध	06/02/1982	शुक्र	02/06/1984
गुरु	19/02/1976	शनि	06/08/1977	बुध	25/10/1979	केतु	01/04/1982	सूर्य	16/07/1984
शनि	20/05/1976	बुध	03/10/1977	केतु	25/12/1979	शुक्र	02/09/1982	चंद्र	27/09/1984
बुध	10/08/1976	केतु	26/10/1977	शुक्र	15/06/1980	सूर्य	18/10/1982	मंगल	17/11/1984
केतु	13/09/1976	शुक्र	02/01/1978	सूर्य	06/08/1980	चंद्र	03/01/1983	राहु	29/03/1985
शुक्र	18/12/1976	सूर्य	22/01/1978	चंद्र	01/11/1980	मंगल	26/02/1983	गुरु	25/07/1985
सूर्य	16/01/1977	चंद्र	25/02/1978	मंगल	01/01/1981	राहु	15/07/1983	शनि	11/12/1985

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
11/12/1985		08/12/1986		08/10/1989		14/08/1990		14/01/1992	
08/12/1986		08/10/1989		14/08/1990		14/01/1992		10/01/1993	
केतु	01/01/1986	शुक्र	29/05/1987	सूर्य	23/10/1989	चंद्र	26/09/1990	मंगल	04/02/1992
शुक्र	02/03/1986	सूर्य	20/07/1987	चंद्र	18/11/1989	मंगल	27/10/1990	राहु	29/03/1992
सूर्य	20/03/1986	चंद्र	14/10/1987	मंगल	06/12/1989	राहु	12/01/1991	गुरु	17/05/1992
चंद्र	20/04/1986	मंगल	14/12/1987	राहु	22/01/1990	गुरु	22/03/1991	शनि	13/07/1992
मंगल	11/05/1986	राहु	17/05/1988	गुरु	04/03/1990	शनि	12/06/1991	बुध	02/09/1992
राहु	04/07/1986	गुरु	02/10/1988	शनि	23/04/1990	बुध	24/08/1991	केतु	23/09/1992
गुरु	21/08/1986	शनि	15/03/1989	बुध	05/06/1990	केतु	24/09/1991	शुक्र	23/11/1992
शनि	18/10/1986	बुध	09/08/1989	केतु	24/06/1990	शुक्र	19/12/1991	सूर्य	11/12/1992
बुध	08/12/1986	केतु	08/10/1989	शुक्र	14/08/1990	सूर्य	14/01/1992	चंद्र	10/01/1993

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
10/01/1993		30/07/1995		04/11/1997		14/07/2000		11/12/2000	
30/07/1995		04/11/1997		14/07/2000		11/12/2000		10/02/2002	
राहु	30/05/1993	गुरु	18/11/1995	शनि	09/04/1998	केतु	23/07/2000	शुक्र	20/02/2001
गुरु	01/10/1993	शनि	28/03/1996	बुध	26/08/1998	शुक्र	17/08/2000	सूर्य	13/03/2001
शनि	25/02/1994	बुध	23/07/1996	केतु	23/10/1998	सूर्य	24/08/2000	चंद्र	17/04/2001
बुध	07/07/1994	केतु	09/09/1996	शुक्र	04/04/1999	चंद्र	06/09/2000	मंगल	12/05/2001
केतु	31/08/1994	शुक्र	25/01/1997	सूर्य	24/05/1999	मंगल	15/09/2000	राहु	15/07/2001
शुक्र	02/02/1995	सूर्य	08/03/1997	चंद्र	14/08/1999	राहु	07/10/2000	गुरु	10/09/2001
सूर्य	20/03/1995	चंद्र	16/05/1997	मंगल	10/10/1999	गुरु	27/10/2000	शनि	16/11/2001
चंद्र	06/06/1995	मंगल	03/07/1997	राहु	05/03/2000	शनि	19/11/2000	बुध	16/01/2002
मंगल	30/07/1995	राहु	04/11/1997	गुरु	14/07/2000	बुध	11/12/2000	केतु	10/02/2002

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
10/02/2002		18/06/2002		17/01/2003		15/06/2003		02/07/2004	
18/06/2002		17/01/2003		15/06/2003		02/07/2004		08/06/2005	
सूर्य	16/02/2002	चंद्र	05/07/2002	मंगल	25/01/2003	राहु	11/08/2003	गुरु	17/08/2004
चंद्र	27/02/2002	मंगल	18/07/2002	राहु	17/02/2003	गुरु	01/10/2003	शनि	10/10/2004
मंगल	06/03/2002	राहु	19/08/2002	गुरु	09/03/2003	शनि	01/12/2003	बुध	27/11/2004
राहु	25/03/2002	गुरु	16/09/2002	शनि	01/04/2003	बुध	24/01/2004	केतु	17/12/2004
गुरु	11/04/2002	शनि	20/10/2002	बुध	22/04/2003	केतु	16/02/2004	शुक्र	12/02/2005
शनि	02/05/2002	बुध	19/11/2002	केतु	01/05/2003	शुक्र	20/04/2004	सूर्य	01/03/2005
बुध	20/05/2002	केतु	01/12/2002	शुक्र	26/05/2003	सूर्य	09/05/2004	चंद्र	29/03/2005
केतु	27/05/2002	शुक्र	06/01/2003	सूर्य	02/06/2003	चंद्र	10/06/2004	मंगल	18/04/2005
शुक्र	18/06/2002	सूर्य	17/01/2003	चंद्र	15/06/2003	मंगल	02/07/2004	राहु	08/06/2005

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
08/06/2005		18/07/2006		15/07/2007		14/11/2010		14/11/2011	
18/07/2006		15/07/2007		14/11/2010		14/11/2011		15/07/2013	
शनि	11/08/2005	बुध	07/09/2006	शुक्र	03/02/2008	सूर्य	02/12/2010	चंद्र	04/01/2012
बुध	08/10/2005	केतु	28/09/2006	सूर्य	04/04/2008	चंद्र	01/01/2011	मंगल	08/02/2012
केतु	31/10/2005	शुक्र	28/11/2006	चंद्र	14/07/2008	मंगल	23/01/2011	राहु	09/05/2012
शुक्र	07/01/2006	सूर्य	16/12/2006	मंगल	23/09/2008	राहु	18/03/2011	गुरु	30/07/2012
सूर्य	27/01/2006	चंद्र	15/01/2007	राहु	25/03/2009	गुरु	06/05/2011	शनि	03/11/2012
चंद्र	02/03/2006	मंगल	05/02/2007	गुरु	03/09/2009	शनि	03/07/2011	बुध	28/01/2013
मंगल	25/03/2006	राहु	01/04/2007	शनि	15/03/2010	बुध	24/08/2011	केतु	05/03/2013
राहु	25/05/2006	गुरु	19/05/2007	बुध	04/09/2010	केतु	14/09/2011	शुक्र	14/06/2013
गुरु	18/07/2006	शनि	15/07/2007	केतु	14/11/2010	शुक्र	14/11/2011	सूर्य	15/07/2013

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
15/07/2013		14/09/2014		14/09/2017		15/05/2020		15/07/2023	
14/09/2014		14/09/2017		15/05/2020		15/07/2023		15/05/2026	
मंगल	09/08/2013	राहु	25/02/2015	गुरु	21/01/2018	शनि	14/11/2020	बुध	09/12/2023
राहु	11/10/2013	गुरु	21/07/2015	शनि	25/06/2018	बुध	27/04/2021	केतु	07/02/2024
गुरु	07/12/2013	शनि	11/01/2016	बुध	10/11/2018	केतु	03/07/2021	शुक्र	29/07/2024
शनि	13/02/2014	बुध	14/06/2016	केतु	05/01/2019	शुक्र	12/01/2022	सूर्य	18/09/2024
बुध	14/04/2014	केतु	17/08/2016	शुक्र	17/06/2019	सूर्य	11/03/2022	चंद्र	14/12/2024
केतु	09/05/2014	शुक्र	16/02/2017	सूर्य	04/08/2019	चंद्र	15/06/2022	मंगल	12/02/2025
शुक्र	19/07/2014	सूर्य	11/04/2017	चंद्र	25/10/2019	मंगल	21/08/2022	राहु	17/07/2025
सूर्य	09/08/2014	चंद्र	12/07/2017	मंगल	20/12/2019	राहु	11/02/2023	गुरु	02/12/2025
चंद्र	14/09/2014	मंगल	14/09/2017	राहु	15/05/2020	गुरु	15/07/2023	शनि	15/05/2026

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
15/05/2026		15/07/2027		02/11/2027		02/05/2028		07/09/2028	
15/07/2027		02/11/2027		02/05/2028		07/09/2028		02/08/2029	
केतु	09/06/2026	सूर्य	21/07/2027	चंद्र	17/11/2027	मंगल	10/05/2028	राहु	27/10/2028
शुक्र	19/08/2026	चंद्र	30/07/2027	मंगल	28/11/2027	राहु	29/05/2028	गुरु	09/12/2028
सूर्य	09/09/2026	मंगल	05/08/2027	राहु	25/12/2027	गुरु	15/06/2028	शनि	30/01/2029
चंद्र	15/10/2026	राहु	22/08/2027	गुरु	18/01/2028	शनि	05/07/2028	बुध	18/03/2029
मंगल	09/11/2026	गुरु	05/09/2027	शनि	16/02/2028	बुध	23/07/2028	केतु	06/04/2029
राहु	12/01/2027	शनि	23/09/2027	बुध	13/03/2028	केतु	31/07/2028	शुक्र	31/05/2029
गुरु	09/03/2027	बुध	08/10/2027	केतु	24/03/2028	शुक्र	21/08/2028	सूर्य	16/06/2029
शनि	16/05/2027	केतु	14/10/2027	शुक्र	23/04/2028	सूर्य	28/08/2028	चंद्र	14/07/2029
बुध	15/07/2027	शुक्र	02/11/2027	सूर्य	02/05/2028	चंद्र	07/09/2028	मंगल	02/08/2029

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
02/08/2029		21/05/2030		03/05/2031		09/03/2032		14/07/2032	
21/05/2030		03/05/2031		09/03/2032		14/07/2032		15/07/2033	
गुरु	10/09/2029	शनि	15/07/2030	बुध	16/06/2031	केतु	16/03/2032	शुक्र	13/09/2032
शनि	26/10/2029	बुध	02/09/2030	केतु	04/07/2031	शुक्र	06/04/2032	सूर्य	02/10/2032
बुध	07/12/2029	केतु	22/09/2030	शुक्र	25/08/2031	सूर्य	13/04/2032	चंद्र	01/11/2032
केतु	24/12/2029	शुक्र	19/11/2030	सूर्य	09/09/2031	चंद्र	23/04/2032	मंगल	22/11/2032
शुक्र	10/02/2030	सूर्य	07/12/2030	चंद्र	05/10/2031	मंगल	01/05/2032	राहु	16/01/2033
सूर्य	25/02/2030	चंद्र	05/01/2031	मंगल	23/10/2031	राहु	20/05/2032	गुरु	06/03/2033
चंद्र	21/03/2030	मंगल	25/01/2031	राहु	09/12/2031	गुरु	06/06/2032	शनि	03/05/2033
मंगल	07/04/2030	राहु	18/03/2031	गुरु	19/01/2032	शनि	26/06/2032	बुध	23/06/2033
राहु	21/05/2030	गुरु	03/05/2031	शनि	09/03/2032	बुध	14/07/2032	केतु	15/07/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
15/07/2033		15/05/2034		14/12/2034		14/06/2036		14/10/2037	
15/05/2034		14/12/2034		14/06/2036		14/10/2037		15/05/2039	
चंद्र	09/08/2033	मंगल	27/05/2034	राहु	06/03/2035	गुरु	18/08/2036	शनि	14/01/2038
मंगल	27/08/2033	राहु	28/06/2034	गुरु	18/05/2035	शनि	03/11/2036	बुध	05/04/2038
राहु	11/10/2033	गुरु	27/07/2034	शनि	13/08/2035	बुध	11/01/2037	केतु	09/05/2038
गुरु	21/11/2033	शनि	30/08/2034	बुध	30/10/2035	केतु	08/02/2037	शुक्र	14/08/2038
शनि	08/01/2034	बुध	29/09/2034	केतु	01/12/2035	शुक्र	01/05/2037	सूर्य	12/09/2038
बुध	20/02/2034	केतु	11/10/2034	शुक्र	01/03/2036	सूर्य	25/05/2037	चंद्र	30/10/2038
केतु	10/03/2034	शुक्र	16/11/2034	सूर्य	28/03/2036	चंद्र	05/07/2037	मंगल	02/12/2038
शुक्र	30/04/2034	सूर्य	26/11/2034	चंद्र	13/05/2036	मंगल	02/08/2037	राहु	27/02/2039
सूर्य	15/05/2034	चंद्र	14/12/2034	मंगल	14/06/2036	राहु	14/10/2037	गुरु	15/05/2039

चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
15/05/2039		14/10/2040		15/05/2041		14/01/2043		15/07/2043	
14/10/2040		15/05/2041		14/01/2043		15/07/2043		11/12/2043	
बुध	28/07/2039	केतु	26/10/2040	शुक्र	24/08/2041	सूर्य	23/01/2043	मंगल	24/07/2043
केतु	27/08/2039	शुक्र	01/12/2040	सूर्य	24/09/2041	चंद्र	07/02/2043	राहु	15/08/2043
शुक्र	21/11/2039	सूर्य	11/12/2040	चंद्र	13/11/2041	मंगल	18/02/2043	गुरु	04/09/2043
सूर्य	17/12/2039	चंद्र	29/12/2040	मंगल	19/12/2041	राहु	17/03/2043	शनि	28/09/2043
चंद्र	29/01/2040	मंगल	11/01/2041	राहु	20/03/2042	गुरु	10/04/2043	बुध	19/10/2043
मंगल	28/02/2040	राहु	11/02/2041	गुरु	09/06/2042	शनि	09/05/2043	केतु	28/10/2043
राहु	16/05/2040	गुरु	12/03/2041	शनि	14/09/2042	बुध	04/06/2043	शुक्र	21/11/2043
गुरु	24/07/2040	शनि	15/04/2041	बुध	09/12/2042	केतु	15/06/2043	सूर्य	29/11/2043
शनि	14/10/2040	बुध	15/05/2041	केतु	14/01/2043	शुक्र	15/07/2043	चंद्र	11/12/2043

मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
11/12/2043		29/12/2044		05/12/2045		14/01/2047		11/01/2048	
29/12/2044		05/12/2045		14/01/2047		11/01/2048		08/06/2048	
राहु	07/02/2044	गुरु	12/02/2045	शनि	07/02/2046	बुध	06/03/2047	केतु	19/01/2048
गुरु	29/03/2044	शनि	07/04/2045	बुध	05/04/2046	केतु	27/03/2047	शुक्र	13/02/2048
शनि	29/05/2044	बुध	26/05/2045	केतु	29/04/2046	शुक्र	26/05/2047	सूर्य	21/02/2048
बुध	22/07/2044	केतु	14/06/2045	शुक्र	05/07/2046	सूर्य	13/06/2047	चंद्र	04/03/2048
केतु	13/08/2044	शुक्र	10/08/2045	सूर्य	25/07/2046	चंद्र	14/07/2047	मंगल	13/03/2048
शुक्र	16/10/2044	सूर्य	27/08/2045	चंद्र	28/08/2046	मंगल	04/08/2047	राहु	04/04/2048
सूर्य	04/11/2044	चंद्र	25/09/2045	मंगल	21/09/2046	राहु	27/09/2047	गुरु	24/04/2048
चंद्र	06/12/2044	मंगल	15/10/2045	राहु	21/11/2046	गुरु	14/11/2047	शनि	18/05/2048
मंगल	29/12/2044	राहु	05/12/2045	गुरु	14/01/2047	शनि	11/01/2048	बुध	08/06/2048

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
08/06/2048		08/08/2049		14/12/2049		15/07/2050		27/03/2053	
08/08/2049		14/12/2049		15/07/2050		27/03/2053		21/08/2055	
शुक्र	18/08/2048	सूर्य	14/08/2049	चंद्र	01/01/2050	राहु	10/12/2050	गुरु	22/07/2053
सूर्य	08/09/2048	चंद्र	25/08/2049	मंगल	13/01/2050	गुरु	20/04/2051	शनि	08/12/2053
चंद्र	14/10/2048	मंगल	02/09/2049	राहु	14/02/2050	शनि	23/09/2051	बुध	11/04/2054
मंगल	08/11/2048	राहु	21/09/2049	गुरु	14/03/2050	बुध	10/02/2052	केतु	01/06/2054
राहु	11/01/2049	गुरु	08/10/2049	शनि	17/04/2050	केतु	08/04/2052	शुक्र	25/10/2054
गुरु	08/03/2049	शनि	28/10/2049	बुध	17/05/2050	शुक्र	19/09/2052	सूर्य	08/12/2054
शनि	15/05/2049	बुध	15/11/2049	केतु	30/05/2050	सूर्य	07/11/2052	चंद्र	19/02/2055
बुध	14/07/2049	केतु	23/11/2049	शुक्र	04/07/2050	चंद्र	29/01/2053	मंगल	11/04/2055
केतु	08/08/2049	शुक्र	14/12/2049	सूर्य	15/07/2050	मंगल	27/03/2053	राहु	21/08/2055

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
21/08/2055		27/06/2058		13/01/2061		01/02/2062		31/01/2065	
27/06/2058		13/01/2061		01/02/2062		31/01/2065		26/12/2065	
शनि	02/02/2056	बुध	06/11/2058	केतु	04/02/2061	शुक्र	02/08/2062	सूर्य	17/02/2065
बुध	28/06/2056	केतु	30/12/2058	शुक्र	09/04/2061	सूर्य	26/09/2062	चंद्र	16/03/2065
केतु	28/08/2056	शुक्र	03/06/2059	सूर्य	29/04/2061	चंद्र	26/12/2062	मंगल	04/04/2065
शुक्र	17/02/2057	सूर्य	20/07/2059	चंद्र	30/05/2061	मंगल	28/02/2063	राहु	24/05/2065
सूर्य	10/04/2057	चंद्र	05/10/2059	मंगल	22/06/2061	राहु	12/08/2063	गुरु	06/07/2065
चंद्र	06/07/2057	मंगल	29/11/2059	राहु	18/08/2061	गुरु	05/01/2064	शनि	27/08/2065
मंगल	05/09/2057	राहु	16/04/2060	गुरु	08/10/2061	शनि	26/06/2064	बुध	13/10/2065
राहु	08/02/2058	गुरु	19/08/2060	शनि	08/12/2061	बुध	28/11/2064	केतु	01/11/2065
गुरु	27/06/2058	शनि	13/01/2061	बुध	01/02/2062	केतु	31/01/2065	शुक्र	26/12/2065

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
26/12/2065		27/06/2067		14/07/2068		02/09/2070		15/03/2073	
27/06/2067		14/07/2068		02/09/2070		15/03/2073		21/06/2075	
चंद्र	10/02/2066	मंगल	19/07/2067	गुरु	26/10/2068	शनि	26/01/2071	बुध	10/07/2073
मंगल	14/03/2066	राहु	15/09/2067	शनि	27/02/2069	बुध	06/06/2071	केतु	27/08/2073
राहु	04/06/2066	गुरु	05/11/2067	बुध	17/06/2069	केतु	30/07/2071	शुक्र	12/01/2074
गुरु	16/08/2066	शनि	05/01/2068	केतु	02/08/2069	शुक्र	31/12/2071	सूर्य	23/02/2074
शनि	11/11/2066	बुध	28/02/2068	शुक्र	09/12/2069	सूर्य	16/02/2072	चंद्र	03/05/2074
बुध	27/01/2067	केतु	21/03/2068	सूर्य	17/01/2070	चंद्र	03/05/2072	मंगल	20/06/2074
केतु	28/02/2067	शुक्र	24/05/2068	चंद्र	23/03/2070	मंगल	26/06/2072	राहु	22/10/2074
शुक्र	31/05/2067	सूर्य	12/06/2068	मंगल	08/05/2070	राहु	12/11/2072	गुरु	10/02/2075
सूर्य	27/06/2067	चंद्र	14/07/2068	राहु	02/09/2070	गुरु	15/03/2073	शनि	21/06/2075

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - बुध - गुरु		शुक्र - बुध - शनि		शुक्र - केतु - केतु		शुक्र - केतु - शुक्र	
17/07/2025 16:50		02/12/2025 16:26		15/05/2026 12:57		09/06/2026 09:32	
02/12/2025 16:26		15/05/2026 12:57		09/06/2026 09:32		19/08/2026 10:02	
गुरु	05/08/2025 02:22	शनि	28/12/2025 15:05	केतु	16/05/2026 23:45	शुक्र	21/06/2026 05:37
शनि	26/08/2025 22:43	बुध	20/01/2026 20:11	शुक्र	21/05/2026 03:11	सूर्य	24/06/2026 18:50
बुध	15/09/2025 11:51	केतु	30/01/2026 09:35	सूर्य	22/05/2026 09:01	चंद्र	30/06/2026 16:53
केतु	23/09/2025 13:02	शुक्र	26/02/2026 17:00	चंद्र	24/05/2026 10:43	मंगल	04/07/2026 20:18
शुक्र	16/10/2025 12:58	सूर्य	06/03/2026 21:38	मंगल	25/05/2026 21:31	राहु	15/07/2026 11:59
सूर्य	23/10/2025 10:33	चंद्र	20/03/2026 13:20	राहु	29/05/2026 15:01	गुरु	24/07/2026 23:15
चंद्र	03/11/2025 22:31	मंगल	30/03/2026 02:44	गुरु	01/06/2026 22:33	शनि	05/08/2026 05:08
मंगल	11/11/2025 23:41	राहु	23/04/2026 16:37	शनि	05/06/2026 21:01	बुध	15/08/2026 06:36
राहु	02/12/2025 16:26	गुरु	15/05/2026 12:57	बुध	09/06/2026 09:32	केतु	19/08/2026 10:02

शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल		शुक्र - केतु - राहु	
19/08/2026 10:02		09/09/2026 17:23		15/10/2026 05:38		09/11/2026 02:12	
09/09/2026 17:23		15/10/2026 05:38		09/11/2026 02:12		12/01/2027 00:15	
सूर्य	20/08/2026 11:36	चंद्र	12/09/2026 16:24	मंगल	16/10/2026 16:26	राहु	18/11/2026 16:19
चंद्र	22/08/2026 06:12	मंगल	14/09/2026 18:07	राहु	20/10/2026 09:55	गुरु	27/11/2026 04:51
मंगल	23/08/2026 12:02	राहु	20/09/2026 01:57	गुरु	23/10/2026 17:27	शनि	07/12/2026 07:44
राहु	26/08/2026 16:44	गुरु	24/09/2026 19:35	शनि	27/10/2026 15:55	बुध	16/12/2026 09:04
गुरु	29/08/2026 12:55	शनि	30/09/2026 10:31	बुध	31/10/2026 04:26	केतु	20/12/2026 02:33
शनि	01/09/2026 21:53	बुध	05/10/2026 11:15	केतु	01/11/2026 15:14	शुक्र	30/12/2026 18:13
बुध	04/09/2026 22:19	केतु	07/10/2026 12:58	शुक्र	05/11/2026 18:39	सूर्य	02/01/2027 22:56
केतु	06/09/2026 04:09	शुक्र	13/10/2026 11:01	सूर्य	07/11/2026 00:29	चंद्र	08/01/2027 06:46
शुक्र	09/09/2026 17:23	सूर्य	15/10/2026 05:38	चंद्र	09/11/2026 02:12	मंगल	12/01/2027 00:15

शुक्र - केतु - गुरु		शुक्र - केतु - शनि		शुक्र - केतु - बुध		सूर्य - सूर्य - सूर्य	
12/01/2027 00:15		09/03/2027 19:51		16/05/2027 07:08		15/07/2027 15:57	
09/03/2027 19:51		16/05/2027 07:08		15/07/2027 15:57		21/07/2027 03:26	
गुरु	19/01/2027 14:04	शनि	20/03/2027 12:14	बुध	24/05/2027 20:23	सूर्य	15/07/2027 22:32
शनि	28/01/2027 13:58	बुध	30/03/2027 01:38	केतु	28/05/2027 08:53	चंद्र	16/07/2027 09:29
बुध	05/02/2027 15:09	केतु	03/04/2027 00:05	शुक्र	07/06/2027 10:22	मंगल	16/07/2027 17:09
केतु	08/02/2027 22:41	शुक्र	14/04/2027 05:58	सूर्य	10/06/2027 10:48	राहु	17/07/2027 12:53
शुक्र	18/02/2027 09:57	सूर्य	17/04/2027 14:56	चंद्र	15/06/2027 11:32	गुरु	18/07/2027 06:25
सूर्य	21/02/2027 06:08	चंद्र	23/04/2027 05:52	मंगल	19/06/2027 00:03	शनि	19/07/2027 03:14
चंद्र	25/02/2027 23:46	मंगल	27/04/2027 04:20	राहु	28/06/2027 01:23	बुध	19/07/2027 21:51
मंगल	01/03/2027 07:19	राहु	07/05/2027 07:13	गुरु	06/07/2027 02:33	केतु	20/07/2027 05:32
राहु	09/03/2027 19:51	गुरु	16/05/2027 07:08	शनि	15/07/2027 15:57	शुक्र	21/07/2027 03:26

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - चंद्र	
21/07/2027 03:26	
30/07/2027 06:35	
चंद्र	21/07/2027 21:42
मंगल	22/07/2027 10:29
राहु	23/07/2027 19:22
गुरु	25/07/2027 00:35
शनि	26/07/2027 11:17
बुध	27/07/2027 18:19
केतु	28/07/2027 07:07
शुक्र	29/07/2027 19:38
सूर्य	30/07/2027 06:35

सूर्य - सूर्य - मंगल	
30/07/2027 06:35	
05/08/2027 16:00	
मंगल	30/07/2027 15:32
राहु	31/07/2027 14:33
गुरु	01/08/2027 11:00
शनि	02/08/2027 11:18
बुध	03/08/2027 09:02
केतु	03/08/2027 17:58
शुक्र	04/08/2027 19:33
सूर्य	05/08/2027 03:13
चंद्र	05/08/2027 16:00

सूर्य - सूर्य - राहु	
05/08/2027 16:00	
22/08/2027 02:28	
राहु	08/08/2027 03:10
गुरु	10/08/2027 07:46
शनि	12/08/2027 22:13
बुध	15/08/2027 06:06
केतु	16/08/2027 05:07
शुक्र	18/08/2027 22:52
सूर्य	19/08/2027 18:35
चंद्र	21/08/2027 03:27
मंगल	22/08/2027 02:28

सूर्य - सूर्य - गुरु	
22/08/2027 02:28	
05/09/2027 17:06	
गुरु	24/08/2027 01:13
शनि	26/08/2027 08:44
बुध	28/08/2027 10:25
केतु	29/08/2027 06:52
शुक्र	31/08/2027 17:18
सूर्य	01/09/2027 10:50
चंद्र	02/09/2027 16:03
मंगल	03/09/2027 12:31
राहु	05/09/2027 17:06

सूर्य - सूर्य - शनि	
05/09/2027 17:06	
23/09/2027 01:29	
शनि	08/09/2027 11:02
बुध	10/09/2027 22:01
केतु	11/09/2027 22:19
शुक्र	14/09/2027 19:43
सूर्य	15/09/2027 16:32
चंद्र	17/09/2027 03:14
मंगल	18/09/2027 03:31
राहु	20/09/2027 17:58
गुरु	23/09/2027 01:29

सूर्य - सूर्य - बुध	
23/09/2027 01:29	
08/10/2027 14:03	
बुध	25/09/2027 06:16
केतु	26/09/2027 04:00
शुक्र	28/09/2027 18:06
सूर्य	29/09/2027 12:43
चंद्र	30/09/2027 19:46
मंगल	01/10/2027 17:30
राहु	04/10/2027 01:23
गुरु	06/10/2027 03:04
शनि	08/10/2027 14:03

सूर्य - सूर्य - केतु	
08/10/2027 14:03	
14/10/2027 23:27	
केतु	08/10/2027 23:00
शुक्र	10/10/2027 00:34
सूर्य	10/10/2027 08:14
चंद्र	10/10/2027 21:01
मंगल	11/10/2027 05:58
राहु	12/10/2027 04:59
गुरु	13/10/2027 01:26
शनि	14/10/2027 01:43
बुध	14/10/2027 23:27

सूर्य - सूर्य - शुक्र	
14/10/2027 23:27	
02/11/2027 05:45	
शुक्र	18/10/2027 00:30
सूर्य	18/10/2027 22:25
चंद्र	20/10/2027 10:56
मंगल	21/10/2027 12:31
राहु	24/10/2027 06:15
गुरु	26/10/2027 16:42
शनि	29/10/2027 14:05
बुध	01/11/2027 04:11
केतु	02/11/2027 05:45

सूर्य - चंद्र - चंद्र	
02/11/2027 05:45	
17/11/2027 11:00	
चंद्र	03/11/2027 12:11
मंगल	04/11/2027 09:30
राहु	06/11/2027 16:17
गुरु	08/11/2027 16:59
शनि	11/11/2027 02:49
बुध	13/11/2027 06:33
केतु	14/11/2027 03:52
शुक्र	16/11/2027 16:44
सूर्य	17/11/2027 11:00

सूर्य - चंद्र - मंगल	
17/11/2027 11:00	
28/11/2027 02:41	
मंगल	18/11/2027 01:55
राहु	19/11/2027 16:16
गुरु	21/11/2027 02:21
शनि	22/11/2027 18:50
बुध	24/11/2027 07:04
केतु	24/11/2027 21:58
शुक्र	26/11/2027 16:35
सूर्य	27/11/2027 05:22
चंद्र	28/11/2027 02:41

सूर्य - चंद्र - राहु	
28/11/2027 02:41	
25/12/2027 12:08	
राहु	02/12/2027 05:18
गुरु	05/12/2027 20:57
शनि	10/12/2027 05:03
बुध	14/12/2027 02:11
केतु	15/12/2027 16:32
शुक्र	20/12/2027 06:07
सूर्य	21/12/2027 14:59
चंद्र	23/12/2027 21:46
मंगल	25/12/2027 12:08

सूर्य - चंद्र - गुरु	
25/12/2027 12:08	
18/01/2028 20:32	
गुरु	28/12/2027 18:03
शनि	01/01/2028 14:35
बुध	05/01/2028 01:22
केतु	06/01/2028 11:27
शुक्र	10/01/2028 12:51
सूर्य	11/01/2028 18:05
चंद्र	13/01/2028 18:47
मंगल	15/01/2028 04:52
राहु	18/01/2028 20:32

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - चंद्र - शनि		सूर्य - चंद्र - बुध		सूर्य - चंद्र - केतु		सूर्य - चंद्र - शुक्र	
18/01/2028 20:32		16/02/2028 18:30		13/03/2028 15:26		24/03/2028 07:06	
16/02/2028 18:30		13/03/2028 15:26		24/03/2028 07:06		23/04/2028 17:36	
शनि	23/01/2028 10:24	बुध	20/02/2028 10:28	केतु	14/03/2028 06:20	शुक्र	29/03/2028 08:51
बुध	27/01/2028 12:43	केतु	21/02/2028 22:41	शुक्र	16/03/2028 00:57	सूर्य	30/03/2028 21:23
केतु	29/01/2028 05:12	शुक्र	26/02/2028 06:10	सूर्य	16/03/2028 13:44	चंद्र	02/04/2028 10:15
शुक्र	03/02/2028 00:52	सूर्य	27/02/2028 13:13	चंद्र	17/03/2028 11:03	मंगल	04/04/2028 04:52
सूर्य	04/02/2028 11:34	चंद्र	29/02/2028 16:58	मंगल	18/03/2028 01:57	राहु	08/04/2028 18:26
चंद्र	06/02/2028 21:24	मंगल	02/03/2028 05:11	राहु	19/03/2028 16:19	गुरु	12/04/2028 19:50
मंगल	08/02/2028 13:52	राहु	06/03/2028 02:19	गुरु	21/03/2028 02:24	शनि	17/04/2028 15:30
राहु	12/02/2028 21:58	गुरु	09/03/2028 13:07	शनि	22/03/2028 18:53	बुध	21/04/2028 22:59
गुरु	16/02/2028 18:30	शनि	13/03/2028 15:26	बुध	24/03/2028 07:06	केतु	23/04/2028 17:36

सूर्य - चंद्र - सूर्य		सूर्य - मंगल - मंगल		सूर्य - मंगल - राहु		सूर्य - मंगल - गुरु	
23/04/2028 17:36		02/05/2028 20:45		10/05/2028 07:43		29/05/2028 11:56	
02/05/2028 20:45		10/05/2028 07:43		29/05/2028 11:56		15/06/2028 13:01	
सूर्य	24/04/2028 04:34	मंगल	03/05/2028 07:11	राहु	13/05/2028 04:45	गुरु	31/05/2028 18:29
चंद्र	24/04/2028 22:49	राहु	04/05/2028 10:02	गुरु	15/05/2028 18:07	शनि	03/06/2028 11:15
मंगल	25/04/2028 11:36	गुरु	05/05/2028 09:54	शनि	18/05/2028 18:59	बुध	05/06/2028 21:12
राहु	26/04/2028 20:29	शनि	06/05/2028 14:14	बुध	21/05/2028 12:11	केतु	06/06/2028 21:04
गुरु	28/04/2028 01:42	बुध	07/05/2028 15:36	केतु	22/05/2028 15:02	शुक्र	09/06/2028 17:15
शनि	29/04/2028 12:24	केतु	08/05/2028 02:02	शुक्र	25/05/2028 19:44	सूर्य	10/06/2028 13:42
बुध	30/04/2028 19:27	शुक्र	09/05/2028 07:52	सूर्य	26/05/2028 18:44	चंद्र	11/06/2028 23:48
केतु	01/05/2028 08:14	सूर्य	09/05/2028 16:49	चंद्र	28/05/2028 09:06	मंगल	12/06/2028 23:39
शुक्र	02/05/2028 20:45	चंद्र	10/05/2028 07:43	मंगल	29/05/2028 11:56	राहु	15/06/2028 13:01

सूर्य - मंगल - शनि		सूर्य - मंगल - बुध		सूर्य - मंगल - केतु		सूर्य - मंगल - शुक्र	
15/06/2028 13:01		05/07/2028 18:48		23/07/2028 21:27		31/07/2028 08:25	
05/07/2028 18:48		23/07/2028 21:27		31/07/2028 08:25		21/08/2028 15:46	
शनि	18/06/2028 17:56	बुध	08/07/2028 08:23	केतु	24/07/2028 07:53	शुक्र	03/08/2028 21:39
बुध	21/06/2028 14:45	केतु	09/07/2028 09:44	शुक्र	25/07/2028 13:43	सूर्य	04/08/2028 23:13
केतु	22/06/2028 19:05	शुक्र	12/07/2028 10:10	सूर्य	25/07/2028 22:40	चंद्र	06/08/2028 17:50
शुक्र	26/06/2028 04:03	सूर्य	13/07/2028 07:54	चंद्र	26/07/2028 13:35	मंगल	07/08/2028 23:39
सूर्य	27/06/2028 04:21	चंद्र	14/07/2028 20:07	मंगल	27/07/2028 00:01	राहु	11/08/2028 04:21
चंद्र	28/06/2028 20:50	मंगल	15/07/2028 21:29	राहु	28/07/2028 02:52	गुरु	14/08/2028 00:32
मंगल	30/06/2028 01:10	राहु	18/07/2028 14:41	गुरु	29/07/2028 02:44	शनि	17/08/2028 09:30
राहु	03/07/2028 02:02	गुरु	21/07/2028 00:38	शनि	30/07/2028 07:04	बुध	20/08/2028 09:57
गुरु	05/07/2028 18:48	शनि	23/07/2028 21:27	बुध	31/07/2028 08:25	केतु	21/08/2028 15:46

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - मंगल - सूर्य	
21/08/2028 15:46	
28/08/2028 01:11	
सूर्य	21/08/2028 23:26
चंद्र	22/08/2028 12:14
मंगल	22/08/2028 21:10
राहु	23/08/2028 20:11
गुरु	24/08/2028 16:38
शनि	25/08/2028 16:56
बुध	26/08/2028 14:40
केतु	26/08/2028 23:37
शुक्र	28/08/2028 01:11

सूर्य - मंगल - चंद्र	
28/08/2028 01:11	
07/09/2028 16:51	
चंद्र	28/08/2028 22:29
मंगल	29/08/2028 13:24
राहु	31/08/2028 03:45
गुरु	01/09/2028 13:50
शनि	03/09/2028 06:19
बुध	04/09/2028 18:32
केतु	05/09/2028 09:27
शुक्र	07/09/2028 04:04
सूर्य	07/09/2028 16:51

सूर्य - राहु - राहु	
07/09/2028 16:51	
27/10/2028 00:16	
राहु	15/09/2028 02:22
गुरु	21/09/2028 16:09
शनि	29/09/2028 11:31
बुध	06/10/2028 11:10
केतु	09/10/2028 08:12
शुक्र	17/10/2028 13:26
सूर्य	20/10/2028 00:37
चंद्र	24/10/2028 03:14
मंगल	27/10/2028 00:16

सूर्य - राहु - गुरु	
27/10/2028 00:16	
09/12/2028 20:11	
गुरु	01/11/2028 20:31
शनि	08/11/2028 19:04
बुध	15/11/2028 00:06
केतु	17/11/2028 13:27
शुक्र	24/11/2028 20:47
सूर्य	27/11/2028 01:22
चंद्र	30/11/2028 17:02
मंगल	03/12/2028 06:24
राहु	09/12/2028 20:11

सूर्य - राहु - शनि	
09/12/2028 20:11	
30/01/2029 21:20	
शनि	18/12/2028 01:58
बुध	25/12/2028 10:56
केतु	28/12/2028 11:48
शुक्र	06/01/2029 03:59
सूर्य	08/01/2029 18:27
चंद्र	13/01/2029 02:32
मंगल	16/01/2029 03:25
राहु	23/01/2029 22:47
गुरु	30/01/2029 21:20

सूर्य - राहु - बुध	
30/01/2029 21:20	
18/03/2029 11:00	
बुध	06/02/2029 11:40
केतु	09/02/2029 04:52
शुक्र	16/02/2029 23:09
सूर्य	19/02/2029 07:02
चंद्र	23/02/2029 04:10
मंगल	25/02/2029 21:22
राहु	04/03/2029 21:01
गुरु	11/03/2029 02:02
शनि	18/03/2029 11:00

सूर्य - राहु - केतु	
18/03/2029 11:00	
06/04/2029 15:13	
केतु	19/03/2029 13:51
शुक्र	22/03/2029 18:33
सूर्य	23/03/2029 17:34
चंद्र	25/03/2029 07:55
मंगल	26/03/2029 10:45
राहु	29/03/2029 07:47
गुरु	31/03/2029 21:09
शनि	03/04/2029 22:01
बुध	06/04/2029 15:13

सूर्य - राहु - शुक्र	
06/04/2029 15:13	
31/05/2029 10:07	
शुक्र	15/04/2029 18:22
सूर्य	18/04/2029 12:07
चंद्र	23/04/2029 01:41
मंगल	26/04/2029 06:23
राहु	04/05/2029 11:37
गुरु	11/05/2029 18:57
शनि	20/05/2029 11:08
बुध	28/05/2029 05:25
केतु	31/05/2029 10:07

सूर्य - राहु - सूर्य	
31/05/2029 10:07	
16/06/2029 20:35	
सूर्य	01/06/2029 05:50
चंद्र	02/06/2029 14:43
मंगल	03/06/2029 13:43
राहु	06/06/2029 00:54
गुरु	08/06/2029 05:29
शनि	10/06/2029 19:57
बुध	13/06/2029 03:50
केतु	14/06/2029 02:50
शुक्र	16/06/2029 20:35

सूर्य - राहु - चंद्र	
16/06/2029 20:35	
14/07/2029 06:02	
चंद्र	19/06/2029 03:22
मंगल	20/06/2029 17:43
राहु	24/06/2029 20:21
गुरु	28/06/2029 12:00
शनि	02/07/2029 20:06
बुध	06/07/2029 17:14
केतु	08/07/2029 07:35
शुक्र	12/07/2029 21:10
सूर्य	14/07/2029 06:02

सूर्य - राहु - मंगल	
14/07/2029 06:02	
02/08/2029 10:15	
मंगल	15/07/2029 08:53
राहु	18/07/2029 05:55
गुरु	20/07/2029 19:17
शनि	23/07/2029 20:09
बुध	26/07/2029 13:20
केतु	27/07/2029 16:11
शुक्र	30/07/2029 20:53
सूर्य	31/07/2029 19:54
चंद्र	02/08/2029 10:15

सूर्य - गुरु - गुरु	
02/08/2029 10:15	
10/09/2029 09:17	
गुरु	07/08/2029 14:55
शनि	13/08/2029 18:58
बुध	19/08/2029 07:26
केतु	21/08/2029 13:59
शुक्र	28/08/2029 01:49
सूर्य	30/08/2029 00:34
चंद्र	02/09/2029 06:29
मंगल	04/09/2029 13:02
राहु	10/09/2029 09:17

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - गुरु - सूर्य	
16/10/2025 12:58	
23/10/2025 10:33	
सूर्य	16/10/2025 21:15
चंद्र	17/10/2025 11:02
मंगल	17/10/2025 20:42
राहु	18/10/2025 21:32
गुरु	19/10/2025 19:37
शनि	20/10/2025 21:50
बुध	21/10/2025 21:17
केतु	22/10/2025 06:57
शुक्र	23/10/2025 10:33

शुक्र - बुध - गुरु - चंद्र	
23/10/2025 10:33	
03/11/2025 22:31	
चंद्र	24/10/2025 09:32
मंगल	25/10/2025 01:38
राहु	26/10/2025 19:02
गुरु	28/10/2025 07:50
शनि	30/10/2025 03:31
बुध	31/10/2025 18:37
केतु	01/11/2025 10:43
शुक्र	03/11/2025 08:43
सूर्य	03/11/2025 22:31

शुक्र - बुध - गुरु - मंगल	
03/11/2025 22:31	
11/11/2025 23:41	
मंगल	04/11/2025 09:47
राहु	05/11/2025 14:45
गुरु	06/11/2025 16:31
शनि	07/11/2025 23:06
बुध	09/11/2025 02:28
केतु	09/11/2025 13:44
शुक्र	10/11/2025 21:56
सूर्य	11/11/2025 07:35
चंद्र	11/11/2025 23:41

शुक्र - बुध - गुरु - राहु	
11/11/2025 23:41	
02/12/2025 16:26	
राहु	15/11/2025 02:12
गुरु	17/11/2025 20:26
शनि	21/11/2025 03:05
बुध	24/11/2025 01:27
केतु	25/11/2025 06:26
शुक्र	28/11/2025 17:13
सूर्य	29/11/2025 18:03
चंद्र	01/12/2025 11:27
मंगल	02/12/2025 16:26

शुक्र - बुध - शनि - शनि	
02/12/2025 16:26	
28/12/2025 15:05	
शनि	06/12/2025 19:01
बुध	10/12/2025 11:13
केतु	11/12/2025 23:33
शुक्र	16/12/2025 07:19
सूर्य	17/12/2025 14:27
चंद्र	19/12/2025 18:20
मंगल	21/12/2025 06:40
राहु	25/12/2025 04:03
गुरु	28/12/2025 15:05

शुक्र - बुध - शनि - बुध	
28/12/2025 15:05	
20/01/2026 20:11	
बुध	31/12/2025 22:00
केतु	02/01/2026 06:30
शुक्र	06/01/2026 03:21
सूर्य	07/01/2026 07:12
चंद्र	09/01/2026 05:38
मंगल	10/01/2026 14:08
राहु	14/01/2026 01:42
गुरु	17/01/2026 03:58
शनि	20/01/2026 20:11

शुक्र - बुध - शनि - केतु	
20/01/2026 20:11	
30/01/2026 09:35	
केतु	21/01/2026 09:34
शुक्र	22/01/2026 23:48
सूर्य	23/01/2026 11:16
चंद्र	24/01/2026 06:23
मंगल	24/01/2026 19:46
राहु	26/01/2026 06:11
गुरु	27/01/2026 12:46
शनि	29/01/2026 01:05
बुध	30/01/2026 09:35

शुक्र - बुध - शनि - शुक्र	
30/01/2026 09:35	
26/02/2026 17:00	
शुक्र	03/02/2026 22:49
सूर्य	05/02/2026 07:35
चंद्र	07/02/2026 14:12
मंगल	09/02/2026 04:26
राहु	13/02/2026 06:45
गुरु	16/02/2026 22:09
शनि	21/02/2026 05:55
बुध	25/02/2026 02:46
केतु	26/02/2026 17:00

शुक्र - बुध - शनि - सूर्य	
26/02/2026 17:00	
06/03/2026 21:38	
सूर्य	27/02/2026 02:50
चंद्र	27/02/2026 19:13
मंगल	28/02/2026 06:41
राहु	01/03/2026 12:11
गुरु	02/03/2026 14:24
शनि	03/03/2026 21:32
बुध	05/03/2026 01:23
केतु	05/03/2026 12:51
शुक्र	06/03/2026 21:38

शुक्र - बुध - शनि - चंद्र	
06/03/2026 21:38	
20/03/2026 13:20	
चंद्र	08/03/2026 00:56
मंगल	08/03/2026 20:03
राहु	10/03/2026 21:13
गुरु	12/03/2026 16:54
शनि	14/03/2026 20:48
बुध	16/03/2026 19:13
केतु	17/03/2026 14:20
शुक्र	19/03/2026 20:57
सूर्य	20/03/2026 13:20

शुक्र - बुध - शनि - मंगल	
20/03/2026 13:20	
30/03/2026 02:44	
मंगल	21/03/2026 02:43
राहु	22/03/2026 13:08
गुरु	23/03/2026 19:43
शनि	25/03/2026 08:02
बुध	26/03/2026 16:32
केतु	27/03/2026 05:55
शुक्र	28/03/2026 20:09
सूर्य	29/03/2026 07:37
चंद्र	30/03/2026 02:44

शुक्र - बुध - शनि - राहु	
30/03/2026 02:44	
23/04/2026 16:37	
राहु	02/04/2026 19:13
गुरु	06/04/2026 01:52
शनि	09/04/2026 23:16
बुध	13/04/2026 10:50
केतु	14/04/2026 21:14
शुक्र	18/04/2026 23:33
सूर्य	20/04/2026 05:03
चंद्र	22/04/2026 06:12
मंगल	23/04/2026 16:37

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - बुध - शनि - गुरु	
23/04/2026 16:37	
15/05/2026 12:57	
गुरु	26/04/2026 14:32
शनि	30/04/2026 01:33
बुध	03/05/2026 03:50
केतु	04/05/2026 10:25
शुक्र	08/05/2026 01:48
सूर्य	09/05/2026 04:01
चंद्र	10/05/2026 23:43
मंगल	12/05/2026 06:18
राहु	15/05/2026 12:57

शुक्र - केतु - केतु - केतु	
15/05/2026 12:57	
16/05/2026 23:45	
केतु	15/05/2026 14:59
शुक्र	15/05/2026 20:47
सूर्य	15/05/2026 22:31
चंद्र	16/05/2026 01:25
मंगल	16/05/2026 03:27
राहु	16/05/2026 08:40
गुरु	16/05/2026 13:19
शनि	16/05/2026 18:49
बुध	16/05/2026 23:45

शुक्र - केतु - केतु - शुक्र	
16/05/2026 23:45	
21/05/2026 03:11	
शुक्र	17/05/2026 16:19
सूर्य	17/05/2026 21:18
चंद्र	18/05/2026 05:35
मंगल	18/05/2026 11:23
राहु	19/05/2026 02:18
गुरु	19/05/2026 15:33
शनि	20/05/2026 07:18
बुध	20/05/2026 21:23
केतु	21/05/2026 03:11

शुक्र - केतु - केतु - सूर्य	
21/05/2026 03:11	
22/05/2026 09:01	
सूर्य	21/05/2026 04:40
चंद्र	21/05/2026 07:09
मंगल	21/05/2026 08:54
राहु	21/05/2026 13:22
गुरु	21/05/2026 17:21
शनि	21/05/2026 22:04
बुध	22/05/2026 02:18
केतु	22/05/2026 04:02
शुक्र	22/05/2026 09:01

शुक्र - केतु - केतु - चंद्र	
22/05/2026 09:01	
24/05/2026 10:43	
चंद्र	22/05/2026 13:09
मंगल	22/05/2026 16:03
राहु	22/05/2026 23:31
गुरु	23/05/2026 06:08
शनि	23/05/2026 14:01
बुध	23/05/2026 21:03
केतु	23/05/2026 23:57
शुक्र	24/05/2026 08:14
सूर्य	24/05/2026 10:43

शुक्र - केतु - केतु - मंगल	
24/05/2026 10:43	
25/05/2026 21:31	
मंगल	24/05/2026 12:45
राहु	24/05/2026 17:58
गुरु	24/05/2026 22:37
शनि	25/05/2026 04:07
बुध	25/05/2026 09:03
केतु	25/05/2026 11:05
शुक्र	25/05/2026 16:53
सूर्य	25/05/2026 18:37
चंद्र	25/05/2026 21:31

शुक्र - केतु - केतु - राहु	
25/05/2026 21:31	
29/05/2026 15:01	
राहु	26/05/2026 10:57
गुरु	26/05/2026 22:53
शनि	27/05/2026 13:03
बुध	28/05/2026 01:43
केतु	28/05/2026 06:57
शुक्र	28/05/2026 21:52
सूर्य	29/05/2026 02:20
चंद्र	29/05/2026 09:47
मंगल	29/05/2026 15:01

शुक्र - केतु - केतु - गुरु	
29/05/2026 15:01	
01/06/2026 22:33	
गुरु	30/05/2026 01:37
शनि	30/05/2026 14:13
बुध	31/05/2026 01:29
केतु	31/05/2026 06:07
शुक्र	31/05/2026 19:23
सूर्य	31/05/2026 23:21
चंद्र	01/06/2026 05:59
मंगल	01/06/2026 10:37
राहु	01/06/2026 22:33

शुक्र - केतु - केतु - शनि	
01/06/2026 22:33	
05/06/2026 21:01	
शनि	02/06/2026 13:31
बुध	03/06/2026 02:53
केतु	03/06/2026 08:24
शुक्र	04/06/2026 00:09
सूर्य	04/06/2026 04:52
चंद्र	04/06/2026 12:44
मंगल	04/06/2026 18:15
राहु	05/06/2026 08:25
गुरु	05/06/2026 21:01

शुक्र - केतु - केतु - बुध	
05/06/2026 21:01	
09/06/2026 09:32	
बुध	06/06/2026 08:59
केतु	06/06/2026 13:55
शुक्र	07/06/2026 04:00
सूर्य	07/06/2026 08:14
चंद्र	07/06/2026 15:16
मंगल	07/06/2026 20:12
राहु	08/06/2026 08:53
गुरु	08/06/2026 20:09
शनि	09/06/2026 09:32

शुक्र - केतु - शुक्र - शुक्र	
09/06/2026 09:32	
21/06/2026 05:37	
शुक्र	11/06/2026 08:52
सूर्य	11/06/2026 23:05
चंद्र	12/06/2026 22:45
मंगल	13/06/2026 15:19
राहु	15/06/2026 09:56
गुरु	16/06/2026 23:49
शनि	18/06/2026 20:48
बुध	20/06/2026 13:02
केतु	21/06/2026 05:37

शुक्र - केतु - शुक्र - सूर्य	
21/06/2026 05:37	
24/06/2026 18:50	
सूर्य	21/06/2026 09:52
चंद्र	21/06/2026 16:58
मंगल	21/06/2026 21:57
राहु	22/06/2026 10:44
गुरु	22/06/2026 22:05
शनि	23/06/2026 11:35
बुध	23/06/2026 23:40
केतु	24/06/2026 04:38
शुक्र	24/06/2026 18:50

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 12 वर्ष 3 मास 2 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/08/1965		17/11/1977		17/11/1991		17/11/2006		17/11/2022	
17/11/1977		17/11/1991		17/11/2006		17/11/2022		17/11/2039	
गुरु	03/05/1966	शनि	27/07/1979	केतु	26/10/1993	चंद्र	31/01/2009	बुध	15/05/2025
शनि	27/11/1967	केतु	18/05/1981	चंद्र	21/11/1995	बुध	07/06/2011	शुक्र	04/01/2028
केतु	02/08/1969	चंद्र	24/04/1983	बुध	01/02/1998	शुक्र	30/11/2013	सूर्य	15/08/2029
चंद्र	19/05/1971	बुध	12/05/1985	शुक्र	31/05/2000	सूर्य	07/06/2015	मंगल	19/05/2031
बुध	14/04/1973	शुक्र	15/07/1987	सूर्य	01/11/2001	मंगल	31/01/2017	गुरु	14/04/2033
शुक्र	21/04/1975	सूर्य	10/11/1988	मंगल	22/05/2003	गुरु	17/11/2018	शनि	03/05/2035
सूर्य	14/07/1976	मंगल	23/04/1990	गुरु	25/01/2005	शनि	23/10/2020	केतु	14/07/2037
मंगल	17/11/1977	गुरु	17/11/1991	शनि	17/11/2006	केतु	17/11/2022	चंद्र	17/11/2039

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
17/11/2039		17/11/2057		17/11/2068		17/11/2080	
17/11/2057		17/11/2068		17/11/2080		00/00/0000	
शुक्र	03/09/2042	सूर्य	03/12/2058	मंगल	13/02/2070	गुरु	15/08/2081
सूर्य	18/05/2044	मंगल	23/01/2060	गुरु	19/06/2071		00/00/0000
मंगल	29/03/2046	गुरु	17/04/2061	शनि	29/11/2072		00/00/0000
गुरु	04/04/2048	शनि	15/08/2062	केतु	19/06/2074		00/00/0000
शनि	06/06/2050	केतु	16/01/2064	चंद्र	14/02/2076		00/00/0000
केतु	04/10/2052	चंद्र	23/07/2065	बुध	17/11/2077		00/00/0000
चंद्र	29/03/2055	बुध	04/03/2067	शुक्र	28/09/2079		00/00/0000
बुध	17/11/2057	शुक्र	17/11/2068	सूर्य	17/11/2080		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
15/08/1965		03/05/1966		27/11/1967		02/08/1969		19/05/1971	
03/05/1966		27/11/1967		02/08/1969		19/05/1971		14/04/1973	
	00/00/0000	शनि	11/07/1966	केतु	14/02/1968	चंद्र	31/10/1969	बुध	29/08/1971
	00/00/0000	केतु	23/09/1966	चंद्र	09/05/1968	बुध	04/02/1970	शुक्र	15/12/1971
	00/00/0000	चंद्र	11/12/1966	बुध	07/08/1968	शुक्र	17/05/1970	सूर्य	19/02/1972
	15/08/1965	बुध	05/03/1967	शुक्र	10/11/1968	सूर्य	18/07/1970	मंगल	01/05/1972
बुध	27/10/1965	शुक्र	02/06/1967	सूर्य	07/01/1969	मंगल	24/09/1970	गुरु	18/07/1972
शुक्र	17/01/1966	सूर्य	26/07/1967	मंगल	12/03/1969	गुरु	06/12/1970	शनि	10/10/1972
सूर्य	09/03/1966	मंगल	24/09/1967	गुरु	20/05/1969	शनि	23/02/1971	केतु	08/01/1973
मंगल	03/05/1966	गुरु	27/11/1967	शनि	02/08/1969	केतु	19/05/1971	चंद्र	14/04/1973

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
14/04/1973		21/04/1975		14/07/1976		17/11/1977		27/07/1979	
21/04/1975		14/07/1976		17/11/1977		27/07/1979		18/05/1981	
शुक्र	06/08/1973	सूर्य	02/06/1975	मंगल	03/09/1976	शनि	30/01/1978	केतु	21/10/1979
सूर्य	15/10/1973	मंगल	19/07/1975	गुरु	28/10/1976	केतु	20/04/1978	चंद्र	20/01/1980
मंगल	30/12/1973	गुरु	07/09/1975	शनि	26/12/1976	चंद्र	14/07/1978	बुध	26/04/1980
गुरु	23/03/1974	शनि	01/11/1975	केतु	27/02/1977	बुध	13/10/1978	शुक्र	06/08/1980
शनि	20/06/1974	केतु	29/12/1975	चंद्र	06/05/1977	शुक्र	17/01/1979	सूर्य	08/10/1980
केतु	23/09/1974	चंद्र	29/02/1976	बुध	17/07/1977	सूर्य	16/03/1979	मंगल	15/12/1980
चंद्र	03/01/1975	बुध	05/05/1976	शुक्र	01/10/1977	मंगल	19/05/1979	गुरु	28/02/1981
बुध	21/04/1975	शुक्र	14/07/1976	सूर्य	17/11/1977	गुरु	27/07/1979	शनि	18/05/1981

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
18/05/1981		24/04/1983		12/05/1985		15/07/1987		10/11/1988	
24/04/1983		12/05/1985		15/07/1987		10/11/1988		23/04/1990	
चंद्र	24/08/1981	बुध	11/08/1983	शुक्र	12/09/1985	सूर्य	30/08/1987	मंगल	04/01/1989
बुध	05/12/1981	शुक्र	06/12/1983	सूर्य	26/11/1985	मंगल	19/10/1987	गुरु	04/03/1989
शुक्र	24/03/1982	सूर्य	15/02/1984	मंगल	17/02/1986	गुरु	12/12/1987	शनि	07/05/1989
सूर्य	30/05/1982	मंगल	02/05/1984	गुरु	16/05/1986	शनि	09/02/1988	केतु	15/07/1989
मंगल	11/08/1982	गुरु	25/07/1984	शनि	20/08/1986	केतु	11/04/1988	चंद्र	26/09/1989
गुरु	29/10/1982	शनि	24/10/1984	केतु	01/12/1986	चंद्र	17/06/1988	बुध	12/12/1989
शनि	22/01/1983	केतु	29/01/1985	चंद्र	20/03/1987	बुध	27/08/1988	शुक्र	04/03/1990
केतु	24/04/1983	चंद्र	12/05/1985	बुध	15/07/1987	शुक्र	10/11/1988	सूर्य	23/04/1990

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
23/04/1990		17/11/1991		26/10/1993		21/11/1995		01/02/1998	
17/11/1991		26/10/1993		21/11/1995		01/02/1998		31/05/2000	
गुरु	27/06/1990	केतु	17/02/1992	चंद्र	07/02/1994	बुध	17/03/1996	शुक्र	12/06/1998
शनि	04/09/1990	चंद्र	25/05/1992	बुध	29/05/1994	शुक्र	20/07/1996	सूर्य	01/09/1998
केतु	17/11/1990	बुध	06/09/1992	शुक्र	23/09/1994	सूर्य	04/10/1996	मंगल	28/11/1998
चंद्र	04/02/1991	शुक्र	25/12/1992	सूर्य	04/12/1994	मंगल	26/12/1996	गुरु	03/03/1999
बुध	29/04/1991	सूर्य	02/03/1993	मंगल	20/02/1995	गुरु	26/03/1997	शनि	14/06/1999
शुक्र	27/07/1991	मंगल	14/05/1993	गुरु	16/05/1995	शनि	01/07/1997	केतु	02/10/1999
सूर्य	19/09/1991	गुरु	01/08/1993	शनि	15/08/1995	केतु	13/10/1997	चंद्र	27/01/2000
मंगल	17/11/1991	शनि	26/10/1993	केतु	21/11/1995	चंद्र	01/02/1998	बुध	31/05/2000

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
31/05/2000		01/11/2001		22/05/2003		25/01/2005		17/11/2006	
01/11/2001		22/05/2003		25/01/2005		17/11/2006		31/01/2009	
सूर्य	19/07/2000	मंगल	30/12/2001	गुरु	30/07/2003	शनि	15/04/2005	चंद्र	08/03/2007
मंगल	11/09/2000	गुरु	03/03/2002	शनि	12/10/2003	केतु	09/07/2005	बुध	05/07/2007
गुरु	08/11/2000	शनि	11/05/2002	केतु	30/12/2003	चंद्र	09/10/2005	शुक्र	07/11/2007
शनि	10/01/2001	केतु	23/07/2002	चंद्र	24/03/2004	बुध	13/01/2006	सूर्य	22/01/2008
केतु	18/03/2001	चंद्र	09/10/2002	बुध	22/06/2004	शुक्र	26/04/2006	मंगल	14/04/2008
चंद्र	28/05/2001	बुध	31/12/2002	शुक्र	25/09/2004	सूर्य	28/06/2006	गुरु	14/07/2008
बुध	13/08/2001	शुक्र	29/03/2003	सूर्य	22/11/2004	मंगल	04/09/2006	शनि	19/10/2008
शुक्र	01/11/2001	सूर्य	22/05/2003	मंगल	25/01/2005	गुरु	17/11/2006	केतु	31/01/2009

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
31/01/2009		07/06/2011		30/11/2013		07/06/2015		31/01/2017	
07/06/2011		30/11/2013		07/06/2015		31/01/2017		17/11/2018	
बुध	06/06/2009	शुक्र	25/10/2011	सूर्य	21/01/2014	मंगल	08/08/2015	गुरु	15/04/2017
शुक्र	17/10/2009	सूर्य	19/01/2012	मंगल	19/03/2014	गुरु	15/10/2015	शनि	03/07/2017
सूर्य	06/01/2010	मंगल	22/04/2012	गुरु	21/05/2014	शनि	27/12/2015	केतु	25/09/2017
मंगल	05/04/2010	गुरु	02/08/2012	शनि	26/07/2014	केतु	14/03/2016	चंद्र	25/12/2017
गुरु	09/07/2010	शनि	19/11/2012	केतु	06/10/2014	चंद्र	06/06/2016	बुध	31/03/2018
शनि	21/10/2010	केतु	17/03/2013	चंद्र	22/12/2014	बुध	02/09/2016	शुक्र	10/07/2018
केतु	09/02/2011	चंद्र	20/07/2013	बुध	13/03/2015	शुक्र	05/12/2016	सूर्य	10/09/2018
चंद्र	07/06/2011	बुध	30/11/2013	शुक्र	07/06/2015	सूर्य	31/01/2017	मंगल	17/11/2018

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
17/11/2018		23/10/2020		17/11/2022		15/05/2025		04/01/2028	
23/10/2020		17/11/2022		15/05/2025		04/01/2028		15/08/2029	
शनि	10/02/2019	केतु	28/01/2021	बुध	31/03/2023	शुक्र	12/10/2025	सूर्य	29/02/2028
केतु	13/05/2019	चंद्र	12/05/2021	शुक्र	19/08/2023	सूर्य	11/01/2026	मंगल	29/04/2028
चंद्र	18/08/2019	बुध	31/08/2021	सूर्य	13/11/2023	मंगल	21/04/2026	गुरु	04/07/2028
बुध	29/11/2019	शुक्र	26/12/2021	मंगल	15/02/2024	गुरु	07/08/2026	शनि	14/09/2028
शुक्र	18/03/2020	सूर्य	08/03/2022	गुरु	27/05/2024	शनि	01/12/2026	केतु	29/11/2028
सूर्य	24/05/2020	मंगल	25/05/2022	शनि	14/09/2024	केतु	05/04/2027	चंद्र	18/02/2029
मंगल	04/08/2020	गुरु	18/08/2022	केतु	10/01/2025	चंद्र	16/08/2027	बुध	15/05/2029
गुरु	23/10/2020	शनि	17/11/2022	चंद्र	15/05/2025	बुध	04/01/2028	शुक्र	15/08/2029

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
15/08/2029		19/05/2031		14/04/2033		03/05/2035		14/07/2037	
19/05/2031		14/04/2033		03/05/2035		14/07/2037		17/11/2039	
मंगल	20/10/2029	गुरु	05/08/2031	शनि	13/07/2033	केतु	15/08/2035	चंद्र	09/11/2037
गुरु	31/12/2029	शनि	28/10/2031	केतु	18/10/2033	चंद्र	04/12/2035	बुध	15/03/2038
शनि	18/03/2030	केतु	26/01/2032	चंद्र	29/01/2034	बुध	30/03/2036	शुक्र	26/07/2038
केतु	10/06/2030	चंद्र	01/05/2032	बुध	19/05/2034	शुक्र	02/08/2036	सूर्य	15/10/2038
चंद्र	06/09/2030	बुध	11/08/2032	शुक्र	13/09/2034	सूर्य	17/10/2036	मंगल	11/01/2039
बुध	09/12/2030	शुक्र	27/11/2032	सूर्य	23/11/2034	मंगल	08/01/2037	गुरु	17/04/2039
शुक्र	19/03/2031	सूर्य	01/02/2033	मंगल	08/02/2035	गुरु	08/04/2037	शनि	30/07/2039
सूर्य	19/05/2031	मंगल	14/04/2033	गुरु	03/05/2035	शनि	14/07/2037	केतु	17/11/2039

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
17/11/2039		03/09/2042		18/05/2044		29/03/2046		04/04/2048	
03/09/2042		18/05/2044		29/03/2046		04/04/2048		06/06/2050	
शुक्र	24/04/2040	सूर्य	01/11/2042	मंगल	27/07/2044	गुरु	20/06/2046	शनि	09/07/2048
सूर्य	30/07/2040	मंगल	04/01/2043	गुरु	12/10/2044	शनि	17/09/2046	केतु	19/10/2048
मंगल	12/11/2040	गुरु	15/03/2043	शनि	02/01/2045	केतु	21/12/2046	चंद्र	06/02/2049
गुरु	06/03/2041	शनि	29/05/2043	केतु	31/03/2045	चंद्र	02/04/2047	बुध	02/06/2049
शनि	08/07/2041	केतु	18/08/2043	चंद्र	03/07/2045	बुध	19/07/2047	शुक्र	03/10/2049
केतु	16/11/2041	चंद्र	12/11/2043	बुध	10/10/2045	शुक्र	10/11/2047	सूर्य	17/12/2049
चंद्र	06/04/2042	बुध	11/02/2044	शुक्र	24/01/2046	सूर्य	19/01/2048	मंगल	10/03/2050
बुध	03/09/2042	शुक्र	18/05/2044	सूर्य	29/03/2046	मंगल	04/04/2048	गुरु	06/06/2050

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
06/06/2050		04/10/2052		29/03/2055		17/11/2057		03/12/2058	
04/10/2052		29/03/2055		17/11/2057		03/12/2058		23/01/2060	
केतु	24/09/2050	चंद्र	06/02/2053	बुध	18/08/2055	सूर्य	23/12/2057	मंगल	15/01/2059
चंद्र	20/01/2051	बुध	19/06/2053	शुक्र	14/01/2056	मंगल	01/02/2058	गुरु	03/03/2059
बुध	24/05/2051	शुक्र	06/11/2053	सूर्य	15/04/2056	गुरु	15/03/2058	शनि	22/04/2059
शुक्र	03/10/2051	सूर्य	31/01/2054	मंगल	23/07/2056	शनि	30/04/2058	केतु	14/06/2059
सूर्य	23/12/2051	मंगल	05/05/2054	गुरु	08/11/2056	केतु	18/06/2058	चंद्र	11/08/2059
मंगल	20/03/2052	गुरु	15/08/2054	शनि	04/03/2057	चंद्र	10/08/2058	बुध	11/10/2059
गुरु	23/06/2052	शनि	02/12/2054	केतु	07/07/2057	बुध	05/10/2058	शुक्र	14/12/2059
शनि	04/10/2052	केतु	29/03/2055	चंद्र	17/11/2057	शुक्र	03/12/2058	सूर्य	23/01/2060

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
23/01/2060		17/04/2061		15/08/2062		16/01/2064		23/07/2065	
17/04/2061		15/08/2062		16/01/2064		23/07/2065		04/03/2067	
गुरु	13/03/2060	शनि	14/06/2061	केतु	21/10/2062	चंद्र	02/04/2064	बुध	18/10/2065
शनि	06/05/2060	केतु	16/08/2061	चंद्र	01/01/2063	बुध	22/06/2064	शुक्र	17/01/2066
केतु	04/07/2060	चंद्र	22/10/2061	बुध	18/03/2063	शुक्र	16/09/2064	सूर्य	14/03/2066
चंद्र	04/09/2060	बुध	01/01/2062	शुक्र	06/06/2063	सूर्य	07/11/2064	मंगल	14/05/2066
बुध	09/11/2060	शुक्र	17/03/2062	सूर्य	26/07/2063	मंगल	04/01/2065	गुरु	19/07/2066
शुक्र	18/01/2061	सूर्य	02/05/2062	मंगल	17/09/2063	गुरु	07/03/2065	शनि	28/09/2066
सूर्य	01/03/2061	मंगल	21/06/2062	गुरु	15/11/2063	शनि	13/05/2065	केतु	13/12/2066
मंगल	17/04/2061	गुरु	15/08/2062	शनि	16/01/2064	केतु	23/07/2065	चंद्र	04/03/2067

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
04/03/2067		17/11/2068		13/02/2070		19/06/2071		29/11/2072	
17/11/2068		13/02/2070		19/06/2071		29/11/2072		19/06/2074	
शुक्र	09/06/2067	मंगल	03/01/2069	गुरु	09/04/2070	शनि	22/08/2071	केतु	11/02/2073
सूर्य	07/08/2067	गुरु	22/02/2069	शनि	07/06/2070	केतु	30/10/2071	चंद्र	30/04/2073
मंगल	11/10/2067	शनि	18/04/2069	केतु	10/08/2070	चंद्र	11/01/2072	बुध	22/07/2073
गुरु	20/12/2067	केतु	16/06/2069	चंद्र	17/10/2070	बुध	28/03/2072	शुक्र	18/10/2073
शनि	04/03/2068	चंद्र	17/08/2069	बुध	28/12/2070	शुक्र	18/06/2072	सूर्य	11/12/2073
केतु	23/05/2068	बुध	23/10/2069	शुक्र	14/03/2071	सूर्य	07/08/2072	मंगल	07/02/2074
चंद्र	17/08/2068	शुक्र	01/01/2070	सूर्य	30/04/2071	मंगल	01/10/2072	गुरु	12/04/2074
बुध	17/11/2068	सूर्य	13/02/2070	मंगल	19/06/2071	गुरु	29/11/2072	शनि	19/06/2074

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 11 मास 9 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
15/08/1965		25/07/1977		24/11/1988		25/07/1993		24/11/2006	
25/07/1977		24/11/1988		25/07/1993		24/11/2006		24/11/2010	
शनि	26/11/1966	बुध	04/03/1979	केतु	03/03/1989	शुक्र	15/10/1995	सूर्य	05/02/2007
बुध	12/09/1968	केतु	31/10/1979	शुक्र	12/12/1989	सूर्य	14/06/1996	चंद्र	07/06/2007
केतु	09/06/1969	शुक्र	20/09/1981	सूर्य	07/03/1990	चंद्र	25/07/1997	मंगल	31/08/2007
शुक्र	20/07/1971	सूर्य	15/04/1982	चंद्र	27/07/1990	मंगल	05/05/1998	राहु	06/04/2008
सूर्य	07/03/1972	चंद्र	26/03/1983	मंगल	04/11/1990	राहु	05/05/2000	गुरु	18/10/2008
चंद्र	27/03/1973	मंगल	22/11/1983	राहु	18/07/1991	गुरु	13/02/2002	शनि	06/06/2009
मंगल	22/12/1973	राहु	04/08/1985	गुरु	01/03/1992	शनि	25/03/2004	बुध	30/12/2009
राहु	16/11/1975	गुरु	07/02/1987	शनि	26/11/1992	बुध	13/02/2006	केतु	26/03/2010
गुरु	25/07/1977	शनि	24/11/1988	बुध	25/07/1993	केतु	24/11/2006	शुक्र	24/11/2010

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
24/11/2010		25/07/2017		26/03/2022		26/03/2034		24/11/2044	
25/07/2017		26/03/2022		26/03/2034		24/11/2044		00/00/0000	
चंद्र	15/06/2011	मंगल	02/11/2017	राहु	12/01/2024	गुरु	27/08/2035	शनि	15/08/2045
मंगल	04/11/2011	राहु	15/07/2018	गुरु	19/08/2025	शनि	05/05/2037		00/00/0000
राहु	03/11/2012	गुरु	28/02/2019	शनि	14/07/2027	बुध	08/11/2038		00/00/0000
गुरु	24/09/2013	शनि	24/11/2019	बुध	25/03/2029	केतु	23/06/2039		00/00/0000
शनि	15/10/2014	बुध	23/07/2020	केतु	06/12/2029	शुक्र	03/04/2041		00/00/0000
बुध	25/09/2015	केतु	30/10/2020	शुक्र	07/12/2031	सूर्य	14/10/2041		00/00/0000
केतु	14/02/2016	शुक्र	10/08/2021	सूर्य	13/07/2032	चंद्र	04/09/2042		00/00/0000
शुक्र	25/03/2017	सूर्य	04/11/2021	चंद्र	13/07/2033	मंगल	19/04/2043		00/00/0000
सूर्य	25/07/2017	चंद्र	26/03/2022	मंगल	26/03/2034	राहु	24/11/2044		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
15/08/1965		26/11/1966		12/09/1968		09/06/1969		20/07/1971	
26/11/1966		12/09/1968		09/06/1969		20/07/1971		07/03/1972	
	00/00/0000	बुध	27/02/1967	केतु	27/09/1968	शुक्र	15/10/1969	सूर्य	31/07/1971
	00/00/0000	केतु	06/04/1967	शुक्र	11/11/1968	सूर्य	23/11/1969	चंद्र	19/08/1971
	15/08/1965	शुक्र	25/07/1967	सूर्य	25/11/1968	चंद्र	26/01/1970	मंगल	02/09/1971
शुक्र	13/12/1965	सूर्य	26/08/1967	चंद्र	17/12/1968	मंगल	12/03/1970	राहु	07/10/1971
सूर्य	19/01/1966	चंद्र	20/10/1967	मंगल	02/01/1969	राहु	05/07/1970	गुरु	06/11/1971
चंद्र	21/03/1966	मंगल	27/11/1967	राहु	12/02/1969	गुरु	16/10/1970	शनि	13/12/1971
मंगल	03/05/1966	राहु	04/03/1968	गुरु	20/03/1969	शनि	15/02/1971	बुध	15/01/1972
राहु	21/08/1966	गुरु	31/05/1968	शनि	01/05/1969	बुध	05/06/1971	केतु	28/01/1972
गुरु	26/11/1966	शनि	12/09/1968	बुध	09/06/1969	केतु	20/07/1971	शुक्र	07/03/1972

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
07/03/1972		27/03/1973		22/12/1973		16/11/1975		25/07/1977	
27/03/1973		22/12/1973		16/11/1975		25/07/1977		04/03/1979	
चंद्र	08/04/1972	मंगल	12/04/1973	राहु	05/04/1974	गुरु	07/02/1976	बुध	16/10/1977
मंगल	01/05/1972	राहु	23/05/1973	गुरु	07/07/1974	शनि	14/05/1976	केतु	19/11/1977
राहु	27/06/1972	गुरु	28/06/1973	शनि	25/10/1974	बुध	10/08/1976	शुक्र	25/02/1978
गुरु	18/08/1972	शनि	09/08/1973	बुध	31/01/1975	केतु	15/09/1976	सूर्य	27/03/1978
शनि	18/10/1972	बुध	17/09/1973	केतु	13/03/1975	शुक्र	26/12/1976	चंद्र	14/05/1978
बुध	11/12/1972	केतु	02/10/1973	शुक्र	06/07/1975	सूर्य	26/01/1977	मंगल	18/06/1978
केतु	03/01/1973	शुक्र	16/11/1973	सूर्य	10/08/1975	चंद्र	19/03/1977	राहु	14/09/1978
शुक्र	08/03/1973	सूर्य	30/11/1973	चंद्र	07/10/1975	मंगल	24/04/1977	गुरु	01/12/1978
सूर्य	27/03/1973	चंद्र	22/12/1973	मंगल	16/11/1975	राहु	25/07/1977	शनि	04/03/1979

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
04/03/1979		31/10/1979		20/09/1981		15/04/1982		26/03/1983	
31/10/1979		20/09/1981		15/04/1982		26/03/1983		22/11/1983	
केतु	18/03/1979	शुक्र	23/02/1980	सूर्य	30/09/1981	चंद्र	14/05/1982	मंगल	09/04/1983
शुक्र	27/04/1979	सूर्य	29/03/1980	चंद्र	18/10/1981	मंगल	03/06/1982	राहु	15/05/1983
सूर्य	09/05/1979	चंद्र	25/05/1980	मंगल	30/10/1981	राहु	25/07/1982	गुरु	16/06/1983
चंद्र	29/05/1979	मंगल	04/07/1980	राहु	30/11/1981	गुरु	09/09/1982	शनि	25/07/1983
मंगल	12/06/1979	राहु	16/10/1980	गुरु	27/12/1981	शनि	02/11/1982	बुध	28/08/1983
राहु	18/07/1979	गुरु	16/01/1981	शनि	29/01/1982	बुध	21/12/1982	केतु	11/09/1983
गुरु	20/08/1979	शनि	05/05/1981	बुध	27/02/1982	केतु	10/01/1983	शुक्र	21/10/1983
शनि	27/09/1979	बुध	11/08/1981	केतु	11/03/1982	शुक्र	09/03/1983	सूर्य	02/11/1983
बुध	31/10/1979	केतु	20/09/1981	शुक्र	15/04/1982	सूर्य	26/03/1983	चंद्र	22/11/1983

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
22/11/1983		04/08/1985		07/02/1987		24/11/1988		03/03/1989	
04/08/1985		07/02/1987		24/11/1988		03/03/1989		12/12/1989	
राहु	24/02/1984	गुरु	17/10/1985	शनि	22/05/1987	केतु	29/11/1988	शुक्र	19/04/1989
गुरु	16/05/1984	शनि	12/01/1986	बुध	23/08/1987	शुक्र	16/12/1988	सूर्य	04/05/1989
शनि	23/08/1984	बुध	01/04/1986	केतु	30/09/1987	सूर्य	21/12/1988	चंद्र	27/05/1989
बुध	19/11/1984	केतु	03/05/1986	शुक्र	17/01/1988	चंद्र	29/12/1988	मंगल	13/06/1989
केतु	25/12/1984	शुक्र	03/08/1986	सूर्य	19/02/1988	मंगल	04/01/1989	राहु	26/07/1989
शुक्र	07/04/1985	सूर्य	30/08/1986	चंद्र	14/04/1988	राहु	19/01/1989	गुरु	01/09/1989
सूर्य	08/05/1985	चंद्र	15/10/1986	मंगल	22/05/1988	गुरु	01/02/1989	शनि	16/10/1989
चंद्र	29/06/1985	मंगल	16/11/1986	राहु	28/08/1988	शनि	17/02/1989	बुध	26/11/1989
मंगल	04/08/1985	राहु	07/02/1987	गुरु	24/11/1988	बुध	03/03/1989	केतु	12/12/1989

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
12/12/1989		07/03/1990		27/07/1990		04/11/1990		18/07/1991	
07/03/1990		27/07/1990		04/11/1990		18/07/1991		01/03/1992	
सूर्य	16/12/1989	चंद्र	19/03/1990	मंगल	02/08/1990	राहु	12/12/1990	गुरु	17/08/1991
चंद्र	24/12/1989	मंगल	28/03/1990	राहु	17/08/1990	गुरु	15/01/1991	शनि	22/09/1991
मंगल	29/12/1989	राहु	18/04/1990	गुरु	30/08/1990	शनि	25/02/1991	बुध	24/10/1991
राहु	10/01/1990	गुरु	07/05/1990	शनि	15/09/1990	बुध	02/04/1991	केतु	06/11/1991
गुरु	22/01/1990	शनि	29/05/1990	बुध	29/09/1990	केतु	17/04/1991	शुक्र	14/12/1991
शनि	04/02/1990	बुध	18/06/1990	केतु	05/10/1990	शुक्र	30/05/1991	सूर्य	26/12/1991
बुध	16/02/1990	केतु	27/06/1990	शुक्र	22/10/1990	सूर्य	11/06/1991	चंद्र	13/01/1992
केतु	21/02/1990	शुक्र	20/07/1990	सूर्य	27/10/1990	चंद्र	03/07/1991	मंगल	27/01/1992
शुक्र	07/03/1990	सूर्य	27/07/1990	चंद्र	04/11/1990	मंगल	18/07/1991	राहु	01/03/1992

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
01/03/1992		26/11/1992		25/07/1993		15/10/1995		14/06/1996	
26/11/1992		25/07/1993		15/10/1995		14/06/1996		25/07/1997	
शनि	13/04/1992	बुध	30/12/1992	शुक्र	07/12/1993	सूर्य	27/10/1995	चंद्र	18/07/1996
बुध	21/05/1992	केतु	13/01/1993	सूर्य	17/01/1994	चंद्र	16/11/1995	मंगल	11/08/1996
केतु	06/06/1992	शुक्र	22/02/1993	चंद्र	26/03/1994	मंगल	01/12/1995	राहु	11/10/1996
शुक्र	21/07/1992	सूर्य	06/03/1993	मंगल	12/05/1994	राहु	06/01/1996	गुरु	04/12/1996
सूर्य	03/08/1992	चंद्र	26/03/1993	राहु	11/09/1994	गुरु	08/02/1996	शनि	06/02/1997
चंद्र	26/08/1992	मंगल	10/04/1993	गुरु	28/12/1994	शनि	17/03/1996	बुध	05/04/1997
मंगल	10/09/1992	राहु	16/05/1993	शनि	06/05/1995	बुध	21/04/1996	केतु	28/04/1997
राहु	21/10/1992	गुरु	17/06/1993	बुध	29/08/1995	केतु	05/05/1996	शुक्र	05/07/1997
गुरु	26/11/1992	शनि	25/07/1993	केतु	15/10/1995	शुक्र	14/06/1996	सूर्य	25/07/1997

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध	
25/07/1997		05/05/1998		05/05/2000		13/02/2002		25/03/2004	
05/05/1998		05/05/2000		13/02/2002		25/03/2004		13/02/2006	
मंगल	11/08/1997	राहु	23/08/1998	गुरु	30/07/2000	शनि	15/06/2002	बुध	01/07/2004
राहु	22/09/1997	गुरु	28/11/1998	शनि	10/11/2000	बुध	02/10/2002	केतु	10/08/2004
गुरु	30/10/1997	शनि	24/03/1999	बुध	10/02/2001	केतु	16/11/2002	शुक्र	03/12/2004
शनि	14/12/1997	बुध	05/07/1999	केतु	20/03/2001	शुक्र	25/03/2003	सूर्य	07/01/2005
बुध	23/01/1998	केतु	17/08/1999	शुक्र	06/07/2001	सूर्य	02/05/2003	चंद्र	05/03/2005
केतु	09/02/1998	शुक्र	17/12/1999	सूर्य	08/08/2001	चंद्र	06/07/2003	मंगल	14/04/2005
शुक्र	28/03/1998	सूर्य	22/01/2000	चंद्र	01/10/2001	मंगल	20/08/2003	राहु	27/07/2005
सूर्य	12/04/1998	चंद्र	23/03/2000	मंगल	08/11/2001	राहु	13/12/2003	गुरु	27/10/2005
चंद्र	05/05/1998	मंगल	05/05/2000	राहु	13/02/2002	गुरु	25/03/2004	शनि	13/02/2006

शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
13/02/2006		24/11/2006		05/02/2007		07/06/2007		31/08/2007	
24/11/2006		05/02/2007		07/06/2007		31/08/2007		06/04/2008	
केतु	02/03/2006	सूर्य	28/11/2006	चंद्र	15/02/2007	मंगल	12/06/2007	राहु	03/10/2007
शुक्र	18/04/2006	चंद्र	04/12/2006	मंगल	22/02/2007	राहु	25/06/2007	गुरु	01/11/2007
सूर्य	02/05/2006	मंगल	08/12/2006	राहु	13/03/2007	गुरु	06/07/2007	शनि	06/12/2007
चंद्र	26/05/2006	राहु	19/12/2006	गुरु	29/03/2007	शनि	20/07/2007	बुध	06/01/2008
मंगल	11/06/2006	गुरु	29/12/2006	शनि	17/04/2007	बुध	01/08/2007	केतु	19/01/2008
राहु	24/07/2006	शनि	09/01/2007	बुध	05/05/2007	केतु	06/08/2007	शुक्र	24/02/2008
गुरु	31/08/2006	बुध	20/01/2007	केतु	12/05/2007	शुक्र	20/08/2007	सूर्य	06/03/2008
शनि	15/10/2006	केतु	24/01/2007	शुक्र	01/06/2007	सूर्य	24/08/2007	चंद्र	25/03/2008
बुध	24/11/2006	शुक्र	05/02/2007	सूर्य	07/06/2007	चंद्र	31/08/2007	मंगल	06/04/2008

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र	
06/04/2008		18/10/2008		06/06/2009		30/12/2009		26/03/2010	
18/10/2008		06/06/2009		30/12/2009		26/03/2010		24/11/2010	
गुरु	02/05/2008	शनि	24/11/2008	बुध	06/07/2009	केतु	04/01/2010	शुक्र	05/05/2010
शनि	02/06/2008	बुध	27/12/2008	केतु	18/07/2009	शुक्र	19/01/2010	सूर्य	17/05/2010
बुध	30/06/2008	केतु	09/01/2009	शुक्र	21/08/2009	सूर्य	23/01/2010	चंद्र	07/06/2010
केतु	11/07/2008	शुक्र	17/02/2009	सूर्य	01/09/2009	चंद्र	30/01/2010	मंगल	21/06/2010
शुक्र	13/08/2008	सूर्य	28/02/2009	चंद्र	18/09/2009	मंगल	04/02/2010	राहु	27/07/2010
सूर्य	22/08/2008	चंद्र	19/03/2009	मंगल	30/09/2009	राहु	17/02/2010	गुरु	29/08/2010
चंद्र	08/09/2008	मंगल	02/04/2009	राहु	31/10/2009	गुरु	28/02/2010	शनि	06/10/2010
मंगल	19/09/2008	राहु	07/05/2009	गुरु	28/11/2009	शनि	14/03/2010	बुध	10/11/2010
राहु	18/10/2008	गुरु	06/06/2009	शनि	30/12/2009	बुध	26/03/2010	केतु	24/11/2010

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	
24/11/2010	
15/06/2011	
चंद्र	11/12/2010
मंगल	23/12/2010
राहु	22/01/2011
गुरु	18/02/2011
शनि	23/03/2011
बुध	20/04/2011
केतु	02/05/2011
शुक्र	05/06/2011
सूर्य	15/06/2011

चंद्र - मंगल	
15/06/2011	
04/11/2011	
मंगल	23/06/2011
राहु	15/07/2011
गुरु	03/08/2011
शनि	25/08/2011
बुध	14/09/2011
केतु	23/09/2011
शुक्र	16/10/2011
सूर्य	23/10/2011
चंद्र	04/11/2011

चंद्र - राहु	
04/11/2011	
03/11/2012	
राहु	29/12/2011
गुरु	16/02/2012
शनि	13/04/2012
बुध	04/06/2012
केतु	26/06/2012
शुक्र	25/08/2012
सूर्य	13/09/2012
चंद्र	13/10/2012
मंगल	03/11/2012

चंद्र - गुरु	
03/11/2012	
24/09/2013	
गुरु	17/12/2012
शनि	06/02/2013
बुध	24/03/2013
केतु	12/04/2013
शुक्र	05/06/2013
सूर्य	21/06/2013
चंद्र	18/07/2013
मंगल	06/08/2013
राहु	24/09/2013

चंद्र - शनि	
24/09/2013	
15/10/2014	
शनि	24/11/2013
बुध	18/01/2014
केतु	09/02/2014
शुक्र	14/04/2014
सूर्य	04/05/2014
चंद्र	05/06/2014
मंगल	27/06/2014
राहु	24/08/2014
गुरु	15/10/2014

चंद्र - बुध	
15/10/2014	
25/09/2015	
बुध	02/12/2014
केतु	23/12/2014
शुक्र	18/02/2015
सूर्य	07/03/2015
चंद्र	05/04/2015
मंगल	25/04/2015
राहु	16/06/2015
गुरु	01/08/2015
शनि	25/09/2015

चंद्र - केतु	
25/09/2015	
14/02/2016	
केतु	03/10/2015
शुक्र	27/10/2015
सूर्य	03/11/2015
चंद्र	14/11/2015
मंगल	23/11/2015
राहु	14/12/2015
गुरु	02/01/2016
शनि	24/01/2016
बुध	14/02/2016

चंद्र - शुक्र	
14/02/2016	
25/03/2017	
शुक्र	21/04/2016
सूर्य	12/05/2016
चंद्र	14/06/2016
मंगल	08/07/2016
राहु	07/09/2016
गुरु	31/10/2016
शनि	03/01/2017
बुध	02/03/2017
केतु	25/03/2017

चंद्र - सूर्य	
25/03/2017	
25/07/2017	
सूर्य	01/04/2017
चंद्र	11/04/2017
मंगल	18/04/2017
राहु	06/05/2017
गुरु	22/05/2017
शनि	11/06/2017
बुध	28/06/2017
केतु	05/07/2017
शुक्र	25/07/2017

मंगल - मंगल	
25/07/2017	
02/11/2017	
मंगल	31/07/2017
राहु	15/08/2017
गुरु	28/08/2017
शनि	13/09/2017
बुध	27/09/2017
केतु	03/10/2017
शुक्र	19/10/2017
सूर्य	24/10/2017
चंद्र	02/11/2017

मंगल - राहु	
02/11/2017	
15/07/2018	
राहु	10/12/2017
गुरु	13/01/2018
शनि	23/02/2018
बुध	31/03/2018
केतु	15/04/2018
शुक्र	27/05/2018
सूर्य	09/06/2018
चंद्र	30/06/2018
मंगल	15/07/2018

मंगल - गुरु	
15/07/2018	
28/02/2019	
गुरु	15/08/2018
शनि	20/09/2018
बुध	22/10/2018
केतु	04/11/2018
शुक्र	12/12/2018
सूर्य	23/12/2018
चंद्र	11/01/2019
मंगल	24/01/2019
राहु	28/02/2019

मंगल - शनि	
28/02/2019	
24/11/2019	
शनि	11/04/2019
बुध	20/05/2019
केतु	04/06/2019
शुक्र	19/07/2019
सूर्य	02/08/2019
चंद्र	24/08/2019
मंगल	09/09/2019
राहु	19/10/2019
गुरु	24/11/2019

मंगल - बुध	
24/11/2019	
23/07/2020	
बुध	29/12/2019
केतु	12/01/2020
शुक्र	21/02/2020
सूर्य	04/03/2020
चंद्र	24/03/2020
मंगल	07/04/2020
राहु	13/05/2020
गुरु	15/06/2020
शनि	23/07/2020

मंगल - केतु	
23/07/2020	
30/10/2020	
केतु	29/07/2020
शुक्र	14/08/2020
सूर्य	19/08/2020
चंद्र	28/08/2020
मंगल	02/09/2020
राहु	17/09/2020
गुरु	01/10/2020
शनि	16/10/2020
बुध	30/10/2020

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु	
30/10/2020		10/08/2021		04/11/2021		26/03/2022		12/01/2024	
10/08/2021		04/11/2021		26/03/2022		12/01/2024		19/08/2025	
शुक्र	17/12/2020	सूर्य	15/08/2021	चंद्र	15/11/2021	राहु	02/07/2022	गुरु	30/03/2024
सूर्य	31/12/2020	चंद्र	22/08/2021	मंगल	24/11/2021	गुरु	28/09/2022	शनि	01/07/2024
चंद्र	24/01/2021	मंगल	27/08/2021	राहु	15/12/2021	शनि	10/01/2023	बुध	21/09/2024
मंगल	09/02/2021	राहु	09/09/2021	गुरु	03/01/2022	बुध	13/04/2023	केतु	25/10/2024
राहु	24/03/2021	गुरु	20/09/2021	शनि	26/01/2022	केतु	22/05/2023	शुक्र	31/01/2025
गुरु	01/05/2021	शनि	03/10/2021	बुध	15/02/2022	शुक्र	08/09/2023	सूर्य	01/03/2025
शनि	15/06/2021	बुध	15/10/2021	केतु	23/02/2022	सूर्य	11/10/2023	चंद्र	19/04/2025
बुध	25/07/2021	केतु	20/10/2021	शुक्र	19/03/2022	चंद्र	05/12/2023	मंगल	23/05/2025
केतु	10/08/2021	शुक्र	04/11/2021	सूर्य	26/03/2022	मंगल	12/01/2024	राहु	19/08/2025

राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य	
19/08/2025		14/07/2027		25/03/2029		06/12/2029		07/12/2031	
14/07/2027		25/03/2029		06/12/2029		07/12/2031		13/07/2032	
शनि	06/12/2025	बुध	09/10/2027	केतु	09/04/2029	शुक्र	07/04/2030	सूर्य	18/12/2031
बुध	15/03/2026	केतु	15/11/2027	शुक्र	22/05/2029	सूर्य	13/05/2030	चंद्र	05/01/2032
केतु	24/04/2026	शुक्र	26/02/2028	सूर्य	04/06/2029	चंद्र	13/07/2030	मंगल	18/01/2032
शुक्र	18/08/2026	सूर्य	28/03/2028	चंद्र	25/06/2029	मंगल	25/08/2030	राहु	19/02/2032
सूर्य	22/09/2026	चंद्र	19/05/2028	मंगल	10/07/2029	राहु	12/12/2030	गुरु	20/03/2032
चंद्र	18/11/2026	मंगल	24/06/2028	राहु	17/08/2029	गुरु	20/03/2031	शनि	23/04/2032
मंगल	29/12/2026	राहु	25/09/2028	गुरु	20/09/2029	शनि	14/07/2031	बुध	24/05/2032
राहु	12/04/2027	गुरु	17/12/2028	शनि	31/10/2029	बुध	25/10/2031	केतु	06/06/2032
गुरु	14/07/2027	शनि	25/03/2029	बुध	06/12/2029	केतु	07/12/2031	शुक्र	13/07/2032

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
13/07/2032		13/07/2033		26/03/2034		27/08/2035		05/05/2037	
13/07/2033		26/03/2034		27/08/2035		05/05/2037		08/11/2038	
चंद्र	12/08/2032	मंगल	28/07/2033	गुरु	03/06/2034	शनि	03/12/2035	बुध	22/07/2037
मंगल	03/09/2032	राहु	04/09/2033	शनि	24/08/2034	बुध	28/02/2036	केतु	23/08/2037
राहु	27/10/2032	गुरु	08/10/2033	बुध	06/11/2034	केतु	04/04/2036	शुक्र	23/11/2037
गुरु	15/12/2032	शनि	18/11/2033	केतु	06/12/2034	शुक्र	16/07/2036	सूर्य	21/12/2037
शनि	11/02/2033	बुध	24/12/2033	शुक्र	03/03/2035	सूर्य	16/08/2036	चंद्र	05/02/2038
बुध	04/04/2033	केतु	08/01/2034	सूर्य	29/03/2035	चंद्र	06/10/2036	मंगल	09/03/2038
केतु	25/04/2033	शुक्र	20/02/2034	चंद्र	11/05/2035	मंगल	11/11/2036	राहु	31/05/2038
शुक्र	25/06/2033	सूर्य	04/03/2034	मंगल	10/06/2035	राहु	12/02/2037	गुरु	13/08/2038
सूर्य	13/07/2033	चंद्र	26/03/2034	राहु	27/08/2035	गुरु	05/05/2037	शनि	08/11/2038

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 20 वर्ष 8 मास 12 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
15/08/1965		28/04/1986		27/04/1992		28/04/2007		28/04/2015	
28/04/1986		27/04/1992		28/04/2007		28/04/2015		27/04/2032	
शुक्र	28/05/1969	सूर्य	28/08/1986	चंद्र	28/05/1994	मंगल	01/12/2007	बुध	30/12/2017
सूर्य	28/07/1970	चंद्र	28/06/1987	मंगल	08/07/1995	बुध	04/03/2009	शनि	28/07/2019
चंद्र	27/06/1973	मंगल	07/12/1987	बुध	16/11/1997	शनि	30/11/2009	गुरु	25/07/2022
मंगल	17/01/1975	बुध	16/11/1988	शनि	08/04/1999	गुरु	28/04/2011	राहु	14/06/2024
बुध	08/05/1978	शनि	07/06/1989	गुरु	27/11/2001	राहु	18/03/2012	शुक्र	04/10/2027
शनि	17/04/1980	गुरु	28/06/1990	राहु	28/07/2003	शुक्र	07/10/2013	सूर्य	13/09/2028
गुरु	28/12/1983	राहु	26/02/1991	शुक्र	28/06/2006	सूर्य	18/03/2014	चंद्र	23/01/2031
राहु	28/04/1986	शुक्र	27/04/1992	सूर्य	28/04/2007	चंद्र	28/04/2015	मंगल	27/04/2032

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
27/04/2032		28/04/2042		28/04/2061		28/04/2073	
28/04/2042		28/04/2061		28/04/2073		00/00/0000	
शनि	01/04/2033	गुरु	31/08/2045	राहु	28/08/2062	शुक्र	15/08/2073
गुरु	03/01/2035	राहु	11/10/2047	शुक्र	27/12/2064		00/00/0000
राहु	13/02/2036	शुक्र	21/06/2051	सूर्य	27/08/2065		00/00/0000
शुक्र	23/01/2038	सूर्य	11/07/2052	चंद्र	28/04/2067		00/00/0000
सूर्य	14/08/2038	चंद्र	02/03/2055	मंगल	18/03/2068		00/00/0000
चंद्र	03/01/2040	मंगल	28/07/2056	बुध	06/02/2070		00/00/0000
मंगल	30/09/2040	बुध	25/07/2059	शनि	18/03/2071		00/00/0000
बुध	28/04/2042	शनि	28/04/2061	गुरु	28/04/2073		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
15/08/1965		28/05/1969		28/07/1970		27/06/1973		17/01/1975	
28/05/1969		28/07/1970		27/06/1973		17/01/1975		08/05/1978	
शुक्र	12/02/1966	सूर्य	21/06/1969	चंद्र	23/12/1970	मंगल	09/08/1973	बुध	26/07/1975
सूर्य	05/05/1966	चंद्र	19/08/1969	मंगल	12/03/1971	बुध	06/11/1973	शनि	14/11/1975
चंद्र	29/11/1966	मंगल	19/09/1969	बुध	27/08/1971	शनि	29/12/1973	गुरु	14/06/1976
मंगल	19/03/1967	बुध	26/11/1969	शनि	03/12/1971	गुरु	08/04/1974	राहु	26/10/1976
बुध	09/11/1967	शनि	04/01/1970	गुरु	08/06/1972	राहु	10/06/1974	शुक्र	18/06/1977
शनि	26/03/1968	गुरु	20/03/1970	राहु	04/10/1972	शुक्र	28/09/1974	सूर्य	24/08/1977
गुरु	13/12/1968	राहु	06/05/1970	शुक्र	29/04/1973	सूर्य	30/10/1974	चंद्र	08/02/1978
राहु	28/05/1969	शुक्र	28/07/1970	सूर्य	27/06/1973	चंद्र	17/01/1975	मंगल	08/05/1978

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
08/05/1978		17/04/1980		28/12/1983		28/04/1986		28/08/1986	
17/04/1980		28/12/1983		28/04/1986		28/08/1986		28/06/1987	
शनि	13/07/1978	गुरु	11/12/1980	राहु	31/03/1984	सूर्य	05/05/1986	चंद्र	09/10/1986
गुरु	15/11/1978	राहु	10/05/1981	शुक्र	13/09/1984	चंद्र	22/05/1986	मंगल	31/10/1986
राहु	02/02/1979	शुक्र	27/01/1982	सूर्य	30/10/1984	मंगल	31/05/1986	बुध	18/12/1986
शुक्र	20/06/1979	सूर्य	12/04/1982	चंद्र	26/02/1985	बुध	19/06/1986	शनि	15/01/1987
सूर्य	29/07/1979	चंद्र	16/10/1982	मंगल	30/04/1985	शनि	30/06/1986	गुरु	10/03/1987
चंद्र	05/11/1979	मंगल	24/01/1983	बुध	11/09/1985	गुरु	21/07/1986	राहु	13/04/1987
मंगल	27/12/1979	बुध	25/08/1983	शनि	29/11/1985	राहु	04/08/1986	शुक्र	11/06/1987
बुध	17/04/1980	शनि	28/12/1983	गुरु	28/04/1986	शुक्र	28/08/1986	सूर्य	28/06/1987

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
28/06/1987		07/12/1987		16/11/1988		07/06/1989		28/06/1990	
07/12/1987		16/11/1988		07/06/1989		28/06/1990		26/02/1991	
मंगल	10/07/1987	बुध	31/01/1988	शनि	05/12/1988	गुरु	14/08/1989	राहु	25/07/1990
बुध	05/08/1987	शनि	03/03/1988	गुरु	10/01/1989	राहु	26/09/1989	शुक्र	10/09/1990
शनि	20/08/1987	गुरु	02/05/1988	राहु	01/02/1989	शुक्र	10/12/1989	सूर्य	24/09/1990
गुरु	17/09/1987	राहु	10/06/1988	शुक्र	13/03/1989	सूर्य	31/12/1989	चंद्र	27/10/1990
राहु	05/10/1987	शुक्र	16/08/1988	सूर्य	24/03/1989	चंद्र	23/02/1990	मंगल	14/11/1990
शुक्र	06/11/1987	सूर्य	04/09/1988	चंद्र	21/04/1989	मंगल	23/03/1990	बुध	23/12/1990
सूर्य	15/11/1987	चंद्र	22/10/1988	मंगल	06/05/1989	बुध	23/05/1990	शनि	14/01/1991
चंद्र	07/12/1987	मंगल	16/11/1988	बुध	07/06/1989	शनि	28/06/1990	गुरु	26/02/1991

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
26/02/1991		27/04/1992		28/05/1994		08/07/1995		16/11/1997	
27/04/1992		28/05/1994		08/07/1995		16/11/1997		08/04/1999	
शुक्र	20/05/1991	चंद्र	11/08/1992	मंगल	27/06/1994	बुध	21/11/1995	शनि	02/01/1998
सूर्य	13/06/1991	मंगल	06/10/1992	बुध	30/08/1994	शनि	09/02/1996	गुरु	02/04/1998
चंद्र	11/08/1991	बुध	03/02/1993	शनि	07/10/1994	गुरु	09/07/1996	राहु	28/05/1998
मंगल	11/09/1991	शनि	15/04/1993	गुरु	17/12/1994	राहु	13/10/1996	शुक्र	04/09/1998
बुध	18/11/1991	गुरु	26/08/1993	राहु	31/01/1995	शुक्र	30/03/1997	सूर्य	02/10/1998
शनि	27/12/1991	राहु	19/11/1993	शुक्र	20/04/1995	सूर्य	17/05/1997	चंद्र	11/12/1998
गुरु	11/03/1992	शुक्र	16/04/1994	सूर्य	13/05/1995	चंद्र	14/09/1997	मंगल	18/01/1999
राहु	27/04/1992	सूर्य	28/05/1994	चंद्र	08/07/1995	मंगल	16/11/1997	बुध	08/04/1999

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
08/04/1999		27/11/2001		28/07/2003		28/06/2006		28/04/2007	
27/11/2001		28/07/2003		28/06/2006		28/04/2007		01/12/2007	
गुरु	24/09/1999	राहु	02/02/2002	शुक्र	21/02/2004	सूर्य	15/07/2006	मंगल	14/05/2007
राहु	09/01/2000	शुक्र	01/06/2002	सूर्य	20/04/2004	चंद्र	26/08/2006	बुध	17/06/2007
शुक्र	15/07/2000	सूर्य	04/07/2002	चंद्र	15/09/2004	मंगल	17/09/2006	शनि	07/07/2007
सूर्य	06/09/2000	चंद्र	27/09/2002	मंगल	03/12/2004	बुध	04/11/2006	गुरु	14/08/2007
चंद्र	18/01/2001	मंगल	11/11/2002	बुध	19/05/2005	शनि	03/12/2006	राहु	07/09/2007
मंगल	31/03/2001	बुध	15/02/2003	शनि	26/08/2005	गुरु	25/01/2007	शुक्र	19/10/2007
बुध	29/08/2001	शनि	12/04/2003	गुरु	01/03/2006	राहु	28/02/2007	सूर्य	31/10/2007
शनि	27/11/2001	गुरु	28/07/2003	राहु	28/06/2006	शुक्र	28/04/2007	चंद्र	01/12/2007

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
01/12/2007		04/03/2009		30/11/2009		28/04/2011		18/03/2012	
04/03/2009		30/11/2009		28/04/2011		18/03/2012		07/10/2013	
बुध	11/02/2008	शनि	30/03/2009	गुरु	28/02/2010	राहु	03/06/2011	शुक्र	06/07/2012
शनि	25/03/2008	गुरु	16/05/2009	राहु	27/04/2010	शुक्र	05/08/2011	सूर्य	07/08/2012
गुरु	13/06/2008	राहु	15/06/2009	शुक्र	05/08/2010	सूर्य	23/08/2011	चंद्र	25/10/2012
राहु	04/08/2008	शुक्र	07/08/2009	सूर्य	02/09/2010	चंद्र	07/10/2011	मंगल	06/12/2012
शुक्र	01/11/2008	सूर्य	22/08/2009	चंद्र	12/11/2010	मंगल	31/10/2011	बुध	05/03/2013
सूर्य	27/11/2008	चंद्र	28/09/2009	मंगल	21/12/2010	बुध	22/12/2011	शनि	27/04/2013
चंद्र	29/01/2009	मंगल	18/10/2009	बुध	11/03/2011	शनि	21/01/2012	गुरु	05/08/2013
मंगल	04/03/2009	बुध	30/11/2009	शनि	28/04/2011	गुरु	18/03/2012	राहु	07/10/2013

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु	
07/10/2013		18/03/2014		28/04/2015		30/12/2017		28/07/2019	
18/03/2014		28/04/2015		30/12/2017		28/07/2019		25/07/2022	
सूर्य	16/10/2013	चंद्र	14/05/2014	बुध	29/09/2015	शनि	22/02/2018	गुरु	06/02/2020
चंद्र	07/11/2013	मंगल	13/06/2014	शनि	28/12/2015	गुरु	03/06/2018	राहु	06/06/2020
मंगल	20/11/2013	बुध	16/08/2014	गुरु	17/06/2016	राहु	06/08/2018	शुक्र	04/01/2021
बुध	15/12/2013	शनि	22/09/2014	राहु	04/10/2016	शुक्र	26/11/2018	सूर्य	06/03/2021
शनि	30/12/2013	गुरु	03/12/2014	शुक्र	12/04/2017	सूर्य	27/12/2018	चंद्र	05/08/2021
गुरु	28/01/2014	राहु	17/01/2015	सूर्य	05/06/2017	चंद्र	17/03/2019	मंगल	25/10/2021
राहु	15/02/2014	शुक्र	06/04/2015	चंद्र	19/10/2017	मंगल	29/04/2019	बुध	15/04/2022
शुक्र	18/03/2014	सूर्य	28/04/2015	मंगल	30/12/2017	बुध	28/07/2019	शनि	25/07/2022

बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
25/07/2022		14/06/2024		04/10/2027		13/09/2028		23/01/2031	
14/06/2024		04/10/2027		13/09/2028		23/01/2031		27/04/2032	
राहु	09/10/2022	शुक्र	03/02/2025	सूर्य	23/10/2027	चंद्र	11/01/2029	मंगल	26/02/2031
शुक्र	21/02/2023	सूर्य	12/04/2025	चंद्र	10/12/2027	मंगल	16/03/2029	बुध	10/05/2031
सूर्य	31/03/2023	चंद्र	26/09/2025	मंगल	05/01/2028	बुध	29/07/2029	शनि	21/06/2031
चंद्र	05/07/2023	मंगल	25/12/2025	बुध	28/02/2028	शनि	17/10/2029	गुरु	10/09/2031
मंगल	25/08/2023	बुध	03/07/2026	शनि	31/03/2028	गुरु	18/03/2030	राहु	31/10/2031
बुध	11/12/2023	शनि	22/10/2026	गुरु	31/05/2028	राहु	22/06/2030	शुक्र	29/01/2032
शनि	13/02/2024	गुरु	23/05/2027	राहु	08/07/2028	शुक्र	06/12/2030	सूर्य	23/02/2032
गुरु	14/06/2024	राहु	04/10/2027	शुक्र	13/09/2028	सूर्य	23/01/2031	चंद्र	27/04/2032

शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
27/04/2032		01/04/2033		03/01/2035		13/02/2036		23/01/2038	
01/04/2033		03/01/2035		13/02/2036		23/01/2038		14/08/2038	
शनि	29/05/2032	गुरु	23/07/2033	राहु	17/02/2035	शुक्र	30/06/2036	सूर्य	03/02/2038
गुरु	27/07/2032	राहु	02/10/2033	शुक्र	07/05/2035	सूर्य	08/08/2036	चंद्र	04/03/2038
राहु	03/09/2032	शुक्र	04/02/2034	सूर्य	30/05/2035	चंद्र	15/11/2036	मंगल	19/03/2038
शुक्र	07/11/2032	सूर्य	12/03/2034	चंद्र	25/07/2035	मंगल	07/01/2037	बुध	20/04/2038
सूर्य	26/11/2032	चंद्र	09/06/2034	मंगल	24/08/2035	बुध	29/04/2037	शनि	08/05/2038
चंद्र	12/01/2033	मंगल	26/07/2034	बुध	27/10/2035	शनि	03/07/2037	गुरु	13/06/2038
मंगल	06/02/2033	बुध	05/11/2034	शनि	04/12/2035	गुरु	05/11/2037	राहु	06/07/2038
बुध	01/04/2033	शनि	03/01/2035	गुरु	13/02/2036	राहु	23/01/2038	शुक्र	14/08/2038

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
14/08/2038		03/01/2040		30/09/2040		28/04/2042		31/08/2045	
03/01/2040		30/09/2040		28/04/2042		31/08/2045		11/10/2047	
चंद्र	24/10/2038	मंगल	23/01/2040	बुध	29/12/2040	गुरु	29/11/2042	राहु	24/11/2045
मंगल	30/11/2038	बुध	06/03/2040	शनि	21/02/2041	राहु	13/04/2043	शुक्र	23/04/2046
बुध	18/02/2039	शनि	31/03/2040	गुरु	02/06/2041	शुक्र	07/12/2043	सूर्य	05/06/2046
शनि	06/04/2039	गुरु	18/05/2040	राहु	05/08/2041	सूर्य	12/02/2044	चंद्र	20/09/2046
गुरु	04/07/2039	राहु	17/06/2040	शुक्र	24/11/2041	चंद्र	31/07/2044	मंगल	16/11/2046
राहु	30/08/2039	शुक्र	08/08/2040	सूर्य	26/12/2041	मंगल	29/10/2044	बुध	18/03/2047
शुक्र	06/12/2039	सूर्य	23/08/2040	चंद्र	16/03/2042	बुध	10/05/2045	शनि	28/05/2047
सूर्य	03/01/2040	चंद्र	30/09/2040	मंगल	28/04/2042	शनि	31/08/2045	गुरु	11/10/2047

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
11/10/2047		21/06/2051		11/07/2052		02/03/2055		28/07/2056	
21/06/2051		11/07/2052		02/03/2055		28/07/2056		25/07/2059	
शुक्र	29/06/2048	सूर्य	13/07/2051	चंद्र	22/11/2052	मंगल	09/04/2055	बुध	16/01/2057
सूर्य	12/09/2048	चंद्र	04/09/2051	मंगल	01/02/2053	बुध	29/06/2055	शनि	27/04/2057
चंद्र	19/03/2049	मंगल	03/10/2051	बुध	03/07/2053	शनि	15/08/2055	गुरु	05/11/2057
मंगल	27/06/2049	बुध	02/12/2051	शनि	30/09/2053	गुरु	14/11/2055	राहु	06/03/2058
बुध	25/01/2050	शनि	07/01/2052	गुरु	19/03/2054	राहु	10/01/2056	शुक्र	05/10/2058
शनि	30/05/2050	गुरु	15/03/2052	राहु	04/07/2054	शुक्र	19/04/2056	सूर्य	04/12/2058
गुरु	22/01/2051	राहु	27/04/2052	शुक्र	07/01/2055	सूर्य	17/05/2056	चंद्र	05/05/2059
राहु	21/06/2051	शुक्र	11/07/2052	सूर्य	02/03/2055	चंद्र	28/07/2056	मंगल	25/07/2059

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
25/07/2059		28/04/2061		28/08/2062		27/12/2064		27/08/2065	
28/04/2061		28/08/2062		27/12/2064		27/08/2065		28/04/2067	
शनि	23/09/2059	राहु	21/06/2061	शुक्र	09/02/2063	सूर्य	09/01/2065	चंद्र	20/11/2065
गुरु	14/01/2060	शुक्र	23/09/2061	सूर्य	29/03/2063	चंद्र	12/02/2065	मंगल	04/01/2066
राहु	25/03/2060	सूर्य	20/10/2061	चंद्र	25/07/2063	मंगल	02/03/2065	बुध	10/04/2066
शुक्र	28/07/2060	चंद्र	27/12/2061	मंगल	26/09/2063	बुध	10/04/2065	शनि	05/06/2066
सूर्य	02/09/2060	मंगल	01/02/2062	बुध	07/02/2064	शनि	02/05/2065	गुरु	20/09/2066
चंद्र	30/11/2060	बुध	19/04/2062	शनि	26/04/2064	गुरु	14/06/2065	राहु	27/11/2066
मंगल	16/01/2061	शनि	03/06/2062	गुरु	23/09/2064	राहु	11/07/2065	शुक्र	25/03/2067
बुध	28/04/2061	गुरु	28/08/2062	राहु	27/12/2064	शुक्र	27/08/2065	सूर्य	28/04/2067

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 4 वर्ष 8 मास 17 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
15/08/1965		03/05/1970		03/05/1976		03/05/1983		03/05/1991	
03/05/1970		03/05/1976		03/05/1983		03/05/1991		03/05/1992	
भद्रि	11/01/1966	उल्क	03/05/1971	सिद्ध	12/09/1977	संक	11/02/1985	मंग	13/05/1991
उल्क	12/11/1966	सिद्ध	02/07/1972	संक	03/04/1979	मंग	03/05/1985	पिंग	03/06/1991
सिद्ध	02/11/1967	संक	01/11/1973	मंग	13/06/1979	पिंग	12/10/1985	धांय	03/07/1991
संक	12/12/1968	मंग	01/01/1974	पिंग	02/11/1979	धांय	13/06/1986	भ्राम	13/08/1991
मंग	31/01/1969	पिंग	03/05/1974	धांय	02/06/1980	भ्राम	03/05/1987	भद्रि	02/10/1991
पिंग	13/05/1969	धांय	02/11/1974	भ्राम	13/03/1981	भद्रि	12/06/1988	उल्क	02/12/1991
धांय	12/10/1969	भ्राम	03/07/1975	भद्रि	03/03/1982	उल्क	12/10/1989	सिद्ध	11/02/1992
भ्राम	03/05/1970	भद्रि	03/05/1976	उल्क	03/05/1983	सिद्ध	03/05/1991	संक	03/05/1992

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
03/05/1992		03/05/1994		03/05/1997		03/05/2001		03/05/2006	
03/05/1994		03/05/1997		03/05/2001		03/05/2006		03/05/2012	
पिंग	12/06/1992	धांय	02/08/1994	भ्राम	12/10/1997	भद्रि	11/01/2002	उल्क	03/05/2007
धांय	12/08/1992	भ्राम	02/12/1994	भद्रि	03/05/1998	उल्क	12/11/2002	सिद्ध	02/07/2008
भ्राम	01/11/1992	भद्रि	03/05/1995	उल्क	02/01/1999	सिद्ध	02/11/2003	संक	01/11/2009
भद्रि	11/02/1993	उल्क	02/11/1995	सिद्ध	13/10/1999	संक	12/12/2004	मंग	01/01/2010
उल्क	12/06/1993	सिद्ध	02/06/1996	संक	01/09/2000	मंग	31/01/2005	पिंग	03/05/2010
सिद्ध	01/11/1993	संक	31/01/1997	मंग	12/10/2000	पिंग	13/05/2005	धांय	02/11/2010
संक	13/04/1994	मंग	03/03/1997	पिंग	01/01/2001	धांय	12/10/2005	भ्राम	03/07/2011
मंग	03/05/1994	पिंग	03/05/1997	धांय	03/05/2001	भ्राम	03/05/2006	भद्रि	03/05/2012

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
03/05/2012		03/05/2019		03/05/2027		03/05/2028		03/05/2030	
03/05/2019		03/05/2027		03/05/2028		03/05/2030		03/05/2033	
सिद्ध	12/09/2013	संक	11/02/2021	मंग	13/05/2027	पिंग	12/06/2028	धांय	02/08/2030
संक	03/04/2015	मंग	03/05/2021	पिंग	03/06/2027	धांय	12/08/2028	भ्राम	02/12/2030
मंग	13/06/2015	पिंग	12/10/2021	धांय	03/07/2027	भ्राम	01/11/2028	भद्रि	03/05/2031
पिंग	02/11/2015	धांय	13/06/2022	भ्राम	13/08/2027	भद्रि	11/02/2029	उल्क	02/11/2031
धांय	02/06/2016	भ्राम	03/05/2023	भद्रि	02/10/2027	उल्क	12/06/2029	सिद्ध	02/06/2032
भ्राम	13/03/2017	भद्रि	12/06/2024	उल्क	02/12/2027	सिद्ध	01/11/2029	संक	31/01/2033
भद्रि	03/03/2018	उल्क	12/10/2025	सिद्ध	11/02/2028	संक	13/04/2030	मंग	03/03/2033
उल्क	03/05/2019	सिद्ध	03/05/2027	संक	03/05/2028	मंग	03/05/2030	पिंग	03/05/2033

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
03/05/2033		03/05/2037		03/05/2042		03/05/2048		03/05/2055	
03/05/2037		03/05/2042		03/05/2048		03/05/2055		03/05/2063	
भ्राम	12/10/2033	भद्रि	11/01/2038	उल्क	03/05/2043	सिद्ध	12/09/2049	संक	11/02/2057
भद्रि	03/05/2034	उल्क	12/11/2038	सिद्ध	02/07/2044	संक	03/04/2051	मंग	03/05/2057
उल्क	02/01/2035	सिद्ध	02/11/2039	संक	01/11/2045	मंग	13/06/2051	पिंग	12/10/2057
सिद्ध	13/10/2035	संक	12/12/2040	मंग	01/01/2046	पिंग	02/11/2051	धांय	13/06/2058
संक	01/09/2036	मंग	31/01/2041	पिंग	03/05/2046	धांय	02/06/2052	भ्राम	03/05/2059
मंग	12/10/2036	पिंग	13/05/2041	धांय	02/11/2046	भ्राम	13/03/2053	भद्रि	12/06/2060
पिंग	01/01/2037	धांय	12/10/2041	भ्राम	03/07/2047	भद्रि	03/03/2054	उल्क	12/10/2061
धांय	03/05/2037	भ्राम	03/05/2042	भद्रि	03/05/2048	उल्क	03/05/2055	सिद्ध	03/05/2063

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
03/05/2063		03/05/2064		03/05/2066		03/05/2069		03/05/2073	
03/05/2064		03/05/2066		03/05/2069		03/05/2073		00/00/0000	
मंग	13/05/2063	पिंग	12/06/2064	धांय	02/08/2066	भ्राम	12/10/2069	भद्रि	15/08/2073
पिंग	03/06/2063	धांय	12/08/2064	भ्राम	02/12/2066	भद्रि	03/05/2070		00/00/0000
धांय	03/07/2063	भ्राम	01/11/2064	भद्रि	03/05/2067	उल्क	02/01/2071		00/00/0000
भ्राम	13/08/2063	भद्रि	11/02/2065	उल्क	02/11/2067	सिद्ध	13/10/2071		00/00/0000
भद्रि	02/10/2063	उल्क	12/06/2065	सिद्ध	02/06/2068	संक	01/09/2072		00/00/0000
उल्क	02/12/2063	सिद्ध	01/11/2065	संक	31/01/2069	मंग	12/10/2072		00/00/0000
सिद्ध	11/02/2064	संक	13/04/2066	मंग	03/03/2069	पिंग	01/01/2073		00/00/0000
संक	03/05/2064	मंग	03/05/2066	पिंग	03/05/2069	धांय	03/05/2073		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय		मंग - भ्राम	
12/10/2025		03/05/2027		13/05/2027		03/06/2027		03/07/2027	
03/05/2027		13/05/2027		03/06/2027		03/07/2027		13/08/2027	
सिद्ध	31/01/2026	मंग	04/05/2027	पिंग	15/05/2027	धांय	05/06/2027	भ्राम	08/07/2027
संक	06/06/2026	पिंग	04/05/2027	धांय	16/05/2027	भ्राम	09/06/2027	भद्रि	13/07/2027
मंग	22/06/2026	धांय	05/05/2027	भ्राम	19/05/2027	भद्रि	13/06/2027	उल्क	20/07/2027
पिंग	23/07/2026	भ्राम	06/05/2027	भद्रि	21/05/2027	उल्क	18/06/2027	सिद्ध	28/07/2027
धांय	09/09/2026	भद्रि	08/05/2027	उल्क	25/05/2027	सिद्ध	24/06/2027	संक	06/08/2027
भ्राम	11/11/2026	उल्क	09/05/2027	सिद्ध	29/05/2027	संक	01/07/2027	मंग	07/08/2027
भद्रि	29/01/2027	सिद्ध	11/05/2027	संक	02/06/2027	मंग	01/07/2027	पिंग	09/08/2027
उल्क	03/05/2027	संक	13/05/2027	मंग	03/06/2027	पिंग	03/07/2027	धांय	13/08/2027

मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक		पिंग - पिंग	
13/08/2027		02/10/2027		02/12/2027		11/02/2028		03/05/2028	
02/10/2027		02/12/2027		11/02/2028		03/05/2028		12/06/2028	
भद्रि	20/08/2027	उल्क	13/10/2027	सिद्ध	16/12/2027	संक	29/02/2028	पिंग	05/05/2028
उल्क	28/08/2027	सिद्ध	24/10/2027	संक	01/01/2028	मंग	03/03/2028	धांय	08/05/2028
सिद्ध	07/09/2027	संक	07/11/2027	मंग	03/01/2028	पिंग	07/03/2028	भ्राम	13/05/2028
संक	18/09/2027	मंग	09/11/2027	पिंग	07/01/2028	धांय	14/03/2028	भद्रि	18/05/2028
मंग	20/09/2027	पिंग	12/11/2027	धांय	13/01/2028	भ्राम	23/03/2028	उल्क	25/05/2028
पिंग	23/09/2027	धांय	17/11/2027	भ्राम	21/01/2028	भद्रि	03/04/2028	सिद्ध	02/06/2028
धांय	27/09/2027	भ्राम	24/11/2027	भद्रि	31/01/2028	उल्क	17/04/2028	संक	11/06/2028
भ्राम	02/10/2027	भद्रि	02/12/2027	उल्क	11/02/2028	सिद्ध	03/05/2028	मंग	12/06/2028

पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि		पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध	
12/06/2028		12/08/2028		01/11/2028		11/02/2029		12/06/2029	
12/08/2028		01/11/2028		11/02/2029		12/06/2029		01/11/2029	
धांय	17/06/2028	भ्राम	21/08/2028	भद्रि	15/11/2028	उल्क	03/03/2029	सिद्ध	10/07/2029
भ्राम	24/06/2028	भद्रि	01/09/2028	उल्क	02/12/2028	सिद्ध	27/03/2029	संक	11/08/2029
भद्रि	02/07/2028	उल्क	15/09/2028	सिद्ध	22/12/2028	संक	23/04/2029	मंग	15/08/2029
उल्क	13/07/2028	सिद्ध	01/10/2028	संक	13/01/2029	मंग	26/04/2029	पिंग	22/08/2029
सिद्ध	24/07/2028	संक	19/10/2028	मंग	16/01/2029	पिंग	03/05/2029	धांय	03/09/2029
संक	07/08/2028	मंग	21/10/2028	पिंग	22/01/2029	धांय	13/05/2029	भ्राम	19/09/2029
मंग	09/08/2028	पिंग	25/10/2028	धांय	30/01/2029	भ्राम	26/05/2029	भद्रि	09/10/2029
पिंग	12/08/2028	धांय	01/11/2028	भ्राम	11/02/2029	भद्रि	12/06/2029	उल्क	01/11/2029

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय		धांय - भ्राम		धांय - भद्रि	
01/11/2029		13/04/2030		03/05/2030		02/08/2030		02/12/2030	
13/04/2030		03/05/2030		02/08/2030		02/12/2030		03/05/2031	
संक	08/12/2029	मंग	13/04/2030	धांय	11/05/2030	भ्राम	16/08/2030	भद्रि	23/12/2030
मंग	12/12/2029	पिंग	14/04/2030	भ्राम	21/05/2030	भद्रि	02/09/2030	उल्क	18/01/2031
पिंग	21/12/2029	धांय	16/04/2030	भद्रि	02/06/2030	उल्क	22/09/2030	सिद्ध	16/02/2031
धांय	04/01/2030	भ्राम	18/04/2030	उल्क	18/06/2030	सिद्ध	16/10/2030	संक	22/03/2031
भ्राम	22/01/2030	भद्रि	21/04/2030	सिद्ध	05/07/2030	संक	12/11/2030	मंग	26/03/2031
भद्रि	13/02/2030	उल्क	25/04/2030	संक	26/07/2030	मंग	15/11/2030	पिंग	04/04/2031
उल्क	12/03/2030	सिद्ध	29/04/2030	मंग	28/07/2030	पिंग	22/11/2030	धांय	16/04/2031
सिद्ध	13/04/2030	संक	03/05/2030	पिंग	02/08/2030	धांय	02/12/2030	भ्राम	03/05/2031

धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक		धांय - मंग		धांय - पिंग	
03/05/2031		02/11/2031		02/06/2032		31/01/2033		03/03/2033	
02/11/2031		02/06/2032		31/01/2033		03/03/2033		03/05/2033	
उल्क	03/06/2031	सिद्ध	13/12/2031	संक	26/07/2032	मंग	01/02/2033	पिंग	06/03/2033
सिद्ध	08/07/2031	संक	30/01/2032	मंग	02/08/2032	पिंग	03/02/2033	धांय	11/03/2033
संक	18/08/2031	मंग	05/02/2032	पिंग	15/08/2032	धांय	06/02/2033	भ्राम	18/03/2033
मंग	23/08/2031	पिंग	16/02/2032	धांय	05/09/2032	भ्राम	09/02/2033	भद्रि	27/03/2033
पिंग	02/09/2031	धांय	05/03/2032	भ्राम	02/10/2032	भद्रि	13/02/2033	उल्क	06/04/2033
धांय	17/09/2031	भ्राम	29/03/2032	भद्रि	05/11/2032	उल्क	18/02/2033	सिद्ध	18/04/2033
भ्राम	08/10/2031	भद्रि	27/04/2032	उल्क	15/12/2032	सिद्ध	24/02/2033	संक	01/05/2033
भद्रि	02/11/2031	उल्क	02/06/2032	सिद्ध	31/01/2033	संक	03/03/2033	मंग	03/05/2033

भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क		भ्राम - सिद्ध		भ्राम - संक	
03/05/2033		12/10/2033		03/05/2034		02/01/2035		13/10/2035	
12/10/2033		03/05/2034		02/01/2035		13/10/2035		01/09/2036	
भ्राम	21/05/2033	भद्रि	09/11/2033	उल्क	13/06/2034	सिद्ध	26/02/2035	संक	24/12/2035
भद्रि	12/06/2033	उल्क	13/12/2033	सिद्ध	30/07/2034	संक	30/04/2035	मंग	02/01/2036
उल्क	09/07/2033	सिद्ध	22/01/2034	संक	22/09/2034	मंग	08/05/2035	पिंग	20/01/2036
सिद्ध	10/08/2033	संक	08/03/2034	मंग	29/09/2034	पिंग	24/05/2035	धांय	16/02/2036
संक	15/09/2033	मंग	13/03/2034	पिंग	12/10/2034	धांय	16/06/2035	भ्राम	23/03/2036
मंग	20/09/2033	पिंग	25/03/2034	धांय	02/11/2034	भ्राम	18/07/2035	भद्रि	07/05/2036
पिंग	29/09/2033	धांय	11/04/2034	भ्राम	29/11/2034	भद्रि	26/08/2035	उल्क	30/06/2036
धांय	12/10/2033	भ्राम	03/05/2034	भद्रि	02/01/2035	उल्क	13/10/2035	सिद्ध	01/09/2036

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : तुला 0 वर्ष 1 मास 16 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : उ०भाद्रपद - 1 सव्य
देह : मेष जीव : धनु

तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
15/08/1965		01/10/1965		01/10/1974		01/10/1995		01/10/2000	
01/10/1965		01/10/1974		01/10/1995		01/10/2000		01/10/2009	
00/00/0000	कन्या	24/07/1966	कर्क	28/02/1979	सिंह	01/01/1996	मिथु	24/07/2001
00/00/0000	कर्क	13/06/1968	सिंह	18/03/1980	मिथु	13/06/1996	वृष	01/01/2003
00/00/0000	सिंह	25/11/1968	मिथु	06/02/1982	वृष	01/04/1997	मेष	19/08/2003
00/00/0000	मिथु	16/09/1969	वृष	17/06/1985	मेष	07/08/1997	मीन	12/07/2004
00/00/0000	वृष	24/02/1971	मेष	06/12/1986	मीन	06/02/1998	वृश्चि	27/02/2005
00/00/0000	मेष	12/10/1971	मीन	11/01/1989	वृश्चि	14/06/1998	तुला	07/08/2006
00/00/0000	मीन	05/09/1972	वृश्चि	02/07/1990	तुला	02/04/1999	कन्या	30/05/2007
15/08/1965	वृश्चि	23/04/1973	तुला	10/11/1993	कन्या	13/09/1999	कर्क	20/04/2009
वृश्चि 01/10/1965	तुला	01/10/1974	कन्या	01/10/1995	कर्क	01/10/2000	सिंह	01/10/2009

वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
01/10/2009		01/10/2025		01/10/2032		01/10/2042		01/10/2049	
01/10/2025		01/10/2032		01/10/2042		01/10/2049		15/08/2065	
वृष	23/04/2012	मेष	29/03/2026	मीन	01/10/2033	वृश्चि	29/03/2043	तुला	23/04/2052
मेष	06/06/2013	मीन	10/12/2026	वृश्चि	14/06/2034	तुला	11/05/2044	कन्या	01/10/2053
मीन	12/01/2015	वृश्चि	07/06/2027	तुला	19/01/2036	कन्या	27/12/2044	कर्क	09/02/2057
वृश्चि	25/02/2016	तुला	20/07/2028	कन्या	13/12/2036	कर्क	17/06/2046	सिंह	28/11/2057
तुला	17/09/2018	कन्या	07/03/2029	कर्क	19/01/2039	सिंह	23/10/2046	मिथु	08/05/2059
कन्या	25/02/2020	कर्क	26/08/2030	सिंह	20/07/2039	मिथु	10/06/2047	वृष	28/11/2061
कर्क	06/07/2023	सिंह	01/01/2031	मिथु	13/06/2040	वृष	23/07/2048	मेष	12/01/2063
सिंह	23/04/2024	मिथु	19/08/2031	वृष	19/01/2042	मेष	18/01/2049	मीन	18/08/2064
मिथु	01/10/2025	वृष	01/10/2032	मेष	01/10/2042	मीन	01/10/2049	वृश्चि	15/08/2065

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - मेष		मेष - मीन		मेष - वृश्चि		मेष - तुला		मेष - कन्या	
01/10/2025		29/03/2026		10/12/2026		07/06/2027		20/07/2028	
29/03/2026		10/12/2026		07/06/2027		20/07/2028		07/03/2029	
मेष	14/10/2025	मीन	24/04/2026	वृश्चि	22/12/2026	तुला	11/08/2027	कन्या	09/08/2028
मीन	31/10/2025	वृश्चि	11/05/2026	तुला	20/01/2027	कन्या	17/09/2027	कर्क	27/09/2028
वृश्चि	13/11/2025	तुला	21/06/2026	कन्या	05/02/2027	कर्क	12/12/2027	सिंह	08/10/2028
तुला	12/12/2025	कन्या	14/07/2026	कर्क	14/03/2027	सिंह	01/01/2028	मिथु	29/10/2028
कन्या	28/12/2025	कर्क	06/09/2026	सिंह	23/03/2027	मिथु	07/02/2028	वृष	05/12/2028
कर्क	03/02/2026	सिंह	19/09/2026	मिथु	09/04/2027	वृष	13/04/2028	मेष	21/12/2028
सिंह	12/02/2026	मिथु	12/10/2026	वृष	07/05/2027	मेष	11/05/2028	मीन	13/01/2029
मिथु	28/02/2026	वृष	22/11/2026	मेष	20/05/2027	मीन	21/06/2028	वृश्चि	29/01/2029
वृष	29/03/2026	मेष	10/12/2026	मीन	07/06/2027	वृश्चि	20/07/2028	तुला	07/03/2029

मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - मिथु		मेष - वृष		मीन - मीन	
07/03/2029		26/08/2030		01/01/2031		19/08/2031		01/10/2032	
26/08/2030		01/01/2031		19/08/2031		01/10/2032		01/10/2033	
कर्क	28/06/2029	सिंह	01/09/2030	मिथु	21/01/2031	वृष	23/10/2031	मीन	06/11/2032
सिंह	24/07/2029	मिथु	13/09/2030	वृष	27/02/2031	मेष	21/11/2031	वृश्चि	02/12/2032
मिथु	11/09/2029	वृष	03/10/2030	मेष	15/03/2031	मीन	01/01/2032	तुला	29/01/2033
वृष	06/12/2029	मेष	12/10/2030	मीन	07/04/2031	वृश्चि	29/01/2032	कन्या	03/03/2033
मेष	12/01/2030	मीन	25/10/2030	वृश्चि	23/04/2031	तुला	04/04/2032	कर्क	19/05/2033
मीन	07/03/2030	वृश्चि	03/11/2030	तुला	30/05/2031	कन्या	11/05/2032	सिंह	06/06/2033
वृश्चि	13/04/2030	तुला	23/11/2030	कन्या	20/06/2031	कर्क	04/08/2032	मिथु	09/07/2033
तुला	08/07/2030	कन्या	05/12/2030	कर्क	07/08/2031	सिंह	25/08/2032	वृष	05/09/2033
कन्या	26/08/2030	कर्क	01/01/2031	सिंह	19/08/2031	मिथु	01/10/2032	मेष	01/10/2033

मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - कर्क		मीन - सिंह	
01/10/2033		14/06/2034		19/01/2036		13/12/2036		19/01/2039	
14/06/2034		19/01/2036		13/12/2036		19/01/2039		20/07/2039	
वृश्चि	19/10/2033	तुला	15/09/2034	कन्या	18/02/2036	कर्क	23/05/2037	सिंह	28/01/2039
तुला	29/11/2033	कन्या	07/11/2034	कर्क	27/04/2036	सिंह	30/06/2037	मिथु	13/02/2039
कन्या	22/12/2033	कर्क	09/03/2035	सिंह	13/05/2036	मिथु	07/09/2037	वृष	15/03/2039
कर्क	13/02/2034	सिंह	08/04/2035	मिथु	12/06/2036	वृष	08/01/2038	मेष	27/03/2039
सिंह	26/02/2034	मिथु	30/05/2035	वृष	03/08/2036	मेष	03/03/2038	मीन	15/04/2039
मिथु	21/03/2034	वृष	01/09/2035	मेष	26/08/2036	मीन	18/05/2038	वृश्चि	27/04/2039
वृष	01/05/2034	मेष	12/10/2035	मीन	28/09/2036	वृश्चि	11/07/2038	तुला	27/05/2039
मेष	19/05/2034	मीन	09/12/2035	वृश्चि	21/10/2036	तुला	11/11/2038	कन्या	12/06/2039
मीन	14/06/2034	वृश्चि	19/01/2036	तुला	13/12/2036	कन्या	19/01/2039	कर्क	20/07/2039

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मिथु		मीन - वृष		मीन - मेष		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला	
20/07/2039		13/06/2040		19/01/2042		01/10/2042		29/03/2043	
13/06/2040		19/01/2042		01/10/2042		29/03/2043		11/05/2044	
मिथु	19/08/2039	वृष	15/09/2040	मेष	05/02/2042	वृश्चि	14/10/2042	तुला	03/06/2043
वृष	11/10/2039	मेष	26/10/2040	मीन	03/03/2042	तुला	11/11/2042	कन्या	09/07/2043
मेष	03/11/2039	मीन	23/12/2040	वृश्चि	21/03/2042	कन्या	28/11/2042	कर्क	03/10/2043
मीन	06/12/2039	वृश्चि	02/02/2041	तुला	01/05/2042	कर्क	04/01/2043	सिंह	24/10/2043
वृश्चि	29/12/2039	तुला	06/05/2041	कन्या	24/05/2042	सिंह	13/01/2043	मिथु	30/11/2043
तुला	19/02/2040	कन्या	28/06/2041	कर्क	17/07/2042	मिथु	29/01/2043	वृष	03/02/2044
कन्या	20/03/2040	कर्क	29/10/2041	सिंह	29/07/2042	वृष	27/02/2043	मेष	03/03/2044
कर्क	28/05/2040	सिंह	27/11/2041	मिथु	21/08/2042	मेष	11/03/2043	मीन	13/04/2044
सिंह	13/06/2040	मिथु	19/01/2042	वृष	01/10/2042	मीन	29/03/2043	वृश्चि	11/05/2044

वृश्चि - कन्या		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष	
11/05/2044		27/12/2044		17/06/2046		23/10/2046		10/06/2047	
27/12/2044		17/06/2046		23/10/2046		10/06/2047		23/07/2048	
कन्या	01/06/2044	कर्क	19/04/2045	सिंह	24/06/2046	मिथु	13/11/2046	वृष	15/08/2047
कर्क	19/07/2044	सिंह	16/05/2045	मिथु	05/07/2046	वृष	20/12/2046	मेष	12/09/2047
सिंह	31/07/2044	मिथु	03/07/2045	वृष	26/07/2046	मेष	05/01/2047	मीन	23/10/2047
मिथु	21/08/2044	वृष	27/09/2045	मेष	04/08/2046	मीन	28/01/2047	वृश्चि	21/11/2047
वृष	26/09/2044	मेष	04/11/2045	मीन	16/08/2046	वृश्चि	13/02/2047	तुला	25/01/2048
मेष	12/10/2044	मीन	28/12/2045	वृश्चि	25/08/2046	तुला	22/03/2047	कन्या	02/03/2048
मीन	04/11/2044	वृश्चि	03/02/2046	तुला	15/09/2046	कन्या	11/04/2047	कर्क	27/05/2048
वृश्चि	21/11/2044	तुला	30/04/2046	कन्या	26/09/2046	कर्क	30/05/2047	सिंह	17/06/2048
तुला	27/12/2044	कन्या	17/06/2046	कर्क	23/10/2046	सिंह	10/06/2047	मिथु	23/07/2048

वृश्चि - मेष		वृश्चि - मीन		तुला - तुला		तुला - कन्या		तुला - कर्क	
23/07/2048		18/01/2049		01/10/2049		23/04/2052		01/10/2053	
18/01/2049		01/10/2049		23/04/2052		01/10/2053		09/02/2057	
मेष	05/08/2048	मीन	13/02/2049	तुला	28/02/2050	कन्या	09/06/2052	कर्क	16/06/2054
मीन	23/08/2048	वृश्चि	03/03/2049	कन्या	23/05/2050	कर्क	28/09/2052	सिंह	16/08/2054
वृश्चि	04/09/2048	तुला	13/04/2049	कर्क	05/12/2050	सिंह	24/10/2052	मिथु	05/12/2054
तुला	03/10/2048	कन्या	06/05/2049	सिंह	21/01/2051	मिथु	10/12/2052	वृष	19/06/2055
कन्या	19/10/2048	कर्क	28/06/2049	मिथु	15/04/2051	वृष	05/03/2053	मेष	13/09/2055
कर्क	26/11/2048	सिंह	11/07/2049	वृष	12/09/2051	मेष	10/04/2053	मीन	14/01/2056
सिंह	05/12/2048	मिथु	03/08/2049	मेष	16/11/2051	मीन	02/06/2053	वृश्चि	08/04/2056
मिथु	21/12/2048	वृष	13/09/2049	मीन	18/02/2052	वृश्चि	09/07/2053	तुला	22/10/2056
वृष	18/01/2049	मेष	01/10/2049	वृश्चि	23/04/2052	तुला	01/10/2053	कन्या	09/02/2057

चर दशा

भोग्य दशा काल : मकर 11 वर्ष 0 मास 0 दिन

मकर 11 वर्ष	
15/08/1965	
15/08/1976	
धनु	16/07/1966
वृश्चि	16/06/1967
तुला	16/05/1968
कन्या	15/04/1969
सिंह	16/03/1970
कर्क	14/02/1971
मिथु	15/01/1972
वृष	15/12/1972
मेष	15/11/1973
मीन	15/10/1974
कुंभ	15/09/1975
मक	15/08/1976

धनु 6 वर्ष	
15/08/1976	
15/08/1982	
वृश्चि	14/02/1977
तुला	15/08/1977
कन्या	14/02/1978
सिंह	15/08/1978
कर्क	14/02/1979
मिथु	16/08/1979
वृष	14/02/1980
मेष	15/08/1980
मीन	14/02/1981
कुंभ	15/08/1981
मक	14/02/1982
धनु	15/08/1982

वृश्चिक 11 वर्ष	
15/08/1982	
15/08/1993	
तुला	16/07/1983
कन्या	15/06/1984
सिंह	16/05/1985
कर्क	16/04/1986
मिथु	17/03/1987
वृष	14/02/1988
मेष	14/01/1989
मीन	15/12/1989
कुंभ	15/11/1990
मक	16/10/1991
धनु	14/09/1992
वृश्चि	15/08/1993

तुला 11 वर्ष	
15/08/1993	
15/08/2004	
वृश्चि	16/07/1994
धनु	16/06/1995
मक	16/05/1996
कुंभ	15/04/1997
मीन	16/03/1998
मेष	14/02/1999
वृष	15/01/2000
मिथु	15/12/2000
कर्क	15/11/2001
सिंह	15/10/2002
कन्या	15/09/2003
तुला	15/08/2004

कन्या 2 वर्ष	
15/08/2004	
15/08/2006	
तुला	15/10/2004
वृश्चि	15/12/2004
धनु	14/02/2005
मक	15/04/2005
कुंभ	15/06/2005
मीन	15/08/2005
मेष	15/10/2005
वृष	15/12/2005
मिथु	14/02/2006
कर्क	16/04/2006
सिंह	16/06/2006
कन्या	15/08/2006

सिंह 1 वर्ष	
15/08/2006	
16/08/2007	
कन्या	15/09/2006
तुला	15/10/2006
वृश्चि	15/11/2006
धनु	15/12/2006
मक	15/01/2007
कुंभ	14/02/2007
मीन	17/03/2007
मेष	16/04/2007
वृष	16/05/2007
मिथु	16/06/2007
कर्क	16/07/2007
सिंह	16/08/2007

कर्क 4 वर्ष	
16/08/2007	
16/08/2011	
मिथु	15/12/2007
वृष	15/04/2008
मेष	15/08/2008
मीन	15/12/2008
कुंभ	15/04/2009
मक	15/08/2009
धनु	15/12/2009
वृश्चि	16/04/2010
तुला	15/08/2010
कन्या	15/12/2010
सिंह	16/04/2011
कर्क	16/08/2011

मिथुन 1 वर्ष	
16/08/2011	
15/08/2012	
वृष	15/09/2011
मेष	16/10/2011
मीन	15/11/2011
कुंभ	15/12/2011
मक	15/01/2012
धनु	14/02/2012
वृश्चि	16/03/2012
तुला	15/04/2012
कन्या	16/05/2012
सिंह	15/06/2012
कर्क	16/07/2012
मिथु	15/08/2012

वृष 4 वर्ष	
15/08/2012	
15/08/2016	
मेष	15/12/2012
मीन	15/04/2013
कुंभ	15/08/2013
मक	15/12/2013
धनु	16/04/2014
वृश्चि	15/08/2014
तुला	15/12/2014
कन्या	16/04/2015
सिंह	16/08/2015
कर्क	15/12/2015
मिथु	15/04/2016
वृष	15/08/2016

मेष 6 वर्ष	
15/08/2016	
15/08/2022	
वृष	14/02/2017
मिथु	15/08/2017
कर्क	14/02/2018
सिंह	15/08/2018
कन्या	14/02/2019
तुला	16/08/2019
वृश्चि	14/02/2020
धनु	15/08/2020
मक	14/02/2021
कुंभ	15/08/2021
मीन	14/02/2022
मेष	15/08/2022

मीन 9 वर्ष	
15/08/2022	
16/08/2031	
मेष	16/05/2023
वृष	14/02/2024
मिथु	14/11/2024
कर्क	15/08/2025
सिंह	16/05/2026
कन्या	14/02/2027
तुला	15/11/2027
वृश्चि	15/08/2028
धनु	16/05/2029
मक	14/02/2030
कुंभ	15/11/2030
मीन	16/08/2031

कुम्भ 9 वर्ष	
16/08/2031	
15/08/2040	
मीन	16/05/2032
मेष	14/02/2033
वृष	15/11/2033
मिथु	15/08/2034
कर्क	16/05/2035
सिंह	14/02/2036
कन्या	14/11/2036
तुला	15/08/2037
वृश्चि	16/05/2038
धनु	14/02/2039
मक	15/11/2039
कुंभ	15/08/2040

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - सिंह		मीन - कन्या		मीन - तुला		मीन - वृश्चि		मीन - धनु	
15/08/2025		16/05/2026		14/02/2027		15/11/2027		15/08/2028	
16/05/2026		14/02/2027		15/11/2027		15/08/2028		16/05/2029	
कन्या	07/09/2025	तुला	08/06/2026	वृश्चि	09/03/2027	तुला	08/12/2027	वृश्चि	07/09/2028
तुला	30/09/2025	वृश्चि	01/07/2026	धनु	01/04/2027	कन्या	31/12/2027	तुला	30/09/2028
वृश्चि	23/10/2025	धनु	24/07/2026	मक	24/04/2027	सिंह	23/01/2028	कन्या	22/10/2028
धनु	15/11/2025	मक	15/08/2026	कुंभ	16/05/2027	कर्क	14/02/2028	सिंह	14/11/2028
मक	07/12/2025	कुंभ	07/09/2026	मीन	08/06/2027	मिथु	08/03/2028	कर्क	07/12/2028
कुंभ	30/12/2025	मीन	30/09/2026	मेष	01/07/2027	वृष	31/03/2028	मिथु	30/12/2028
मीन	22/01/2026	मेष	23/10/2026	वृष	24/07/2027	मेष	23/04/2028	वृष	22/01/2029
मेष	14/02/2026	वृष	15/11/2026	मिथु	16/08/2027	मीन	16/05/2028	मेष	14/02/2029
वृष	09/03/2026	मिथु	08/12/2026	कर्क	08/09/2027	कुंभ	07/06/2028	मीन	08/03/2029
मिथु	01/04/2026	कर्क	30/12/2026	सिंह	30/09/2027	मक	30/06/2028	कुंभ	31/03/2029
कर्क	23/04/2026	सिंह	22/01/2027	कन्या	23/10/2027	धनु	23/07/2028	मक	23/04/2029
सिंह	16/05/2026	कन्या	14/02/2027	तुला	15/11/2027	वृश्चि	15/08/2028	धनु	16/05/2029

मीन - मक		मीन - कुंभ		मीन - मीन		कुंभ - मीन		कुंभ - मेष	
16/05/2029		14/02/2030		15/11/2030		16/08/2031		16/05/2032	
14/02/2030		15/11/2030		16/08/2031		16/05/2032		14/02/2033	
धनु	08/06/2029	मीन	09/03/2030	मेष	08/12/2030	मेष	08/09/2031	वृष	07/06/2032
वृश्चि	01/07/2029	मेष	01/04/2030	वृष	30/12/2030	वृष	30/09/2031	मिथु	30/06/2032
तुला	23/07/2029	वृष	23/04/2030	मिथु	22/01/2031	मिथु	23/10/2031	कर्क	23/07/2032
कन्या	15/08/2029	मिथु	16/05/2030	कर्क	14/02/2031	कर्क	15/11/2031	सिंह	15/08/2032
सिंह	07/09/2029	कर्क	08/06/2030	सिंह	09/03/2031	सिंह	08/12/2031	कन्या	07/09/2032
कर्क	30/09/2029	सिंह	01/07/2030	कन्या	01/04/2031	कन्या	31/12/2031	तुला	30/09/2032
मिथु	23/10/2029	कन्या	24/07/2030	तुला	24/04/2031	तुला	23/01/2032	वृश्चि	22/10/2032
वृष	15/11/2029	तुला	15/08/2030	वृश्चि	16/05/2031	वृश्चि	14/02/2032	धनु	14/11/2032
मेष	07/12/2029	वृश्चि	07/09/2030	धनु	08/06/2031	धनु	08/03/2032	मक	07/12/2032
मीन	30/12/2029	धनु	30/09/2030	मक	01/07/2031	मक	31/03/2032	कुंभ	30/12/2032
कुंभ	22/01/2030	मक	23/10/2030	कुंभ	24/07/2031	कुंभ	23/04/2032	मीन	22/01/2033
मक	14/02/2030	कुंभ	15/11/2030	मीन	16/08/2031	मीन	16/05/2032	मेष	14/02/2033

कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु		कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह		कुंभ - कन्या	
14/02/2033		15/11/2033		15/08/2034		16/05/2035		14/02/2036	
15/11/2033		15/08/2034		16/05/2035		14/02/2036		14/11/2036	
मेष	08/03/2033	वृष	07/12/2033	मिथु	07/09/2034	कन्या	08/06/2035	तुला	08/03/2036
मीन	31/03/2033	मेष	30/12/2033	वृष	30/09/2034	तुला	01/07/2035	वृश्चि	31/03/2036
कुंभ	23/04/2033	मीन	22/01/2034	मेष	23/10/2034	वृश्चि	24/07/2035	धनु	23/04/2036
मक	16/05/2033	कुंभ	14/02/2034	मीन	15/11/2034	धनु	16/08/2035	मक	16/05/2036
धनु	08/06/2033	मक	09/03/2034	कुंभ	08/12/2034	मक	08/09/2035	कुंभ	07/06/2036
वृश्चि	01/07/2033	धनु	01/04/2034	मक	30/12/2034	कुंभ	30/09/2035	मीन	30/06/2036
तुला	23/07/2033	वृश्चि	23/04/2034	धनु	22/01/2035	मीन	23/10/2035	मेष	23/07/2036
कन्या	15/08/2033	तुला	16/05/2034	वृश्चि	14/02/2035	मेष	15/11/2035	वृष	15/08/2036
सिंह	07/09/2033	कन्या	08/06/2034	तुला	09/03/2035	वृष	08/12/2035	मिथु	07/09/2036
कर्क	30/09/2033	सिंह	01/07/2034	कन्या	01/04/2035	मिथु	31/12/2035	कर्क	30/09/2036
मिथु	23/10/2033	कर्क	24/07/2034	सिंह	24/04/2035	कर्क	23/01/2036	सिंह	22/10/2036
वृष	15/11/2033	मिथु	15/08/2034	कर्क	16/05/2035	सिंह	14/02/2036	कन्या	14/11/2036

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - तुला	
14/11/2036	
15/08/2037	
वृश्चि	07/12/2036
धनु	30/12/2036
मक	22/01/2037
कुंभ	14/02/2037
मीन	08/03/2037
मेष	31/03/2037
वृष	23/04/2037
मिथु	16/05/2037
कर्क	08/06/2037
सिंह	01/07/2037
कन्या	23/07/2037
तुला	15/08/2037

कुंभ - वृश्चि	
15/08/2037	
16/05/2038	
तुला	07/09/2037
कन्या	30/09/2037
सिंह	23/10/2037
कर्क	15/11/2037
मिथु	07/12/2037
वृष	30/12/2037
मेष	22/01/2038
मीन	14/02/2038
कुंभ	09/03/2038
मक	01/04/2038
धनु	23/04/2038
वृश्चि	16/05/2038

कुंभ - धनु	
16/05/2038	
14/02/2039	
वृश्चि	08/06/2038
तुला	01/07/2038
कन्या	24/07/2038
सिंह	15/08/2038
कर्क	07/09/2038
मिथु	30/09/2038
वृष	23/10/2038
मेष	15/11/2038
मीन	08/12/2038
कुंभ	30/12/2038
मक	22/01/2039
धनु	14/02/2039

कुंभ - मक	
14/02/2039	
15/11/2039	
धनु	09/03/2039
वृश्चि	01/04/2039
तुला	24/04/2039
कन्या	16/05/2039
सिंह	08/06/2039
कर्क	01/07/2039
मिथु	24/07/2039
वृष	16/08/2039
मेष	08/09/2039
मीन	30/09/2039
कुंभ	23/10/2039
मक	15/11/2039

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

कुंभ - कुंभ	
15/11/2039	
15/08/2040	
मीन	08/12/2039
मेष	31/12/2039
वृष	23/01/2040
मिथु	14/02/2040
कर्क	08/03/2040
सिंह	31/03/2040
कन्या	23/04/2040
तुला	16/05/2040
वृश्चि	07/06/2040
धनु	30/06/2040
मक	23/07/2040
कुंभ	15/08/2040

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	8
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 8
शत्रु अंक	1, 7,
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	भाग्योदय, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	97%	धन, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	83%	सन्तति सुख, भाग्योदय
पन्ना	बुध	69%	दम्पति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	67%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	66%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, धनार्जन
मोती	चंद्र	44%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	0%	शत्रु व रोग, व्यय, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

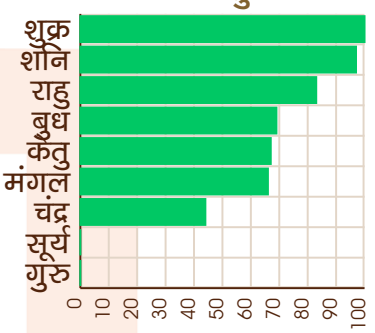

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	15/07/1983	0%	19%	53%	75%	0%	100%	100%	89%	55%
बुध	14/07/2000	9%	19%	66%	81%	0%	100%	97%	83%	67%
केतु	15/07/2007	0%	19%	72%	69%	0%	100%	84%	70%	80%
शुक्र	15/07/2027	0%	19%	66%	75%	0%	100%	100%	89%	73%
सूर्य	15/07/2033	22%	53%	72%	69%	0%	88%	84%	70%	55%
चंद्र	15/07/2043	9%	59%	66%	75%	0%	100%	97%	70%	55%
मंगल	15/07/2050	9%	53%	78%	56%	0%	100%	97%	70%	73%
राहु	14/07/2068	0%	19%	53%	69%	0%	100%	100%	95%	55%
गुरु	14/07/2084	9%	53%	72%	56%	0%	88%	97%	83%	67%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पन्ना, लहसुनिया एवं मूंगा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते है। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पति की वृद्धि करेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते है। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्जवल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यो में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको धनवान बनाएगा। रत्न शुभता से आपका विवाह कुलीन परिवार में होगा। यह रत्न आपको उदार और धार्मिक प्रवृति का रखेगा। आपके लिये यह शुभ रत्न होने के कारण इसे धारण कर आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते है। पन्ना आपको शिल्पकला में निपुण, चतुर और विनोदी बनाएगा। रत्न शुभता से आप एक कुशल व्यवसायी बनेंगे। क्रय-विक्रय विषयों से आपको लाभ प्राप्त होगा। व्यावसायिक साझेदारी से आपके अनुकूल फल प्राप्त होंगे।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते है। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते है। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानी से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके शत्रु आपसे भयभीत होंगे। आपकी

चिंताओं का निवारण होगी। संतान संबंधी चिंताओं को शीघ्र दूर करने में सफल होंगे। आपका घर सुंदर सज्जायुक्त हो सकता है। पेट के रोगों से आपको राहत मिलेगी। आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। लहसुनिया रत्न आपको तेजस्वी, मनोहरी व्यक्तित्व और संतोषी जीवन देगा। आपको आय क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त होगी।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल दशम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। धन, यश, सुख और वाहनों का सुख प्रदान करेगा। मूंगा रत्न आपको महत्वाकांक्षी और दृढनिश्चयी व्यक्ति बनाएगा। मूंगा रत्न शुभता से बड़े पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न प्रभाव आपको इंजीनियरिंग क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति के अवसर दे सकता है। इसके अतिरिक्त यह मंगल आपको शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत पर ओर अधिक अनुकूल सिद्ध हो सकता है। आजीविका क्षेत्र में आपकी नेतृत्व योग्यता का विकास करने में भी मूंगा रत्न शुभ दायक रहेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। आप मंगल रत्न मूंगा धारण कर मंगल ग्रह की शुभता बढ़ा सकते है। मूंगा रत्न धारण कर आप सुख-सुविधाओं से युक्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप घर एवं भूमि-भवन संपति के स्वामी बन सकते है। रत्न शुभता से आपको माता का स्नेह व संतोषी जीवन प्राप्त हो सकता है। मूंगा रत्न स्वयं अर्जित धन में उन्नति व सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप लोभ से बचेंगे तथा

आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के योग बन सकते है। मूंगा रत्न धारण से आप सफल व्यक्ति बन सकते है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको अपने आजीविका क्षेत्र में कई परिवर्तन करने पड़ सकते है। यात्रा से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। आपमें शौक, रुचियां और मित्रता में शीघ्र बदलाव करने की आदत आ सकती है. आपके पिता को कई बार अपने व्यापारिक साझेदार में बदलाव करने पड़ सकते हैं साथ ही उन्हें बहुत सारी यात्राएं करने का अवसर मिलेंगे। रत्न धारण से आप प्रसिद्धि पाने के लिए प्रयासरत रहेंगे.

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। सप्तमेश चंद्र का मोती रत्न धारण करने पर आपके जीवन की मुख्य क्रियाएं वैवाहिक जीवन के इर्दि-गर्द केन्द्रित हो सकती है। जीवन साथी के प्रति विशेष अनुग्रह के कारण आप अपने अन्य दायित्वों के निर्वाह में चूक सकते है। रत्न की शुभता का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने के कारण आपका ग्रहस्थ सुख आंशिक रूप से कष्टपूर्ण हो सकता है। मोती रत्न आपको साझेदारी व्यापार में अनियमितता दे सकता है। मोती रत्न आपकी प्रसन्नता, सदबुद्धि तथा यश सम्मान में कमी कर सकता है। यह रत्न आपकी विदेश यात्राओं में बाधक का कार्य कर सकता है। आप भ्रमणशील हो सकते है। साथ ही यह रत्न धन-धान्य में भी कमी कर सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको सत्ता पक्ष, सरकार या सरकारी कर्मचारियों के द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है या इनके कारण हानि हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके पिता की बहन अर्थात बुआ के साथ आपके सम्बंध खराब रह सकते हैं। कभी-कभी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संबंधों को लेकर भी परेशानी उठानी पड

सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य आपको किसी बात को लेकर चिंतित रख सकता है। माणिक्य रत्न आपको आंशिक रूप से स्वार्थी बना सकता है। रत्न शुभता आपको वैवाहिक जीवन में सामंजस्य बनाए रखने में प्रतिकूलता दे सकता है। ग्रहस्थ जीवन के लिए रत्न अनुकूलता आपके साथ नहीं है।

आपकी मकर लग्न की कुंड़ली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते है। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्त्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते है। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते है। कार्यो को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते है। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(15/07/2007 - 15/07/2027)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम, गोमेद व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(15/07/2027 - 15/07/2033)

सूर्य की दशा में आपका हीरा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, गोमेद, पन्ना, लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(15/07/2033 - 15/07/2043)

चन्द्र की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, मूंगा, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(15/07/2043 - 15/07/2050)

मंगल की दशा में आपका हीरा, नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/07/2050 - 14/07/2068)

राहु की दशा में आपका हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(14/07/2068 - 14/07/2084)

गुरु की दशा में आपका नीलम, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, लहसुनिया, पन्ना व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 15/07/1983

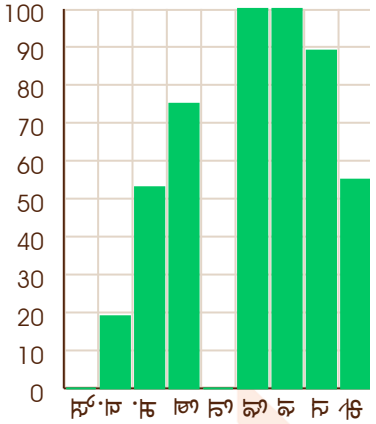

बुध - 14/07/2000

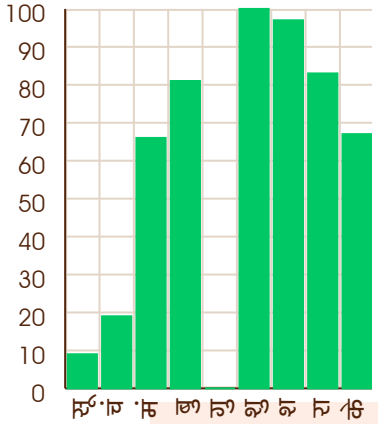

केतु - 15/07/2007

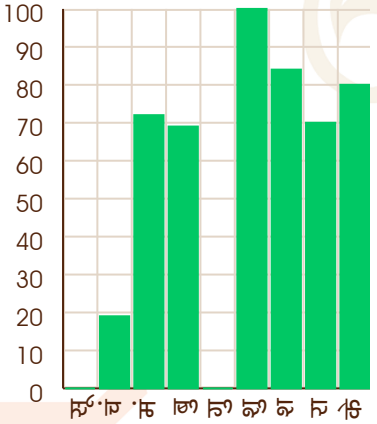

शुक्र - 15/07/2027

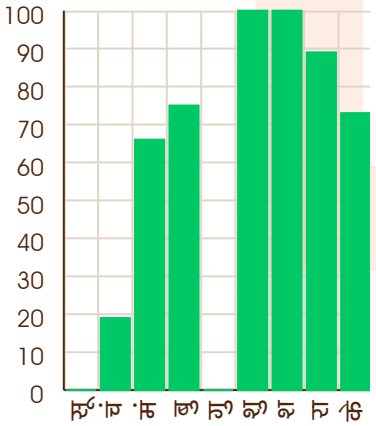

सूर्य - 15/07/2033

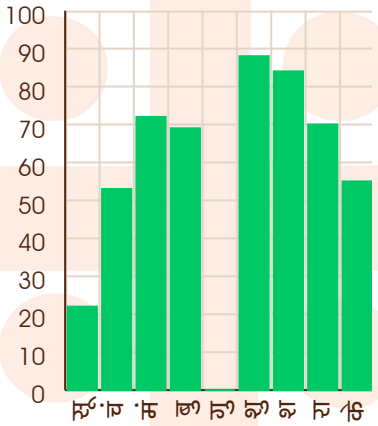

चन्द्र - 15/07/2043

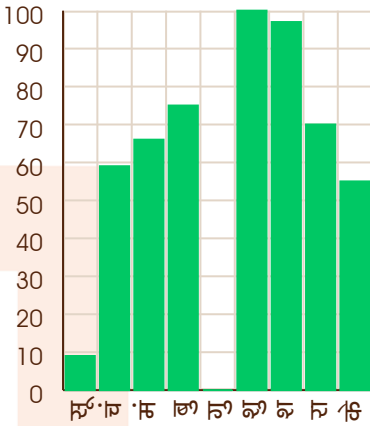

मंगल - 15/07/2050

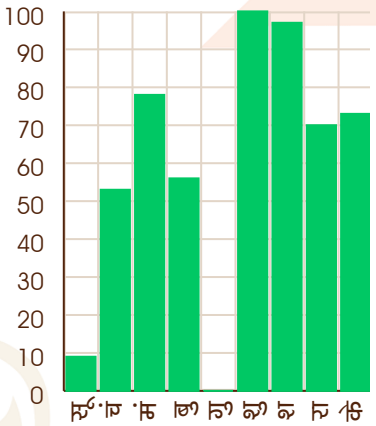

राहु - 14/07/2068

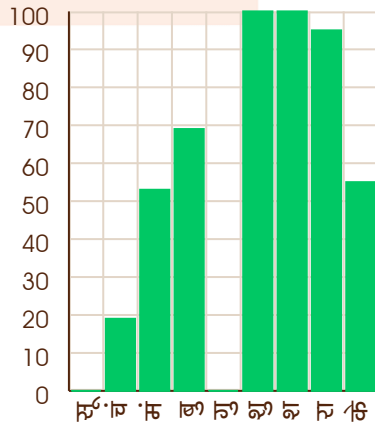

गुरु - 14/07/2084

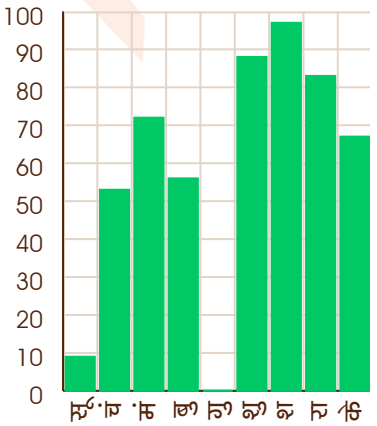

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल़, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रूके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यो में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृति रखते है। साथ ही आप हंसमुख है। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता हैं। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप

अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रूचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते है। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते है। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते है। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता हैं। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते है। कुंडली के षष्ट भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती हैं। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशनियों का विचार किया जाता हैं। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता हैं। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

बुध आपके षष्टेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।

क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/08/1965-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	09/04/1966-03/11/1966	20/12/1966-17/06/1968	17/06/1968-07/03/1969
साढेसाती तृतीय ढैया	17/06/1968-17/06/1968	07/03/1969-28/04/1971	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धन
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	सुख हानि
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से अष्टम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यदा कदा आप पित या गर्मी के द्वारा शारीरिक परेशानी की अनुभूति करेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम ही रहेगा तथा स्वभाव से यदा कदा वे उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन कर सकती हैं। इससे परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्पकालिक रहेगा तथा कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपको अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साथ ही विवाह में भी किंचित मात्रा में विलम्ब हो सकता है लेकिन अन्त में आपको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपका दाम्पत्य जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा से मंगल का दोष अल्प माना जाता है अतः सामान्यतया शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सामान्यतया मध्यम ही रहेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में परिश्रम तथा पराक्रम से ही सफलता होगी। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपके आय स्रोतों में उन्नति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में आप समर्थ रहेंगे। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे साथ ही वाणी में भी ओजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु धनऐश्वर्य की स्थिति उत्तम रहेगी। तृतीय भाव पर मंगल की स्थिति के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग सामान्य रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा मन में आत्मविश्वास का भाव बना रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में उन्नतिशील रहेंगे एवं मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी ऐसी

मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली से आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में शनि राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में सांसारिक सुखों का उपभोग करते हुए आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा तथा परस्पर संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करने में आप तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 15 है। एक एवं पाँच के योग से आपका मूलांक 6 होगा। मूलांक 6 का अधिष्ठाता शुक्र है एवं एक का सूर्य तथा पाँच का बुध है। आपके जीवन में इन तीनों ग्रहों की काफी भूमिका रहेगी। मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक सौन्दर्य प्रेमी, सुरुचिपूर्ण व्यवहार करने वाले, जनता के मध्य लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं गान, वाद्य, गीत संगीत सुनने का शौक रहेगा। आप प्रत्येक कार्य में स्वच्छता पसन्द करेंगे। आपके अन्दर दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति रहेगी एवं उन्हें अपना बना लेने की कला रहेगी।

सूर्य के प्रभाव से आप जीवन में सदैव प्रकाशित रहना चाहेंगे। परोपकार में हिचकेंगे नहीं तथा अपने कार्य को निष्पक्ष एवं ईमानदारी से करेंगे। बुध के प्रभाव से आपमें वाणी चातुर्य का विकास होगा। आप सोच-समझकर वाणी व्यवहार करेंगे। तर्क शक्ति अच्छी होगी तथा दूसरों को अपनी बात सहज में समझाने की सामर्थ्य रहेगी। आपकी समाज सेवा के कार्यों में रुचि रहेगी। दान पुण्य के कार्य आपके हाथ से होंगे। विद्याध्यन आपके लिये हितकर है एवं अपने बुद्धि चातुर्य, विद्या बुद्धि के सहारे अपने जीवन में प्रारम्भ से ही सफलता अर्जित करेंगे। एकाध असफलताऐं भी मिलेंगी। लेकिन इनसे आप बिना विचलित हुये अपने जीवन के लक्ष्य पर पहुंचेंगे एवं घर परिवार, समाज में नाम कमायेंगे।

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशिपथ भ्रमणचक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से आपका भाग्योदय भी धीरे-धीरे होगा। आप भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों आपका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जायेगा। इस मध्य रुकावटें भी आयेंगी, जिन्हें आप धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेंगे। आलस्य एवं निराशा आपकी तरक्की की बाधाऐं रहेंगी। इन पर विजय प्राप्त करना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि होगी।

आप अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करेंगे। आपकी सभी सफलताएं विध्नों से युक्त होते हुये भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेंगे। आपका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होगा। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था आपके भाग्योदय में विशेष सहायक होगी। अन्तिम अवस्था आपकी अच्छी रहेगी एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 8 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 8 का स्वामी शनि है। मूलांक 6 और भाग्यांक 8 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपको मूलांक का प्रभाव प्राप्त होगा, तो कभी भाग्यांक का और कभी दोनों के प्रभाव विस्मयकारी रहेंगे। शुक्र कला का दाता है एवं शनि धीरे-धीरे स्थिरता देता है। इन दोनों के संयुक्त प्रभाववश आपके रोजगार-व्यापार में कला एवं श्रम का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। प्रारंभ में आपकी आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं होगी। लेकिन मध्य अवस्था से उत्तरोत्तर आर्थिक स्थिति में वांछित सुधार होता चला जाएगा। आप अपनी मेहनत-परिश्रम तथा कला के

द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करेंगे। आपको जो भी उपलब्धियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त होंगी, उनमें आपके द्वारा किये गये परिश्रम की स्पष्ट झलक देखने को मिलेगी। आपके कार्यों में अवरोध उत्पन्न होंगे तथा उन अवरोधों को पार करने मे आपकी तन-मन-धन की शक्ति काफी मात्रा में व्यय होगी। जीवन के मध्य युग से आपको उच्च कोटी की सफलताएं भी मिलनी प्रारंभ होंगी, जो अंत तक स्थायी रहेंगी। समाज में आप एक कर्मठ व्यक्ति केरूप में अपनी पहचान बनाएंगे।

आपका भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 35 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 44 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा आपके भाग्यांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, अप्रैल, जून, अगस्त, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 8 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीर्यार्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में मकर लग्न में मीन राशि के नवमांश एवं मकर राशि के द्रेष्काण के उदय काल में हुआ था। ज्योतिषीय आकृति यह निर्दिष्ट कर रहा है कि आपका जीवन सौभाग्यशाली रहेगा। आपकी अभिलाषा के अनुकूल आपकी अच्छी बहुमत रहेगी। जो अनेक रिक्तियों की पूर्ति करेगा तथा भरपूर धनोपार्जन के लिए समर्थ होंगे। आप एक उत्साही व्यक्ति हैं। यह प्रदर्शित होता है, तथा आपकी अभिरूचि दर्शन शास्त्र अध्ययन की रहेगी। आप एक धार्मिक व्यक्ति हैं। आप अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण करेंगे। आपकी आत्मा उदार है तथा आप स्वयं सेवी दान सेवी संस्था को दान प्रदान करेंगे।

आप एक ऐसा व्यक्ति हैं जो समाज में एक स्तम्भ की भांति विचारणीय है। आप मेधावी एवं बुद्धिमान हैं। आप किसी भी व्यक्ति को प्रभावित कर उसे मर्यादित एवं मानवता के गुणों से युक्त करेंगे। इस प्रकार अनेक व्यक्ति आपके निर्देशन हेतु पहुंचेगे तथा आप उनको संतुष्टि प्रदान करेंगे।

आप एक अधिकार प्राप्त करेंगे एवं धनी व्यक्तियों की दृष्टि में आदरणीय होंगे। वे सभी आपकी सहायता के लिए प्रवृत होंगे तथा आप उन लोगों से काफी संपत्ति उपार्जित करेंगे। आप एक मितव्ययी प्राणी होंगे तथा आर्थिक मामले में पूर्ण सतर्क रहेंगे। आप अपने धन को अच्छे कार्यो में व्यय करेंगे तथा आपकी पत्नी एवं बच्चों के सुखदायक वातावरण का सृजन करेंगे। आपके उत्तम संतान होंगे। इस संबंध में आप भाग्यशाली हैं। वे अपने परिवार के नाम और प्रसिद्धि को बरकरार रखेंगे।

आपके लिए एक महत्वपूर्ण विषय पर विचार करना आवश्यक है कि आपके द्वारा लापरवाही करना निराशाजनक प्रवृति का द्योतक है। अपने कार्य व्यवसाय को संपादन करने में रूकावट करना ठीक नहीं हैं। आप किसी कार्य के विपरीत संकेत पाकर आपका हृदय टूट जाता है। आप धैर्यपूर्वक दोनों हाथों से कार्य व्यवसाय के संबंध में समुचित राह अपनाएं एवं हर दशा में कार्य में सफलता प्राप्त करें। अन्यथा आप रोगों को आमंत्रित करेंगे। यथा दुर्बलता एवं वायु एवं उदर रोग से आक्रांत हो जाएंगे। आप अन्य रोगादि के प्रतिकूल सतर्कता बरते तथा अपने पाचन क्रिया से संबंधित रोगों के प्रति भी सुरक्षात्मक कदम उठाएं।

अतएव आपको निर्दिष्ट किया जाता है कि छोटे-छोटे दैहिक रोगादि से क्षति ग्रस्त होने की आशंका है, अतः अकस्मात् छलांग लगाना अथवा ऊंचाई से गिर जाना आदि। ये सभी रोगादि को सुनिश्चिता नहीं है परंतु आपको प्रभावित कर सकता है। परंतु आपको इन रोगादि की संभावनाओं के प्रति विचार करना चाहिए तथा पहले से ही अपने स्वास्थ्य का संरक्षण करना सामान्यतया अच्छा होता है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली एवं अनुकूल दिन शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार का दिन है। परंतु सोमवार, गुरुवार एवं रविवार का दिन आपके लिए प्रतिकूल चिंताकारक एवं व्ययकारक है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल अंक 6, 9 एवं 8 अंक हैं। अंक 3 आपके लिए परेशानी वाला है। अतः इस अंक का परित्याग करें।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, काला, लाल एवं नीला रंग लाभदायक प्रमाणित होंगे। कृपया पीला एवं क्रीम रंग का परित्याग करें।

ग्रह फल

सूर्य

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक चिन्तायुक्त राज्य से अपमानित, आत्मरत, कठोर, स्वाभिमानी एवं विवाहित जीवन दुःखी होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

तृतीय,भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

सातवेंभाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सटटे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, कोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शो पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शो से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करेने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल समत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है तथा राहु भी पंचम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं को अपनी बुद्धिमता से समाधान करने में समर्थ होंगे इससे अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य, दर्शन एवं धर्म में आपकी अल्प रूचि होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, साहित्य तथा पाश्चात्य भाषाओं में विशेष रूचि होगी तथा इसमें आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे तथा इनका गहन ज्ञान अर्जित करके समाज में एक विद्वान एवं सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

पंचमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रूचि होगी तथा इन्हें स्थापित करने में आपको मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होगी। आपका परस्पर भावनात्मक आकर्षण भी विद्यमान होगा परन्तु आपको प्रेम के क्षेत्र में मर्यादा, नैतिकता तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा समाजिक सम्मान भी प्रभावित हो सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतति भाव में राहु के प्रभाव से पुत्र संतति की प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा परन्तु कन्या संतति अवश्य प्राप्त होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, परिश्रमी एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में मान सम्मान का भाव होगा तथा आज्ञापालन में भी तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृति स्वच्छन्द होगी। अतः यदा-कदा वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते है परन्तु इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने देने चाहिए। इससे आपसी सदभाव, विश्वास एवं मधुरता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में यद्यपि वे आपकी उपेक्षा नहीं करेंगे तथापि आपको यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं बुद्धिमान सिद्ध होंगे तथा परिश्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबरुध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे। आपकी संतति व्यवहार कुशल सक्रिय एवं आकर्षक व्यक्तित्व की होगी जिससे सभी लोग उन्हें वांछित स्नेह एवं आदर प्रदान करेंगे तथा यथोचित प्रोत्साहन भी देंगे इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार बच्चों की उन्नति से आप समान्यतया सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा सूर्य भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक सुशील स्वभाव वाला चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है तथा सूर्य के प्रभाव से वह तेजस्वी पराक्रमी शिक्षित एवं दक्षता से सांसारिक कार्यो को करने वाला होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथापि यदा कदा तेजस्विता का भी प्रदर्शन करेंगी। सांसारिक कार्य कलापों को वह दक्षता से सम्पन्न करेंगी एवं अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्यो से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। वह एक शिक्षित महिला होंगी तथा साहित्य एवं कला के प्रति भी रूचिशील रहेंगी। सूर्य के प्रभाव से उसमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी। आपकी पत्नी सुंदर आकर्षक एवं गौरवर्ण की महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी दर्शनीय होगी एवं शरीर के अन्य अंग भी पुष्ट एवं सुडौलता से युक्त होंगे। इससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। कला एवं संगीत के प्रति उनकी रूचि होगी एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में प्रवृत रहेंगी।

सप्तम भाव में सूर्य के प्रभाव से विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना होगी। आपका विवाह स्वेच्छा से चुनी हुई कन्या के साथ होगा या प्रेम विवाह भी हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। सुख दुख में एक दूसरे का पूरा ध्यान रखेंगे आप दोनों शिक्षित होंगे अतः जीवन मूल्यों तथा सिद्धांतों में भी समानता रहेगी तथा सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसे सहमति एवं सलाह से पूर्ण करेंगे।

आपका विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार में होगा तथा वे लोग शिक्षित एवं प्रभावशाली होंगे परन्तु विवाह में दहेज आदि के रूप में अल्प मात्रा में ही धन सम्पति की प्राप्ति होगी लेकिन अन्यत्र से बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण उपहार के रूप में प्राप्त हो सकते है। विवाह के उपरांत सास ससुर से आपके संबंधों में अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे को यथोचित सम्मान एवं स्नेह प्रदान करेंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा एवं सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननदों को भी अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान प्रदान करेंगे इससे परिवार में शांति तथा सदभावना बनी रहेगी।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे लाभ होगा। अतः अपने से अधिक आयु वाले व्यक्ति से साझेदारी करनी चाहिए इससे विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा मंगल भी दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि वायुतत्व एवं शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा परन्तु श्रमसाध्य क्रिया भी इसमें विद्यमान होगी। साथ ही आप समय समय पर इसमें परिवर्तन भी करते रहेंगे इससे आपको लाभ होगा परन्तु अनावश्यक परिवर्तनों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

दशमभाव में तुला राशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र, डाक्टर, इंजीनियर, इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर, पुलिस, सी आई डी, होटल प्रबंधन या कर्मचारी, अग्निशमन विभाग, पराक्रमी क्षेत्र, विद्युत ऊर्जा विभाग, विद्युत फैक्टरी आदि उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः अपने उज्जवल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए शस्त्रों का व्यापार, धातु कार्य, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरणों का क्रय विक्रय, विद्युत एवं इंजीनियरिंग उपकरण, कैमिस्ट, रासायनिक पदार्थ, होटल का स्वामित्व एवं जमीन जायदाद का क्रय विक्रय आदि से वांछित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा इन क्षेत्रों में इच्छित उन्नति प्राप्त करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार के इच्छुक हों तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपने कार्य का प्रारंभ करें।

दशमभावस्थ मंगल के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं स्नेह का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे समुचित प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक बनाएंगे। आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा तथा आप भी अपनी योग्यता एवं परिश्रम से पिता के सम्मान में वृद्धि के साथ साथ अपने क्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता की अल्पता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग कम ही लेंगे। अतः ऐसी स्थितियों की उपेक्षा करनी चाहिए एवं सामंजस्य बनाए रखना चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।

नक्षत्रफल

आप का जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि मीन तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, योनि गौ, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दु" या "दू" अक्षर से होगा यथा- दुष्यन्त आदि।

आप अपने परिवार या कुल में सर्वश्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथोचित स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। आपका शारीरिक कद भी मध्यम रहेक्षा। आप शुभकर्यों को करने के लिए हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपके सत्कार्यों से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित रहेंगे। आप विपुल धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में एक धनाढ्य व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति रहेगी। साथ ही आपमें अभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे एवं समाज में पूर्ण रूप से दूर दूर तक आपकी ख्याति रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप विविध प्रकार के सत्वगुणों से हमेशा सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में यत्नपूर्वक इनका पालन करते रहेंगे। साथ ही आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी एवं अवसरानुकूल परिवार या समाज के मध्य अपनी इस प्रवृति का आप अनुपालन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरूष होंगे एवं नाना प्रकार के शास्त्रों का आपको विस्तृत ड़ान रहेगा। फलतः एक विद्वान के रूप में भी समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप निपुण दौरान आपकी- ओजस्वी वक्तव्यों से सभी लोग प्रभावित एवं प्रसन्न रहेगे। जीवन में आवश्यक सुखसंसाधनों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे एवं पुत्र आदि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में भी सफल रहेंगे तथा वे भी आपसे भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा नियम पूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

आप एक गौरव शाली व्यक्ति होंगे एवं अपने अच्छे कार्यों से समाज में गौरव प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के विषय में भी आपको विस्तृत ड़ान रहेगा तथा समाज में आप एक श्रद्धेय एवं सम्मानित व्यक्ति होंगे। साथ ही आपका समाज में प्रभुत्व भी स्थापित रहेगा। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी व्यक्ति होंगे एवं शौर्ययुक्त कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वदा उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। अतः जीवन में आप धन वैभव से प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। काव्यशास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप परिश्रमपूर्वक ख्याति भी अर्जित करेंगे। भाइयों के प्रति आपके मन में पूर्ण स्नेह रहेगा तथा उनको आप हमेशा अपने ओर से प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहेंगे। सुन्दर वस्त्रों के प्रति आपके मन में आकर्षण रहेगा तथा इनको पहनने एवं संग्रह करने में आपकी पूर्ण रूचि रहेगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा आप एक बलशाली पुरूष होंगे। साथ ही आप पराक्रम से भी युक्त रहेंगे एवं शौर्योचित कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत तथा तत्पर रहेंगे। आप सामान्यतया प्रसन्नचित रहेंगे। परन्तु आपका स्वभाव कृपण होगा। इसके अतिरिक्त आप एक विद्वान एवं सौभाग्यशाली पुरूष भी रहेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीन राशि में पैदा होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा नासिका उन्नत रहेगी। आपके नेत्र अत्याधिक सुन्दर होंगे तथा शरीर के सभी अंग सुडौल एवं सुन्दरता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर भी पतली होगी। शिल्प या चित्रकारी के क्षेत्र में आप विशेष योग्यता एवं यश प्राप्त करने में भी सफल हो सकेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे एवं उन्हे पराजित करने में आप सर्वदा सक्षम रहेंगे। आप कई शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक ड़ान प्राप्त करेंगे एवं एक विद्वान के रूप में समाज में पूर्ण सम्मान तथा प्रतिष्ठा भी अर्जित करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी एवं इसका आपको अच्छा ड़ान रहेगा। आप एक धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा समस्त धार्मिक कृत्यों का यत्नपूर्वक आचरण करने के लिए उद्यत रहेंगे। स्त्री वर्ग में भी आप पूर्ण रूप से प्रिय एवं आदर के पात्र होंगे। आपकी

वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रायः प्रसन्न ही रहेंगे। जीवन में आप समस्त सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप सरकारी सेवा में भी तत्पर रहेंगे एवं खान से निकाले गये द्रव्यों से आजीविकार्जन तथा लाभ प्राप्त करेंगे। लेकिन स्त्री से आप प्रायः पराजित रहेंगे एवं समस्त सांसारिक कार्यों को उसी के निर्देश तथा कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव भी अच्छा रहेगा एवं अन्य जनों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नावादि में सैर करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप एक दानी पुरूष भी रहेंगे एवं यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से निकाले हुए पदार्थो से यथा शंख, मोती आदि रत्नों से पूर्ण रूपेण लाभ अर्जित करते रहेंगे। साथ ही आप अपने जीवन में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी की धन सम्पत्ति को भी प्राप्त कर सकेंगे एवं सुखपूर्वक उसका उपभोग भी करेंगे। स्त्रियोचित वस्त्रों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग की भावना रहेगी। साथ ही आपके शरीर का कद भी सामान्य ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

जल पीने की इच्छा आपकी बार बार होती रहेगी तथा दिन में कई बार इसका उपयोग करेंगे। आप अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास करेंगे तथा उससे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप एक उत्तम श्रेणी के विद्वान होंगे एवं कृतड़ता के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे तथा अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उसका उपकार स्वीकार करेंगे एवं हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपके इन सद्गुणों से अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होगे तथा आपके अधिकांश कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होते रहेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारुदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप जितेन्द्रिय पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से संयम रखकर संयमपूर्वक

जीवन व्यतीत करेंगे। आप एक चतुर तथा बुद्धिमान व्यक्ति होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने सभी सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जल क्रीड़ा में भी आपकी इच्छा रहेगी एवं इससे आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मलता से युक्त रहेगी एवं धोखा या छल का इसमें आभाव रहेगा। कई प्रकार के शस्त्रों को चलाने में भी आप निपुण रहेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप अपना अधिकांश समय आजीविकार्जन पर ही सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे। साथ ही कभी कभी आपके आय स्त्रोतों में भी बाधा आएगी जिससे आपको आर्थिक रूप से कष्ट प्राप्त करेंगे। आप को पिता से पूर्ण धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा जीवन में आनन्द पूर्वक आप इसका उपभोग भी करेंगे आप में साहस का अभाव नहीं रहेगा एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए आप प्रायः इच्छुक एवं तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप में सन्तुष्टि के भाव की प्रधानता रहेगी एवं जो कुछ भी आपके पास हो उसी में ही आप प्रसन्न रहेंगे एवं सन्तोष प्राप्त करेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारुकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही गम्भीरता से युक्त रहेंगे एवं शौर्यादि गुणों से भी आप सर्वदा सुशोभित रहेंगे। समाज में आप का आदर एक सर्वमान्य प्रधान पुरूष के रूप में किया जाएगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। साथ ही आपकी प्रवृति कंजूसी से भी युक्त रहेगी एवं धन संचय करने में विशेष रूचिशील रहेंगे। आपकी कृपणता से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न भी होंगे। आप अपने परिवार या कुल में सर्वसम्माननीय एवं श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी पारिवारिक लोग आपसे स्नेह रखेंगे। आपकी सेवा कार्यों में भी रूचि रहेगी तथा इनको करने में आप सर्वदा उद्यत रहेंगे। आपकी गमन गति तीव्र होगी तथा तेज चलना आपको रूचिकर लगेगा। आपका आचरण भी श्रेष्ठ रहेगा तथा बन्धुवर्ग के आप अत्यन्त प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

आपका व्यक्तित्व अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा। साथ ही विद्वता की भी आप में प्रवलता रहेगी। अतः सभी लोग आपका आदर करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आप धार्मिक व्यक्ति होंगे तथा विप्र एवं देवताओं के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा एवं सेवा का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु यदा कदा आप अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। आप एक दयावान पुरूष होंगे एवं दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द लोगों के प्रति आप यथाशक्ति इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप शारीरिक रूप से पूर्ण रूपेण बलशाली रहेंगे। साथ ही कई प्रकार के कार्यों को करने एवं कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे। इससे आप समाज में ख्याति तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा अपने परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

आप समाज में हमेशा एक आदरणीय व्यक्ति रहेंगे एवं धनैश्वर्य से युक्त रहकर प्रसन्नतापूर्वक उसका जीवन में उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी बड़ी होंगी एवं निशाने बाजी की कला में आप हमेशा निपुण तथा ख्याति प्राप्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के लोग पूर्ण रूप से आपके प्रभाव में रहेंगे एवं आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः समाज में आप एक उच्चाधिकार प्राप्त प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के हमेशा प्रिय रहेंगे एवं उनसे यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगे। आप में हमेशा उत्साह का भाव बना रहेगा एवं समस्त कार्यों को अपनी उत्साही प्रवृति से सम्पन्न करेंगे। साथ ही आप में वाक्चातुर्य की भी प्रधानता रहेगी एवं अपनी चतुराई पूर्ण बातों में सबको आप प्रभावित करने में सफल रहेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए फाल्गुनमास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशि का चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल प्रदान

करने वाला होगा। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर एवं कुम्भ राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की श्रद्धापूर्वक आराधना करनी चाहिए तथा वृहस्पति वार के नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत पुष्प, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए एवं वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होंगी एवं सर्वप्रकार के अनिष्ट प्रभाव दूर होकर शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्वऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या अधिक से अधिक दस-दस रुपये जितने भी रुपये सभी दे सकें) इकट्ठा कर के धर्म स्थान पर सामूहिक यज्ञ करें।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का

अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या

तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध

(जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप सरकारी पद पर हैं तो आपका मिजाज गर्म होगा। जो आपको लाभ देगा। आपके पारिवारिक संबंध सौहार्दपूर्ण रहेंगे। आपके जन्म से पहले मां-बाप की आर्थिक स्थिति खराब परंतु जन्म के बाद ठीक हुई होगी। पराई ममता या दूसरी स्त्री साथ देगी। शरीर पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। आपका परिवार ठीक रहेगा। आपकी औलाद के पास धन रहेगा। आपके हौसले बुलंद रहेंगे। आप आला किस्म के मर्द होंगे। आपको बिना यत्न बुजुर्गों का धन मिलेगा। आपके ससुराल वालों से संबंध अच्छे रहेंगे। आप धन की खूब बचत करेंगे। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी, आपका पत्नी के अतिरिक्त और भी औरतों से संबंध हो सकते हैं या दो विवाह भी हो सकते है। आपकी लड़की अच्छे घर में ब्याही जाएगी। भागीदारी के कामों से लाभ मिलेगा। आपकी ज्योतिष, कर्मकांड में रुचि रहेगी। अंत समय में आप अपने घर पर ही मौजूद रहेंगे।

यदि आपने भागीदार से झगड़ा किया, धन के लिए ससुराल वालों को तंग किया, झूठ-झूठ में विश्वास रखा, सरकार का टैक्स चुराया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से ससुराल के खानदान का समय बिगड़ जाएगा। पत्नी अस्वस्थ्य हो सकती है। 25 वर्ष तक स्त्री का सुख मंदा रहेगा। यदि आप नौकरी या व्यापार करते हैं स्वभाव गर्म होगा तो हानि होगी। सरकारी विभाग में नौकरी हैं तो गर्म स्वभाव रखना आपकी आदत होगी। कभी-कभी नर संतान से परेशानी रहेगी या आपके परिवार में लड़का नंगा या पागल हो सकता है। । यदि आप चोरी-ठगी करेंगे तो आर्थिक स्थिति खराब होती जायेगी। ज्यादा गुस्सा करना, खुदगर्जी, खुशामदी बर्बादी की निशानी हो सकती है। आपके पैर में कुछ तकलीफ होगी। पत्नी से झगड़ा, जुदाई या तलाक हो, ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नौकरी करते हैं या दुकानदार हैं तो गर्म मिजाज न रहें।
2. सरकारी विभाग में नौकर हैं तो गर्म मिजाज रखें।

उपाय :

1. घर से काम पर जाते समय चीनी खाकर पानी पीकर जायें।
2. रात को रोटी पकाने के बाद गैस-चूल्हा या चूल्हे की आग दूध के छींटे देकर बुझावें। वह गैस चूल्हा या चूल्हा/सूर्योदय से पहले न जलावें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से मैदाने जंग में हार या हानि न होगी। आप मधुरभाषी, परिश्रमी, सच्चरित्र, मृत्युरक्षक एवं भातृ सुख से पूर्ण

रहेंगे। चंद्रमा आपके सहायक हैं। चोरी से बचाव होगा। भाई से धन-दौलत प्राप्त होगी। जन्मदिन के बाद का हर तीसरा महीना श्रेष्ठ रहेगा। आप साहसी होंगे। हर प्रकार की शरारत का जवाब देने की आप में क्षमता होगी। आपके मन में शांति रहेगी। सांसारिक जीवन में भी आप योगी जैसे स्वभाव के होंगे। यदि आप साधू हो जाएं तो ऋद्धि-सिद्धि की साधना के मालिक होंगे। गृहस्थी, धन-दौलत के भंडारी होंगे। आपके परिवार में मर्दों की संख्या अधिक होगी। आपके घर में स्त्रियों में इज्जत होगी तो आपका भाग्योदय होगा। आपका पत्नी से प्रेम और सेवा उत्तम फल देगी। कुदरत लंबे हाथों से आपकी मदद करेगी। गरीबों पर तरस खाएंगे। आपके पिता को कम और माता को अधिक सुख मिलेगा। माता या पिता में से एक की लंबी आयु होगी। दिमागी शक्ति अच्छी रहेगी। लड़की की शादी में उसके ससुराल वालों से पैसा लेना जहर जैसा असर देगा। आप सरकार या विद्यापीठ से सम्मानित होंगे। आपको शतरंज-तैराकी का शौक हो सकता है।

यदि आप होस्टल वार्डनर हैं और विद्यार्थियों का सामान खुर्द-बुर्द किया, रिश्तेदारों का विरोध किया, भाई-बहन का हिस्सा दबाया या ब्याही बहन का धन लेकर वापिस न किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से भाई-बहन को अपमानित किया या भाई-बहन को दुःखी किया तो आपके घर में चोरी का भय और यात्रा में हानि हो सकती हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बहन-भाई से झगड़ा न करें।
2. यतीमों का सामान हड़प न करें।

उपाय :

1. लडकी/बहन के विवाह में कन्या दान करें।
2. दुर्गापाठ या कन्याओं की सेवा करें।
3. लड़के जन्म पर गुड़-गेहूं-तांबा दान करें।
4. लड़की के जन्म पर दूध-चावल-चांदी का दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा। 45 वर्ष की आयु तक संतान सुख के लिए समय मध्यम रहेगा। आपकी कमांडिंग बरकरार होगी। अगर आप सरकारी सेवा में रत होते हैं तो सेना या पुलिस में उच्च पद मिलेगा। आप एक जाने-माने समाज सेवक होंगे। आप अवश्य ही धनवान होंगे। आप अच्छे या बुरे तरीके से भी धन कमा कर बड़ी जायदाद के मालिक बनेंगे। 32 वर्ष से 64 वर्ष आयु तक खूब धन का आगमन होगा। आप राज सुख से युक्त रह कर शाही जीवन बिताएंगे। आप पोते-पड़पोते का सुख भोगेंगे। आपके जन्म के बाद आपके पिता की माली हालत अच्छी

होने की उम्मीद है। आप अपनी जायदाद बनाएंगे और आप कई मकान के मालिक होंगे। अपनी मेहनत से दौलत पैदा करेंगे। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। गृहस्थ जीवन आराम से गुजरेगा। आप में पूरी दिलेरी रहेगी और आपका हौसला बुलंद रहेगा। आपके यहां कई मांगलिक कार्य होंगे। मिला-जुला कर आपका जीवन बहुत सुखी रहेगा।

यदि आपने पुलिस सेना विभाग से झगड़ा किया, समाज विरोधी कार्य किये, परिवार के लोगों के साथ झगड़ा किया, नमक या नमकीन चीजों का अधिक प्रयोग किया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से 22वां वर्ष खुद के लिए कष्टकारक होगा। आप खानदान को तोड़ने वाले होंगे। आप सोना बेचेंगे तो इसका बुरा असर औलाद पर पड़ेगा। आपकी बदनामी हो सकती है। चोरी का लांछन भी लग सकता हैं कभी जेल भी जाना पड़े, ऐसी आशंका है या आपको जेल विभाग में नौकरी करनी पड़ सकती है। ननिहाल में रहना आपको मंदा फल देगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सोना न बेचें।
2. दूध उबल कर गैस चूल्हे/चूल्हे या अंगीठी पर न गिरे, न जले।

उपाय :

1. हिरण की पालना करें।
2. काने-काने, गंजे व्यक्ति की सेवा करें।

बुध

आपकी कुंडली में बुध सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुलीन होंगे। आप व्यवहार कुशल होंगे। आप प्रिंटिंग प्रेस, डाक्टर/कैमिस्ट का काम, रेडीमेड माल के व्यापार से धन कमाएंगे। नौकरी-व्यापार के लिए तो बुरा असर नहीं होगा। आप अपने काम धन्धे में 34 वर्ष की उम्र तक सफल हो सकेंगे। आपकी विदेश की यात्रा होगी। आप किसी भी प्रकार का काम करें, वह काम प्रारंभ होकर, बिखर जाएगा। आपका ससुराल पक्ष धनी और मजबूत होगा। आपकी तलवार में इतनी ताकत नहीं जितनी आपकी कलम में शक्ति है। कोर्ट-मुकद्दमे में आपकी जीत होगी। आप दूसरों के लिए भी माफिक रहेंगे। आप अपने दोस्तों या परिचित लोगों के सहायक होंगे। आपको दस्तकारी के काम, तकनीक कार्य और लकड़ी के काम में उत्तम फल मिलेगा। आपका जीवन सुलझा हुआ होगा। विज्ञापन या स्वयंवर द्वारा विवाह का योग होता है। आपकी पत्नी उच्च परिवार से होगी।

यदि आपने साहुकारा किया, भाई-साले के साथ साझेदारी की, पत्नी से झगड़ा किया, परस्त्री से चाल-चलन खराब किया तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी साली से घरेलू संबंध बनेंगे जो कि आपकी बर्बादी का कारण बनेगा। आपके विवाह में गड़बड़ी होगी। अगर विवाह में देरी हो तो 34

वर्ष की आयु तक निश्चित विवाह हो जाएगा। स्त्री से दूरी या तलाक तक की नौबत आ सकती है। आपके भाई-बंधु आपका विरोध करेंगे। झगड़ा-फसाद या मुकद्दमेबाजी या उलझन ज्यादा प्रभावी नहीं होगी। आपमें बुद्धि की कमी रहेगी। आपमें परिपक्वता देर से आयेगी। आप अपने परिवार को तोड़ सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बिना सींग की गाय या बकरी न पालें।
2. हरी घास घर में न लगावें।

उपाय :
1. हीरा पहनें/हीरे के अभाव में पन्ना भी पहन सकते हैं।
2. चीनी खा कर पानी पीकर कार्य शुरु करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से गृहस्थ जीवन में भी आप साधू स्वभाव के होंगे। आपको कोई काम करने की अधिक जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पिता दीर्घायु हुए तो आप धनवान बन जाएंगे। आपके पिता स्वभाव से दानी होंगे। नगद धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपके जीवन में कई चीज बिना मांगे या बिना मेहनत किए ही मिल जाएंगी। आपके ननिहाल खानदान के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी होगी। आपके मामा खुशहाल होंगें। आपके जीवन में सुख-शांति तो रहेगी। परंतु बहुत ठाठ-बाट नहीं रहेंगे। बुढ़ापे में आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ पर ज्यादा ध्यान देंगे। आपको पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अधिक समय तक नौकरी करनी पड़े, ऐसी आशंका है। आपके गुप्त दुश्मन नहीं होंगे। दुश्मन अगर हुए तो नष्ट हो जाएंगे अर्थात् आपको दुश्मनों पर जीत हासिल होगी। शरीर से निरोग रहेंगे।

यदि आपने कर्ज, दान-भिक्षा मांगना शुरु किया, हर समय व्यर्थ घूमते रहे, मामा, ताया-चाचा से झगड़ा किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता का सुख कम मिलेगा या 16 वर्ष की उम्र में ही परिवार का भार आप पर पड़ सकता है। पत्नी की बेकद्री करने से अशुभ फल होगा। आपका जीवन अय्याशी या ऐशो इशरत के कारण बर्बाद हो सकता है। आपके पिता, पुत्र और पुत्री के लिए ग्रह फल बहुत अच्छा नही है। आप साधू स्वभाव के मुफ्तखोर, रोगी और अय्याश होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भीख न मांगें।

2. आवारा न घूमें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान देवें।
2. पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र नौंवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्य मंदा रहेगा। 25 वर्ष के बाद का समय अच्छा रहेगा। इसलिए 25 वर्ष की उम्र के बाद शादी करें। अमीरी होने के बाद भी परिश्रम से रोटी प्राप्त होगी। तीर्थ यात्रा करना संतान के लिए शुभ है। आपके पास धन भी होगा। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति की तरह हैं। आपको मन में शक्ति मिलेगी तथा धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। नौकर-सेवकों से सुख मिलेगा।

यदि आपके घर में ढेक का वृक्ष, एल्युमिनीयम के बर्तन हुए, 25वें वर्ष में विवाह किया, छोटी आयु में मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से विवाह के बाद से आपके पीछे दुःख लग जाएगा। स्त्री, धन-दौलत पर बुरा असर पड़ेगा, ऐसी आशंका है। आप दूसरों की मुसीबत और मंदी सेहत का जंजाल अपने ही गले लगा लेंगे। आप नशे की बुरी लत के कारण बीमारियों से तंग रहेंगे। आपकी धन-दौलत की बर्बादी का कारण भाई-बंधु बनेंगे। गुप्त रोग हो सकते हैं। लोगों से एतबार पर लेन-देन का फल मंदा हो सकता है। आपको खेती-बाड़ी से अच्छा लाभ नहीं होगा। आपके और आपकी स्त्री के लिए परेशानियां पैदा होंगी। आपके पास धन-दौलत इकट्ठी नहीं होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. 25वें वर्ष में विवाह न करावें।
2. एल्युमिनीयम का बर्तन प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मकान बनावें तो नींव में चांदी के बर्तन में घहद भर कर रखें।
2. पत्नी को चांदी की चूड़ी पर लाल रंग करके बायें हाथ में पहनायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पैतृक संपत्ति और ससुराल से लाभ रहेगा। आप मान-प्रतिष्ठा से युक्त होंगे। आप ईश्वर भक्त और पूजा-पाठ करने वाले होंगे। आप आजन्म मुखिया बने रहेंगे। कमाई और खर्चा बराबर हो जाएगा। आप अपनी पहली कन्या का लालन-पालन ससुराल पक्ष को सौप दें तो आपके लिए फायदेमंद होगा। आपको जीवन में जीने की इच्छा प्रबल रहेगी। आप बाहर से देखने में

प्रभावशाली नहीं लगेंगे परंतु अपनी शक्ति और अक्ल में बहुत बलवान होंगे। कभी-कभी आप इस दुनिया से सन्यास लेने को भी उत्सुक हो सकते हैं। आपको माता का पूर्ण सुख मिलेगा। पिता के सुख में न्यूनता आ सकती है। आप में अक्ल की बारीकी और आध्यात्मिक शक्ति होगी। कोयला, चमड़ा, मकान-मशीनरी के कामों से अधिक लाभ होगा।

यदि आपने मादक चीजों-द्रव्यों का सेवन किया, सांप को मारा या सांप के जहर बेचने या प्रयोग करने से संबंधित कार्य किये या कानी भैंस पाली तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप विचारों के कच्चे, मुर्दादिल और पस्त हौसले वाले होंगे। 28वें 39वें वर्ष की आयु रोग और बीमारी में बीत सकती है। आपकी किसी के साथ दुश्मनी भी हो सकती है। आपका जुआं आदि खेलना आपके ससुराल के लिए बुरा हो सकता है। आपके विवाह के समय ससुराल में अग्निकांड हो सकता है। विद्या अधूरी रहे, ऐसी आशंका है। सगाई के दिन से ससुराल को हानि होना शुरु हो जायेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. माथे पर तिलक की जगह सरसों तेल न लगावें।
2. सांपों को न मारें।

उपाय :
1. नंगे पैर धर्म स्थान में जावें।
2. सांप को दूध पिलावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पांचवें खाने में राहु पड़ा है। आपकी 21 वर्ष आयु में प्रथम पुत्र और 42 वर्ष आयु में दूसरा पुत्र पैदा होगा। आपको पुत्रों का सुख मिलेगा, उम्मीद है। औलाद मूर्ख और आप ब्रह्मज्ञानी होंगे। आपकी औलाद से अधिक सुखी जीवन आपके पोते-पड़पोते का होगा। आप चंचल और अस्थिर बुद्धि के होंगे। आपकी माता का संपूर्ण जीवन बड़ा सुखमय समय रहेगा। धन-संपत्ति और औलाद में वृद्धि होगी। आपको भाई का सुख मिलेगा। आप परिवार और माया की ओर से सुखिया होंगे। धर्म-मर्यादा के मालिक होंगे। व्यापार आपके लिये सब उत्तम धन कमाने का साधन होगा, राज्याधिकारियों से लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी से अच्छे संबंध न रखे, उससे तलाक लिया, बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब कर ली, पिता या ससुर से झगड़ा किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आप बचपन में शरारती होकर पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगाएंगे। शिक्षा अधूरी रह जाएगी या मन के मुताबिक पढ़ाई नही कर सकेंगे। संतान जन्म से 12 वर्ष पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहेगा। पहली संतान नहीं बचे ऐसी शंका बनती है। पत्नी से तलाक या जुदाई हो, ऐसी शंका है। पत्नी से तलाक/जुदाई की तो संतान का सुख न मिलेगा। आप पाप कर्म में रत हो सकते हैं। आपको पुत्र का सुख न मिले।

आपकी सेहत बिगड़ सकती है तथा बेकार का धन खर्च होगा। आपकी आंखों की दृष्टि में भी कोई दोष उत्पन्न हो सकता है। आपके काम करने का ढंग भी स्थिर नहीं रहेगा। काम की चीजों को भी इधर से उधर करते रहेंगे। अस्थायित्व और चंचलता के आप शिकार होंगे। आपका बड़ा भाई अमीर या निःसंतान होगा, ऐसी आशंका है। समय साढ़े दस, 21-42वां वर्ष पिता या ससुर की आयु पर भारी रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूसरा विवाह न करें।

उपाय :

1. चांदी का ठोस हाथी घर पर रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज के नीचे चांदी की पत्ती लगाएं।

नोट : यदि दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले मकान में रिहाईश हो तो भी उपरोक्त उपाय जरूर करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप बहुत धन-दौलत के मालिक होंगे। इसके श्रेष्ठ फल से आप निहाल हो जाएंगे। आपको अपने भविष्य के लिए जागरूक रहना चाहिए। आपको राजपक्ष से शासन से संबंधित कार्यों में अच्छा फल मिलेगा। खानदानी जायदाद से अधिक जायदाद अपने हाथों से बना लेंगे। आपके जीवन में उत्तम राजयोग की संभावना है। आप सरकार पक्ष से या सम्मानित व्यक्ति से लाभ प्राप्त करेंगे। आप यदा-कदा हिम्मत हार बैठेंगे। आपकी औलाद शारीरिक तौर पर अच्छे स्वभाव की और अच्छे काम करने वाली होगी।

यदि आपको काम पर जाते समय कोई पीछे से कोई आवाज दे, माता से झगड़ा या माता का विरोध किया, पुत्र संतान का लालन-पालन अच्छी प्रकार न किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से संतान पक्ष को कुछ कष्ट की आशंका है। मां के साथ आपके मधुर संबंध में न्यूनता की आशंका है या माता को आपकी संतान से सुख नहीं मिलेगा। आपको हमेशा ही पेट में दर्द की बीमारी लगी रह सकती है। आपके पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् माता के सुख का अभाव हो जाएगा। माता की आंखों का आप्रेशन हो सकता है। बल्कि कुछ सुस्त या नामर्दी भी महसूस करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शुभ काम पर जाते समय पीछे से कोई आवाज दे तो शुभ काम पर न जाएं।
2. व्यतीत समय को याद न करें।

उपाय :

1. काला कुत्ता न पालें।
2. काले-सफेद पत्थर के चकले पर रोटी बेल कर बनायें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की अवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तिओं को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्चे आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति

होगी। छोटे भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट प्राप्त करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

फरवरी 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

मार्च 2025 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

अप्रैल 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

मई 2025 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी

ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रुधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

जून 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

जुलाई 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः

सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

अगस्त 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

सितम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक

मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि होगी।

नवम्बर 2025 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे

आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

दिसम्बर 2025 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारणआप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमे आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगेउसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढाव की संभावन बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते है।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप

अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जूनके बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिएवर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ मे नहीं लगेगापरन्तु 02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके

अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यो से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप

दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से

भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति

आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाऐंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे केतवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रूकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधिक काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचर मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिर्वतन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते है जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त करे लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्म प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के

संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्रप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक पेरशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

प्रथम तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा साल आपके लिए श्रेष्ठतम रहेगा। जो आप चाहते हैं उसे पाकर ही रहते हैं यही बात आपको सफलता के द्वार पर ला खड़ा कर सकती है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। मई के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। जो व्यक्ति नौकरी में परिवर्तन चाहते हैं उनके लिए मई का महीना बहुत अच्छा रहेगा।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपकी आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम माह छोड़ दिया जाए तो पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे और इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। मई के बाद रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तओं की प्राप्ति हो सकती है। आप कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। नई योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

23 सितम्बर के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगें। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। शनि ग्रह के गोचर के बाद घरेलू वातावरण के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

23 सितम्बर के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। समाज में पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपकी सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में सुधार व पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से उन्नति भी होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का शनि गर्भवती स्त्रियों के लिए अच्छा नहीं है। संतान के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आ सकती है। संतान के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा।

स्वास्थ्य

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय रहेंगे। आप दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति हैं जिसके कारण आप स्वस्थ्य रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

17 अप्रैल के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके लिए समय कुछ तनावपूर्ण हो सकता है। अपनी चिंता और व्याकुलता विजय पाने के लिए आप ध्यान या योग का सहारा ले सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर ईर्ष्या, प्रतिशोध और विश्वासघात जैसी बुरी भावनाओं को खत्म कर आपके अन्दर सकारात्मकता प्रदान करेगा जिससे आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोत का सृजन करेंगे।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी। आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती ही रहेंगी साथ ही सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पारिवारिक प्रतिकूलता के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 17 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का पाठ आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

इस वर्ष वृष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लालायित रहते हैं, वो काबिले तारीफ है। 18 फरवरी से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। हालाँकि जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा वैसे ही आपकी जिन्दगी एक तेज गति पकड़ लेगी और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा।

आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। राहु ग्रह का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए आप अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। जो व्यक्ति नए रोजगार की तलाश में है उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने कर्जे से मुक्ति मिल सकती है। फरवरी के बाद आपको अचानक धन लाभ भी होगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं का सुख प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य में भी आपका पैसा खर्च होगा।

15 अक्टूबर के बाद आपको आर्थिक मामलों में ज्यादा सावधान रहना चाहिए। निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े लोगों की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों से दूर रहें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

गुरु का गोचर आपकी माता के लिए काफी शुभ रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा। 14 जुलाई के बाद प्रेम संबंधो में भी सफलता मिलेगी। किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। आपको मित्रों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्षारम्भ आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा परन्तु 18 फरवरी से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण संतान सुख में कमी कर सकता है। अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रूकावटें आ सकती है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। 18 फरवरी से द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल रहेगा जिससे आप स्वस्थ बने रहेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परिक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। 18 फरवरी से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में मन्त्र जाप या साधना के प्रति आपकी रुचि अधिक रहेगी। आपकी अपने ईष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरु दीक्षा भी लेंगे। अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं पंचम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुद्वादश भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं द्वादश भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के लिए सामान्यतः अनुकूल रहेगा। व्यक्तिगत संबंधों में भी सुधार आएगा। जीवन के हर क्षेत्र में आपको सफल परिणाम देखने को मिलेंगे।5 मार्च के बाद अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपके व्यवसाय में कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में हैं तो अच्छा लाभ होगा और आपको मित्रों का पूरा सहयोग मिलेगा।

मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान बढ़ेगा। आप से बड़े अधिकारी आपके कामों से संतुष्ट रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद अचानक व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति होगी। इस समय के अंतराल में आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है जिससे आप अपने व्यापार को ऊँचाई तक ले जाने में समर्थ होंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के दो माह छोड़ दिये जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकीआर्थिक मेंवृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। 31 मईसे शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रशस्त होंगे।

12 अगस्त से गुरु का गोचर द्वादश स्थान में हो रहा है। उस समय आपके आर्थिक क्षेत्र में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। इसलिए आर्थिक मामलो में विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए और किसी प्रकार के जोखिम भरे कामों में धन निवेश नहीं करना चाहिए। 23 अक्तूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। चतुर्थस्थ केतु आपके पारिवारिक वातावरण में कुछ विषमता की स्थिति उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे परन्तु चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि उस विषम परिस्थिति को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देगी। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ समन्वय मधुर होंगे। आपके माता-पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। आपकेजीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाई-बहनोंके साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपके विरोधी शान्त होंगे।

संतान

आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नही तो उनकी संगत गलत हो सकती है।5 मार्च से आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ हो रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

आपके बच्चों कीशिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। बीच-बीच में आपको उनके मनोबल को बढ़ाते रहना चाहिए नहीं तो वे अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ या पेट संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। 5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

31 मई से छठे स्थान के शनि आपके अंदर रोगप्रतिरोधक शक्ति का विकास करेंगे जिससे आप स्वस्थ्य बने रहेंगे परन्तु 23अक्तूबर के बाद आप छोटी-मोटी मौसमजनित बीमारी या सर्दी-जुखाम से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि वर्षारम्भ के दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए उत्तम रहेगा। व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। तकनीकीशिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय श्रेष्ठ है।उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है।

मई से छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करा सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

5 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं

होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

12 अगस्त से द्वादशपर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं और विदेशी संपर्कों से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन गणेश जी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं दशम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक स्थिति के लिए यह वर्ष बहुत ही हितकारी होगा। आपको प्रतीत होगा कि आपके कुछ सपने अभी भी अधूरे हैं और इसलिए आप उन सपनों को पूरा करने के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आई किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। आप अपने सभी अधिकारियों की नजरों में अच्छे बने रहेंगे।

वर्ष के मध्य में द्वादश स्थान का मंगल आपके व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कुछ कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। परन्तु यह स्थिति जैसे ही समाप्त होगी, अचानक आपके कार्यों में उन्नति मिलना शुरु हो जाएगी। इस समय के अंतराल में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं। उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी। जो व्यक्ति कार्यरत हैं उनको कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। समस्त आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 18 मार्च से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपकी धर्मपत्नी का मुख्य सहयोग रहेगा। पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। अपनी पारिवारिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातार्वरण के लिए उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। परिवार में सुखी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

तृतीयस्थ केतु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके छोटे भाई बहनों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके पिताजी के स्वास्थ्य में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम है।

बच्चों के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी, जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले हैं। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी ऊर्जा मे वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नई गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपनी सेहत पर ध्यान नहीं देंगे जिसके परिणामस्वरूप आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाए रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। परीक्षार्थियों को सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति अभी नौकरी की तलाश में है। उनको मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी एवं बड़े अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और भी शुभ हो रहा है। जो व्यक्ति व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए सुनहरा अवसर चल रहा है। षष्ठस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

नवम पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। तीर्थ यात्रा या धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होती रहेंगी।

वर्ष के मध्य में द्वादशस्थ मंगल पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। इस यात्रा से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मार्च के बाद आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती है, जिससे आपके धार्मिक कार्यों में रुकावट उत्पन्न होगी।

- आठ मुखी रूद्राक्ष धारण करें या अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र पूजाघर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- सूर्य उपासना करें या प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगा। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्य स्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। इस समय को आप अपने जीवन का सबसे बेहतर समय बना सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु का संयुक्त गोचरीय प्रभाव व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अत्यधिक शुभ हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ उपलब्धियां लेकर आएगा। यह उपलब्धी नए रोजगार, पदोन्नति या किसी व्यावसायिक क्लाइंट के साथ एक सफल योजना के रूप में भी हो सकती हैं। साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। आपके कार्य व्यवसाय में जीवनसाथी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी हल निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होंगी। व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। जिससे पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्त होंगे। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों का सलाह अवश्य लें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक लेन-देन में जल्दबाजी न करें और बहुत सोच समझकर धन का उपयोग करें। आपको अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखना होगा। आर्थिक मामलों में सावधानी बरतें। कोई नया कार्य प्रारम्भ करने के लिए बेहतर समय नहीं है इसलिए कोई भी बड़ा निर्णय न लें। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि यदा-कदा आपको मानसिक रूप से अशान्त कर सकती है। परंतु इसका सामान्य कार्य-कलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उत्साह एवं पराक्रम के साथ आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में तत्पर रहेंगे। वाहन व भूमि

क्रय-विक्रय करते समय सावधान रहें क्योंकि चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि अच्छी नहीं होती।

घर-परिवार, समाज

द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 28 मार्च से आपके छोटे भाईयों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का माहौल बनेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अनावश्यक वाद-विवाद बहुत अधिक होंगे। तर्क-वितर्क की प्रवृत्ति आवश्यकता से अधिक हो सकती है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार वालों पर तथा आपके जीवनसाथी पर पड़ेगा, साथ ही उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं भी बढ़ सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न करा सकता है। बेहतर होगा की आप अपने विचारों पर नियंत्रण रखें और अपना आवेश या प्रेम दोनों ही दूसरों पर न जाहिर होने दें। घरेलू वातावरण में किसी प्रकार की विषम परिस्थिति उत्पन्न न हो, इस पर विशेष ध्यान दें।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगा। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह क गोचर आपके दूसरे बच्चे के लिए काफी शुभ है। बच्चों के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। यदि दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो इस वर्ष अवश्य विवाह हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहने वाला है। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना आदि। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

13 जुलाई से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। मानसिक तनाव, उत्तेजना, अवसाद जैसी समस्याएं बहुत परेशान कर सकती हैं। लीवर और मधुमेह की समस्या भी बढ़ सकती हैं या प्रारम्भ हो सकती हैं। दिनचर्या अनियमित रहेगी और खान-पान पर नियंत्रण रखना मुश्किल रहेगा। ऐसे में अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य में अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को नए-नए तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा।

मैनेजमेंट, प्रशासन, शिक्षण कार्य से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रैनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है। जो व्यक्ति व्यापार में अपना करियर बनाना चाहते हैं उनके लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। 12 अगस्त के बाद राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 28 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे। नवमस्थ राहु के कारण आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। किसी प्रकार की यात्रा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना इत्यादि का योग बना है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ राहु के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आ सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके दैनिक पूजा पाठ में सुधार होगा। मन्दिर जाना, धार्मिक कृत्य करना, दूसरों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर प्रसाद वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने घर में स्थापित कर, सपरिवार उसका दर्शन करें। इसके प्रभाव से ग्रह जनित सभी दोषों का नाश होगा और आपके परिवार में सुख समृद्धि का वास होगा।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(15/07/2007 - 15/07/2027)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 15/07/2007 को आरम्भ होकर 15/07/2027 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(15/07/2023 - 15/05/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/07/2007 को प्रारंभ हुई थी और वद 15/07/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 15/07/2023 जो आपके लिए 15/05/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव ओर जीवन को खतरों का परिचायक है।

सप्तम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

बुध ज्ञान का कारक है। आप विभिन्न विषयों जैसे ज्योतिष, धर्म, दर्शन आदि का ज्ञानार्जन इस अवधि में कर सकते हैं। आप योग्य, शिष्टाचारी और दक्ष बनेंगे। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे। व्यायाम में रुचि के कारण शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। चालाकी और धोखेबाजी की भावना मन में आ सकती है, मगर उससे बचना चाहिए। ज्ञान का गलत इस्तेमाल अनुचित है।

अरिष्ट से बचाव और ऊर्जा के सही दिशा में प्रयोग के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(15/05/2026 - 15/07/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 15/07/2007 को प्रारंभ हुई थी और 15/07/2027 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 15/05/2026 को प्रारंभ होकर 15/07/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न यह किसी राशि का स्वामी होता है।

एकादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 5वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको सट्टेबाजी, शेयर, लॉटरी आदि से अचानक खूब धन प्राप्त हो सकता है। धन का संचय करेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे, बुद्धि बढ़ेगी। विभिन्न स्थानों की यात्रा का मज़ा लेंगे। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे। सुगुणों में वृद्धि होगी।

अरिष्ट के बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

महादशा :- सूर्य
(15/07/2027 - 15/07/2033)

सूर्य की महादशा 15/07/2027 आरम्भ हो रही है और 6 वर्षों की अवधि के बाद 15/07/2033 समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य सप्तम भाव में अवस्थित है। सूर्य शारीरिक शक्ति, उच्च प्रतिष्ठा, नेता, प्रशासन, राज्य आदि का प्रतिनिधित्व करता है जबकि सप्तम भाव जीवनसाथी, प्रतिष्ठा की प्राप्ति और व्यवसाय में साझेदारी को सूचित करता है। अतः इस दशा में आपको मान-सम्मान मिलेगा और आप पारिवारिक मामलों में शामिल होंगे।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक संरचना उत्तम है। आपकी जीवन-शक्ति में वृद्धि होगी।

आप में सभी समस्याओं का सामना करने की शक्ति और उत्साह विद्यमान हैं। आप स्वास्थ्य लाभ करेंगे। उत्तम स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिये सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और प्रदाह से पीड़ित हो सकते हैं और यदि असावधान रहे तो हृदय की पीड़ा भी हो सकती है।

अर्थ :

आप भाग्यशाली हैं और पर्याप्त संसाधनयुक्त हैं। आप स्वभाव से उदार हैं और आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन है। आपको आपके जीवनसाथी से धन की प्राप्ति हो सकती है। आपको अचल सम्पत्ति अथवा माता से लाभ मिल सकता है। साझेदारी अथवा विदेश से व्यापार लाभदायक सिद्ध होगा। इस दशा में आपको पर्याप्त संसाधनों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आपको शक्ति, प्रभुत्व, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और इस दशा में संगठनों तथा संस्थाओं के प्रधान हो सकते हैं। आप बड़े निगमों या संगठनों के प्रबन्धक के पद के लिये सर्वाधिक उपयुक्त हैं। आप सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी वैज्ञानिक सेवाओं का चयन अपनी जीवन वृत्ति के लिये कर सकते हैं। रत्नों, पत्थरों, संगमरमर, अनाज और उपकरण आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। पेशेवर खिलाड़ियों को उत्तम और भाग्यशाली अवसर प्राप्त हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि के साथ पदोन्नति होगी, डच्चाधिकारिओं अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य-क्षेत्र में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण मिलेगा। व्यवसायियों और व्यापारियों के लिये यह दशा भाग्यशाली होगी। प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, उच्च पद प्राप्ति, यश और कार्यों में सफलता के संकेत भी मिलते हैं। आय तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

परिवार (कुटुम्ब) :

बच्चों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपको अपने विकल्पों के प्रति हठधर्मी नहीं होना चाहिए और अपने विचार दूसरों पर आरोपित नहीं करने चाहिए। अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो सकता है। आपकी माता को सारी सुख-सुविधाएं मिलेंगी

और उनकी अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि आपके पिता की मनोकामनाएं पूरी होंगी ओर उनकी आय में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे तथा निवेश में लाभ मिलेगा जबकि बड़े भाई-बहनों को भाग्यशाली अवसर की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगें। भौतिकी अर्थशास्त्र तथा कला आदि आपके उपयुक्त हैं।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(15/07/2027 - 02/11/2027)

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 02/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप में शक्ति और ऊर्जा भरपूर रहेगी। किसी भी स्थिति से निबटने के लिए आत्मविश्वास रहेगा। प्रसिद्ध संगठनों के साथ आपकी भागीदारी होगी। विवाह, अनुबंध या भागीदारी से धन प्राप्त हो सकता है। जनमानस से संबंध मधुर रहेंगे। इस अवधि में किसी महत्वपूर्ण समझौते या ठेके पर हस्ताक्षर हो सकते हैं। राजनीति में सफलता मिलेगी, विदेश यात्रा भी संभव है।

आपके पिता की आय में वृद्धि संभव है। उनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता के सुख में वृद्धि होगी। संतान की क्रियाशीलता बढ़ेगी। जीवनसाथी सब फैसले स्वयं करना पसंद करेंगे। सेवारत जातकों के धन और आय में वृद्धि होगी। उद्यमियों, व्यापारियों, सलाहकारों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा पर अत्यधिक परिश्रम से बचना चाहिए। चिड़चिड़ेपन और आवेग से बचें। उच्च रक्तचाप या संक्रमण से ग्रस्त हो सकते हैं। शीतल पदार्थ जैसे केसर, मुलैठी आदि से औषधि स्नान करें और ध्यान का अभ्यास करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(02/11/2027 - 02/05/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 02/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको धन, उच्चपद और सत्ता की प्राप्ति होगी। परिश्रम द्वारा संपदा अर्जित होगी। सुख-सुविधाओं से संपन्न रहेंगे। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं होंगी।

आपके लेखन, ज्ञान और प्रकाशनों से जनमानस प्रभावित होगा। उच्च शिक्षा से लाभ मिलेगा।

संतान से खुशियां मिलेंगी। खेलकूद, जोखिम भरे कार्य और नाटकों में रुचि रहेगी। आप में कुछ बेचैनी की प्रवृत्ति रहेगी और आप परिवर्तन के इच्छुक रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। मामा के जीवन में उत्थान आएगा। माता के स्वास्थ्य पर ध्यान दें। पिता के व्यवसाय और भागीदारी में प्रगति होगी। प्रतिद्वंद्वियों के साथ आपको निडर होकर व्यवहार करना चाहिए।

आपको गले, छाती और स्नायुतंत्र के रोगों के विरुद्ध सावधान रहना चाहिए। अत्यधिक परिश्रम नहीं करें। शुभत्व में वृद्धि हेतु सोमवार को व्रत करें और सफेद वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(02/05/2028 - 07/09/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 07/09/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। आप स्फूर्ति और उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे और प्रत्येक कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करेंगे। मकान का निर्माण कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी या साझेदार को पक्की नौकरी मिल सकती है या वे कोई वाहन खरीद सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदाताओं के लिए समय बहुत व्यस्त और शुभ रहेगा। सेवारत जातक भाग्यशाली रहेंगे। विरोधी आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे।

आपके पुत्र-पुत्रियों को स्पर्धा परीक्षा में सफलता मिलेगी। उनको स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देना होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त होगा। माता को विरोधी परेशान कर सकते हैं। उन्हें उष्मा से संबंधित व्याधियों से सावधान रहना चाहिए। छोटे भाई-बहनों को जायदाद प्राप्त हो सकती है। बड़े भाई-बहनों का खर्च बढ़ेगा। व्यर्थ की कष्टप्रद यात्राएं हो सकती हैं। मामापक्ष के लोग सट्टेबाजी और मनोरंजन में समय व्यतीत कर सकते हैं।

आपको मामूली स्वास्थ्य समस्याएं जैसे गठिया, ज्वर और रक्त की खराबी आदि कष्ट दे सकती हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ लाभकारी रहेगा।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(07/09/2028 - 02/08/2029)

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 07/09/2028 को प्रारंभ होकर 02/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपको धन की प्राप्ति होगी। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। खेलकूद और मनोरंजन में रुचि रहेगी। धनी बनेंगे। बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता होगी; समाज में सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में उत्थान के अवसर आएंगे। आपके पिता के भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। छोटे-भाई-बहनों को धन लाभ होगा। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। वे उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी को धनलाभ होगा। उनकी इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा संतोषजनक रहेगी। आपके यहां संतान का जन्म हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्य में बाधाएं आ सकती हैं। व्यापारी अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ होगा।

हृदय और उदर के रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिव जी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(02/08/2029 - 21/05/2030)

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 02/08/2029 को प्रारंभ होकर 21/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। मामापक्ष से लाभ होगा। आप सबकी सहायता करेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। ऋण प्राप्त हो सकता है। आप धनी, जायदाद से युक्त होंगे ; उच्च पद प्राप्त होगा।

जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति होगी, जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा। माता की यात्राएं होंगी, पत्र व्यवहार आदि बढ़ेंगे। भाई-बहनों की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी, लाभकारी परिवर्तन, प्रसिद्धि की संभावना है। आपकी संतान की कार्यप्रणाली उत्तम रहेगी, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहतों का समर्थन मिलेगा। नयी नौकरी या अधिक वेतन की संभावना है। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा। व्यापारीगण प्रगति करेंगे और धनवान बनेंगे।

जिगर, तिल्ली, श्वासतंत्र के रोगों और मोटापे से बचाव करें। बुरे वक्त से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(21/05/2030 - 03/05/2031)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 21/05/2030 को प्रारंभ होगी और 03/05/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। उद्योग, व्यापार और नौकरी से लाभ होगा। आपके संकोची स्वभाव के कारण परिवारजनों के साथ विचारों के आदान-प्रदान में कमी हो सकती है। स्वास्थ्य रक्षा के लिए खानपान में परहेज करें। कृषि, खनन और पृथ्वी के गर्भ से प्राप्त वस्तुओं के व्यापार में लाभ होगा। आपकी समृद्धि और

जायदाद बढ़ेंगी।

जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपके पिता शत्रुओं को पराजित करेंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा और मुकद्दमें में जीत होगी। माता धनवान होंगी। आपके भाई-बहनों को आर्थिक कष्ट होगा, उनके पिता के साथ संबंध बिगड़ सकते हैं मगर माता के साथ संबंध उत्तम होंगे। आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करना होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आपका दृष्टिकोण तर्कसंगत होगा। परामर्शदाताओं को अपने कार्य में परंपरागत निवेश करने से लाभ होगा। व्यापारीगण अपने कार्य में परिवर्तन कर सकते हैं; नयी परियोजनाओं पर कार्य कर सकते हैं।

अपने दांत और चेहरे की देखभाल करें। कष्ट से बचने के लिए उड़द की दाल, काले तिल, काले वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(03/05/2031 - 09/03/2032)

आपकी सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 03/05/2031 को प्रारंभ होकर 09/03/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार और सट्टेबाजी में लाभ होगा। साझेदारों से लाभ मिलेगा। मुकदमे में विजय होगी। आपका विवाह हो सकता है। जनमानस से व्यापार, व्यवहार द्वारा लाभ हो सकता है। आपको तरक्की, सम्मान, प्रसिद्धि, धन और सुख की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य, पद और अधिकार उत्तम होंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे जिनसे लाभ मिलेगा। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी विदेशियों से व्यवहार और अनुबंधों में सफल रहेंगे। आपके पिता को धन मिलेगा, आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। माता को अचल संपत्ति से लाभ होगा। भाई-बहनों को सट्टेबाजी या निवेश से लाभ होगा, उनकी कोई लंबी मात्रा हो सकती है या उच्चशिक्षा में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समय लाभकारी रहेगा। परामर्शदाताओं को सम्मान प्राप्त होगा। व्यापारियों को कार्य में सफलता मिलेगी। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, वाक्शक्ति सुदृढ़ रहेगी। उनकी छोटी यात्राएं हो सकती हैं, परिश्रम से सफलता मिल सकती है।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। आपको स्नायविक विकार, पेट के दर्द आदि से सावधान रहना चाहिए। कष्टों से छुटकारे के लिए समाजसेवी संस्थाओं, आश्रम आदि को दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(09/03/2032 - 14/07/2032)

आपके लिए सूर्य की महादशा 15/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 09/03/2032 को आरंभ होकर 14/07/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका समय उत्तम रहेगा। सफलता, प्रोन्नति, भूमि क्रय, उच्चाधिकारियों से सहयोग और सम्मान प्राप्त होंगे। बहुमुखी व्यापार में सक्रिय होकर खूब धन कमा सकते हैं। सरकार और जनता से सम्मानित होंगे। मित्रों से सावधान रहें क्योंकि वे बहका सकते हैं। तंत्र-मंत्र में रुचि की संभावना है। जोखिम उठाने से बचें। संतान के कारण समस्या उत्पन्न हो सकती है। सामान्य स्थान और धर्मस्थल की यात्रा का संकेत है।

जीवनसाथी को निवेश, शोध और तकनीकी क्षेत्र से लाभ होगा। पिता को सहकर्मियों से सहयोग प्राप्त होगा। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी ; यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल का वातावरण उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी संपन्न बनेंगे।

बायें कान, उदर और पैर के रोगों से बचाव करें। शनिवार और मंगलवार को उपवास रखें और शाम को हनुमानजी की पूजा करें। नमक न खायें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(14/07/2032 - 15/07/2033)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपके पिता के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आप धनवान, सुख-सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दान-धर्म में रुचि रहेगी। कला में दिलचस्पी होगी। प्रचार कार्य, धर्म में सफलता मिलेगी। सुख, प्रसन्नता, प्रसिद्धि, समृद्धि का योग है। आपके शुभचिंतक मित्र होंगे, आमोद-प्रमोद में समय बीतेगा, लघु यात्राएं होंगी और सुख-साधन उपलब्ध होंगे। मित्रों से पत्र व्यवहार लाभकारी रहेगा। छोटे भाई-बहनों से खुशी मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को भाई-बहनों, यात्रा, संचार माध्यमों से लाभ होगा। पिता को धन का लाभ और व्यापार में सफलता का संकेत है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों को भागीदारी, अनुबंधों और बुजुर्गों से लाभ होगा। उनकी आय बढ़ेगी। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी, उन्हें निवेश से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे; कुछ

परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ, परिवर्तन संभव हैं।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। पैरों में कोई मामूली तकलीफ हो सकती है। अशुभ से बचाव के लिए लक्ष्मी जी का पूजन करें।

महादशा :- चन्द्र
(15/07/2033 - 15/07/2043)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह दशा 15/07/2033 को आरम्भ होगी और 15/07/2043 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र तृतीय भाव में अवस्थित है जो मानसिक प्रवृत्ति, बुद्धि अध्ययन के प्रति झुकाव, साहस, आपके भाई-बहनों, अफवाहों, गले, हँसली, बाँहों और स्नायु तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

दस वर्षो की इस अवधि में आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और ईश्वर में आपकी निष्ठा होगी।

स्वास्थ्य :

इस अवधि में आपको सुख और उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्त्तव्यों का पालन उत्तम ढंग से करेंगे। किसी बड़े रोग या दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

तृतीय भाव का स्वामी होने के कारण चन्द्र इस बात के संकेत देता है कि आपकी धर्म-कर्म में प्रवृत्ति होगी जिससे आपका जीवन सुखमय, अनुकूल तथा सुव्यवस्थित होगा। इस अवधि में आप बहुत अधिक धनोपार्जन करेंगे और अपनी सम्पत्ति और बैंक बैलेंस में वृद्धि करेंगे। अगर व्यवसायी हैं तो नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे और अगर सेवारत हैं तो आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए नये मार्गों की खोज में रहेंगे जिसके लिए आप यात्राओं पर भी जा सकते हैं।

व्यवसाय :

आप अपनी व्यावसायिक स्थिति में सुधार के लिए यात्राओं पर जा सकते हैं क्योंकि आप सक्रिय, यात्रा-प्रिय तथा बहादुर हैं। व्यवसाय में सुधार के लिए किसी कार्य का अवसर भी प्राप्त हो सकता है। आपके मस्तिष्क में नये विचार उभरेंगे जिनकी सामाजिक और व्यवसाय के क्षेत्र में सराहना होगी और वे जीवन की उन्नति और अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन पूर्ण अनुकूल तथा सौहार्द्रपूर्ण रहेगा क्योंकि आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र की आपके पिता के भाव अर्थात् नवम भाव पर दृष्टि है। पिता के साथ संबंधों में सुधार होगा और दैनिक और व्यावसायिक कार्यों में आपकी बहुत मदद करेंगे। आपको माता से कुछ प्राप्त होने के संकेत हैं। आपके भाई-बहनों के साथ आपके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहेंगे। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और कुल मिलाकर पारिवारिक वातावरण तथा जीवन संतोषजनक रहेंगे।

शिक्षा पशिक्षण :

तृतीय भाव के स्वामी की अपने ही भाव में स्थिति आपको साहित्य, ज्योतिष और पुराणों के अध्ययन की ओर प्रवृत्त करेगी। आपकी ईश्वर में निष्ठा होगी। पत्नी से समर्थन किसी भी स्थिति में कम नहीं होगा।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(15/07/2033 - 15/05/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ होकर 15/07/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ होकर 15/05/2034 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप उपरोक्त क्षेत्रों में विफलता के शिकार हो सकते हैं। स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। दुर्घटना से सावधान रहें। आपके संवेदनशील होने के कारण छोटे भाई-बहनों से संबंध बिगड़ सकते हैं। धनहानि भी संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए दायें हाथ की अनामिका में चांदी की अंगूठी में जड़ा 5 रत्ती का असली मोती धारण करें। यह कार्य सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि के उपरांत चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए करें। अंगूठी धारण करने से पूर्व उसे दूध से धो लें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(15/05/2034 - 14/12/2034)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ होकर 15/07/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 15/05/2034 को प्रारंभ होकर 14/12/2034 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होकर 1, 4 और 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप खूब धन कमाएंगे और धनवान बन जाएंगे। आपका दबदबा अच्छा रहेगा और प्रबंधन में सख्त कदम उठाएंगे।

आप दक्ष कारीगर बन सकते हैं, अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप स्वयं उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। संतान की संख्या कम हो सकती है या संतानरहित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रातःकाल हनुमान जी की पूजा कर 6 रत्ती का मूंगा सोने की अंगूठी में, कच्चे दूध से धोकर, दायें हाथ की कनिष्ठिका में हनुमान चालीसा 108 बार पढ़ कर धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(14/12/2034 - 14/06/2036)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 15/07/2033 को प्रारंभ हुई और 15/07/2043 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 14/12/2034 को प्रारंभ होकर 14/06/2036 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। यह शुभ या अशुभ अपनी स्थिति के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपके संतान के साथ संबंध मधुर रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। प्रेम प्रसंग में सफलता मिलेगी। सामाजिक संपर्कों से प्रसन्नता मिलेगी। सट्टे में लाभ हो सकता है। हृदय रोग से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें और 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(14/06/2036 - 14/10/2037)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 14/06/2036 को प्रारंभ होकर 14/10/2037 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12 और 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप सुस्त, भाग्यहीन और भीरु हो सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा मगर आप उत्साहहीन हो सकते हैं; शत्रुओं से भयभीत रहेंगे। प्रत्येक कदम बढ़ाने में सावधानी आवश्यक है क्योंकि लोगों के आपके प्रति विश्वास में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(14/10/2037 - 15/05/2039)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/07/2033 को प्रारंभ हुई और 15/07/2043 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 14/10/2037 को प्रारंभ होकर 15/05/2039 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है। शनि द्वितीय भाव में स्थित होकर आपकी कुंडली के 4, 8,

11 भावों पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपकी आय में कमी होगी। मेहनत अधिक और प्राप्ति कम का योग है।

आपकी वाणी कटु हो सकती है, दुख बढ़ेंगे, फालतू भटकने की प्रवृत्ति हो सकती है। अवसर आपके मार्ग में आएंगे मगर आप उनका लाभ उठाने में असफल रहेंगे। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में असफलता प्राप्त हो सकती है।

धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकवर्ग द्वारा लाभ संभव है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की उपासना और शनिमंत्र के जाप के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(15/05/2039 - 14/10/2040)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 15/07/2033 को प्रारंभ हुई थी और 15/07/2043 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 15/05/2039 को प्रारंभ होकर 14/10/2040 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर बुध लग्न पर दृष्टिपात कर रहा है और अपने प्रभाव को लग्न के कार्यो पर डाल रहा है।

इस अवधि में आप गुणवान और दयालु होंगे। वेषभूषा आकर्षक रहेगी। विधि और व्यापार के ज्ञान में वृद्धि संभव है। कार्यक्षमता बढ़ेगी और सफलता सरलता से प्राप्त होगी।

ज्ञान, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि में आपकी रुचि रहेगी। धार्मिकता बढ़ेगी। स्वास्थ्य और शारीरिक बल उत्तम रहेंगे। ज्ञान का दुरुपयोग करने से बचें।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(14/10/2040 - 15/05/2041)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 15/07/2033 को प्रारंभ हुई ओर 15/07/2043 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 14/10/2040 को प्रारंभ होकर 15/05/2041 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि द्वारा प्रभाव डाल रहा है। केतु और राहु छायाग्रह हैं जिनकी कोई राशि नहीं होती। वास्तव में वे चंद्रमा के दो पात हैं। मनुष्य के जीवन पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

इस अवधि में आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। बुद्धिमत्ता बढ़ेगी। बहुत से स्थानों की आरामदायक यात्राएं होंगी। सट्टेबाजी, लॉटरी, घुड़दौड़, शेयर, सामान की जमाखोरी द्वारा धम कमा सकते हैं। दान-धर्म में धन खर्च करेंगे। दयालुता और अन्य सुगुणों में वृद्धि होगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 18,000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(15/05/2041 - 14/01/2043)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ होकर 15/07/2043को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 15/05/2041 को प्रारंभ होकर 14/01/2043 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप आप प्रसिद्धि, ज्ञान और सुख प्राप्त करेंगे। आपकी वाणी नीति और मधुरता से युक्त रहेगी। विभिन्न विषयों पर आपके विचारों की सराहना होगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से विवाद न करें, अन्यथा धनहानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें।

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें :
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(14/01/2043 - 15/07/2043)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 15/07/2033 को प्रारंभ होगी और 15/07/2043 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 14/01/2043 से प्रारंभ होकर 15/07/2043 को समाप्त होगी।

महादशा :- मंगल
(15/07/2043 - 15/07/2050)

मंगल की महादशा 15/07/2043 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 15/07/2050 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सप्तम भाव में अपनी ही राशि में स्थित है और आपकी कुण्डली में अति शक्तिशाली रुचक योग की रचना कर रहा है। मंगल की दृष्टि चतुर्थ, पंचम और प्रथम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। चन्द्र के लग्न का स्वामी होने के कारण आपको सम्पत्ति, आरम्भ, सुख और उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, उच्च सम्मान की प्राप्ति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें स्फूर्ति और पहलशक्ति होगी और आप पूरी दशा के दौरान सक्रिय रहेंगे। आप प्रतिस्पर्धी तथा स्वतंत्र होंगे और आप में रोगों से लड़ने की क्षमता होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको तापसंबंधी बीमारी, फोड़ा या संक्रामक बीमारी हो सकती है। आपकी कुछ छोटी मोटी दुर्घटनाएं हो सकती हैं। उन्हें छोड़कर आमतौर से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ होगा। आपकी खुद की कमायी सम्पत्ति होगी। आपको जमीन-जायदाद तथा माता से लाभ होगा। इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा, शक्ति और अधिकार में उन्नति तथा व्यवसाय में प्रगति होगी। आपको सफलता, ख्याति तथा सम्मान मिलेगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय या पुलिस क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। आप योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में अच्छा करेंगे। आप सामुद्रिक पदार्थों तथा कुटीर उद्योग अपना सकते हैं। आप एक सफल सर्जन या देतचिकित्सक हो सकते हैं या आपकी एक सफल तकनी की अथवा कृषि वृत्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता मिलेगी और आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का

अनुग्रह प्राप्त होगा।

व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी, कर्मचारियों की आय में वृद्धि, लाभ की प्राप्ति तथा पद में उन्नति होगी। व्यवसाय में प्रगति और उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप अपने वाहन को बदल कर नया ले सकते हैं। बुध की अन्तर दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी। जमीन-जायदाद के मामलों के लिये यह दशा उत्तम है। आपको जमीन जायदाद तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। जमीन-जायदाद के सारे मामले आपके लिये लाभदायक होंगे।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षा में सफल होंगे और किसी प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। तकनीकी विषय आपके लिए शुभ होंगे। आप विज्ञान, गणित, इन्जीनियरिंग, प्रौद्योगिकी आदि पसन्द करेंगे। आप उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और उसमें बहुत अच्छा करेंगे। इस दशा के दौरान आप व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं। आपकी नेतृत्व तथा संगठन क्षमता सामने आएगी।

परिवार :

परिवार में आप के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपको आपके बच्चे से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सुन्दर रहेगा। आपके जीवन साथी की जीवन वृत्ति सक्रिय होगी, आय में वृद्धि और लाभ की प्राप्ति होगी। अपने परिवार की शान्ति के लिए व्यवहार कुशलता तथा शान्ति से कार्य लेना होगा। आपकी माता को कुछ स्वस्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें लाभ का अवसर मिलेगा। आपके पिता को लाभ, समृद्धि तथा सम्पत्ति को प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में परिवर्तन, अचानक धन तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। बड़ों का व्यय, यात्रा तथा परिवर्तन होगा। आपके मित्रों तथा परिचितों की संख्या विशाल होगी। आपको ख्याति मिलेगी और आप अपनी नेतृत्व व संगठन की क्षमता के कारण जाने जाएंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके व्यवसाय में प्राप्ति होगी और आपको यश, ख्याति, प्रतिष्ठा और बच्चों से सुख मिलेगा। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सम्पत्ति, जमीन-जायदाद तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ परिवर्तन, स्वास्थ्य-समस्या और साझेदारी में लाभ मिलेगा। इसके बाद बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी यात्रा और व्यय होगा जबकि केतु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मानसिक तनाव होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण सुख, परिवार का आनन्द और लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपको आराम और धन का लाभ दिलायेगी जबकि चन्द्र यश, ख्याति, सफलता तथा सुख देगा।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(15/07/2043 - 11/12/2043)

आपके लिए मंगल की महादशा 15/07/2043 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 15/07/2043 को प्रारंभ होकर 11/12/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप परिश्रम और योग्यता के बल पर खूब धन कमाएंगे। जिन कामों में ऊर्जा और दक्षता की जरुरत हो, वहां आप कामयाब होंगे। अचल संपत्ति में निवेश करेंगे या वर्तमान मकान आदि की मरम्मत करवाएंगे। परिवार में शांति बनाये रखने के लिए प्रयास करने होंगे।

आप उत्साही और ऊर्जावान होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पहले किये गये निवेश से लाभ हो सकता है। जल्दबाजी में फैसले न करें। संतान के स्वास्थ्य का अधिक ध्यान रखना पड़ सकता है।

आपके जीवनसाथी भी खूब ऊर्जावान होंगे। आपके पिता को धनलाभ, घरेलू सुख का योग है। माता को साझेदारी से लाभ हो सकता है, उनकी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। खर्चे बढ़ेंगे।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी; उनकी तकनीकी और विस्तृत कार्यो में रुचि होगी। अगर वे सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे; प्रोन्नति या वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। व्यापारियों और तकनीकी विशेषज्ञों को सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(11/12/2043 - 29/12/2044)

आपके लिए मंगल की महादशा 15/07/2043 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 11/12/2043 को प्रारंभ होकर 29/12/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप बाधाओं और मुसीबतों से मुक्त होंगे। संतान सुखकारी रहेगी। सट्टेबाजी में अचानक धन प्राप्त हो सकता है। कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है, सर्जनात्मक प्रतिभा का विकास होगा। खेलकूद आदि में रुचि होगी। धनागम होगा और सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे।

आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता को धन या अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे। उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा, वे साहसी और धनी बनेंगे। उनका विवाह हो सकता है, समाज में सफल रहेंगे।

आपकी संतान अपने कार्यों में उत्कृष्टता हासिल करेगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यों में सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं के लाभकारी परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी धन कमाएंगे; उन्हें विदेश से लाभ हो सकता है।

उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले कपड़े, उड़द की दाल दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(29/12/2044 - 05/12/2045)

आपकी मंगल की महादशा 15/07/2043 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/12/2044 को प्रारंभ होकर 05/12/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज़ खत्म होगा। रोज़गार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2025

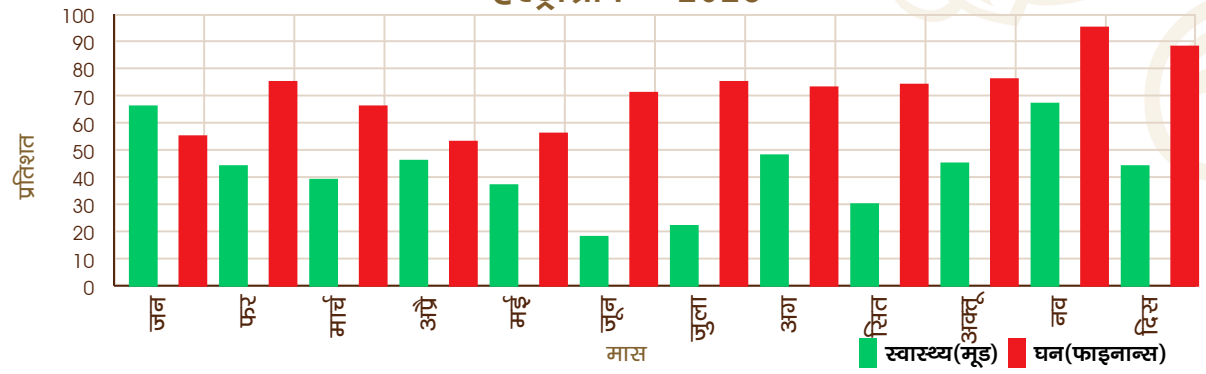

एस्ट्रोग्राफ - 2026

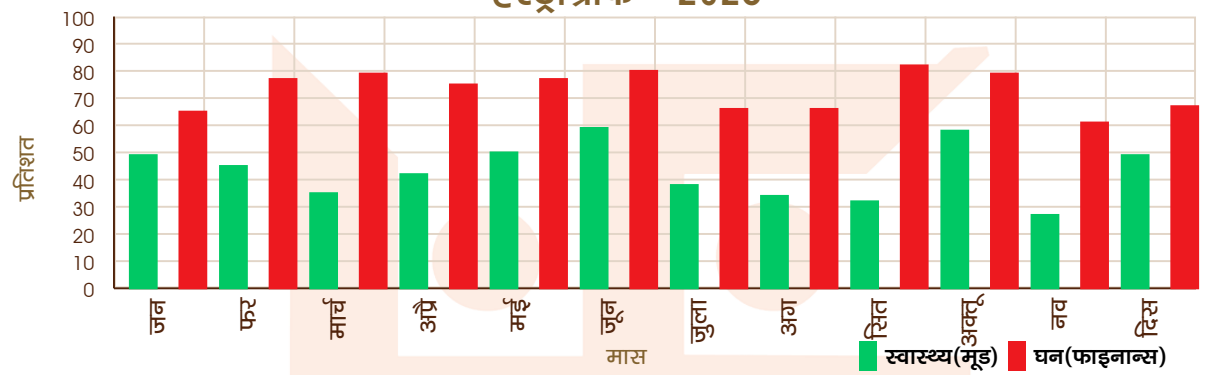

एस्ट्रोग्राफ - 2027

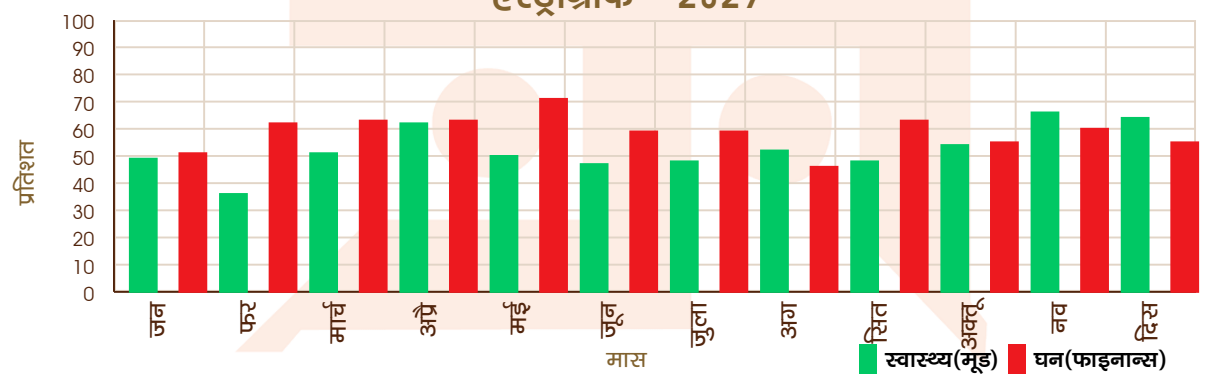

एस्ट्रोग्राफ - 2028

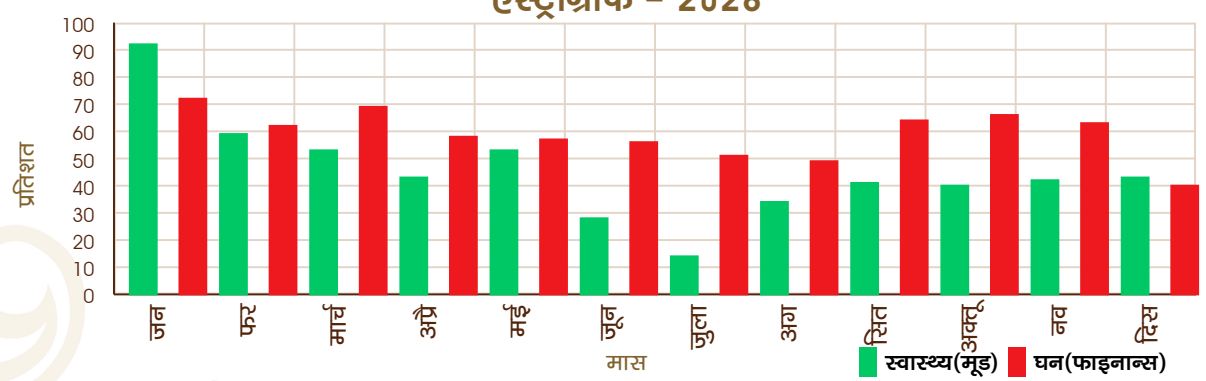

एस्ट्रोग्राफ - 2029

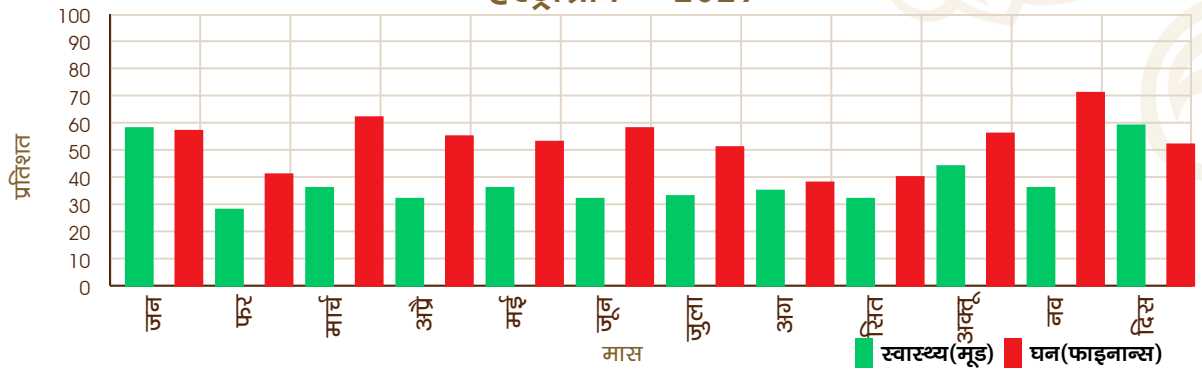

एस्ट्रोग्राफ - 2030

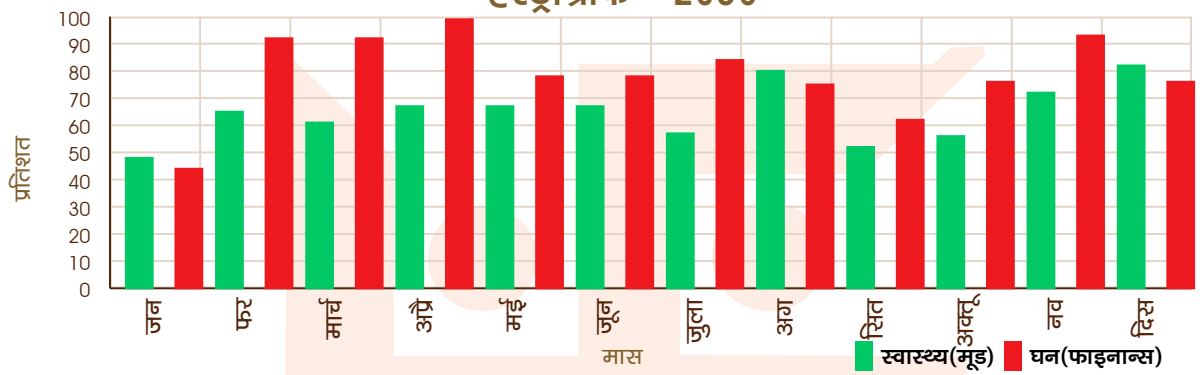

एस्ट्रोग्राफ - 2031

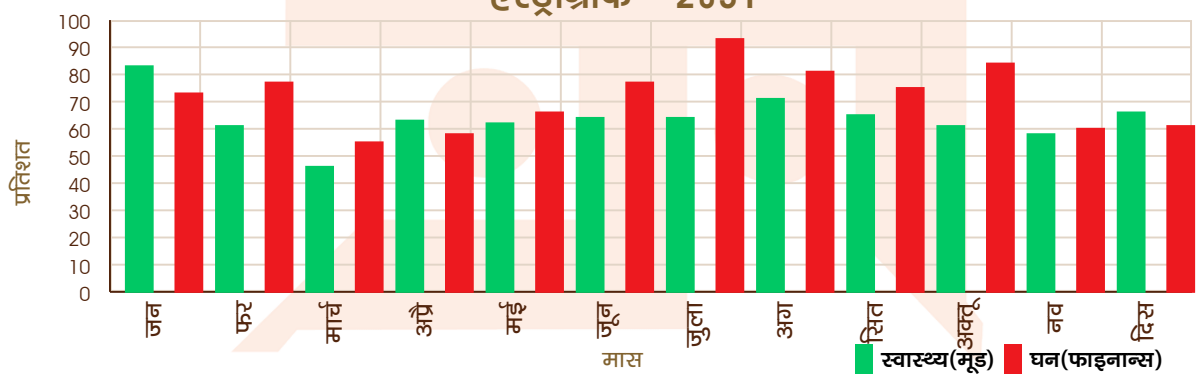

एस्ट्रोग्राफ - 2032

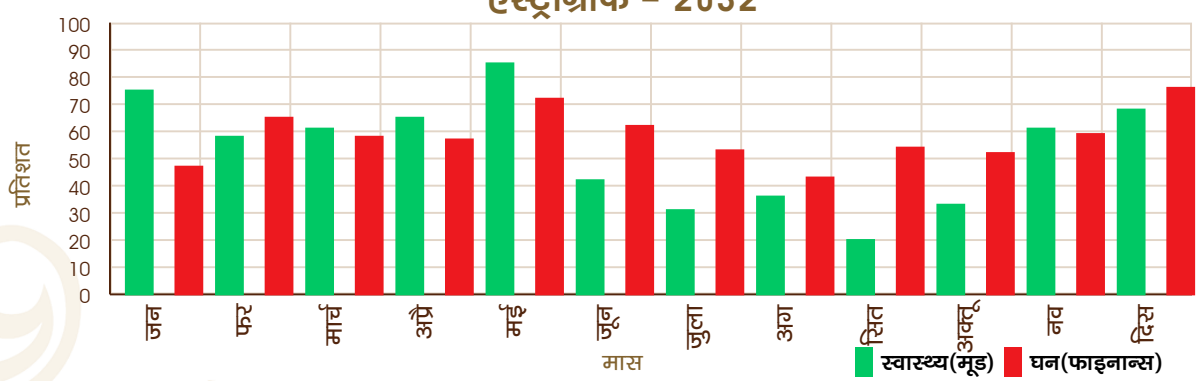

एस्ट्रोग्राफ - 2033

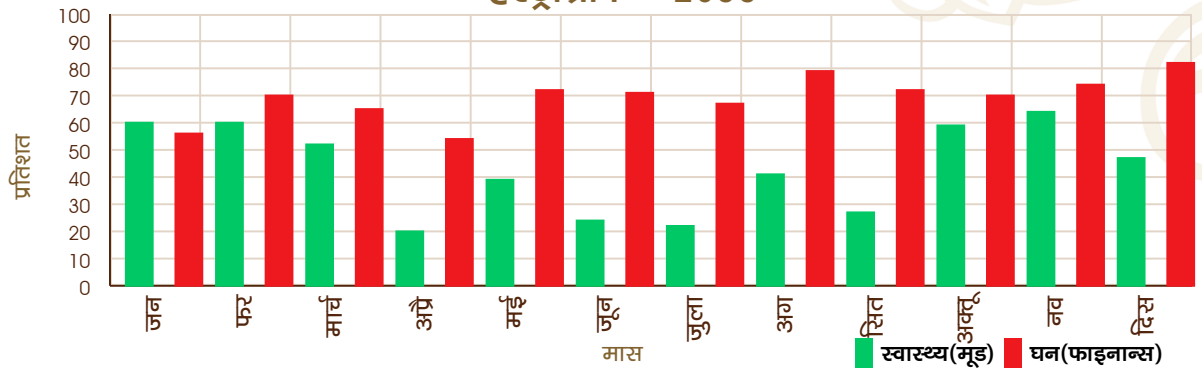

एस्ट्रोग्राफ - 2034

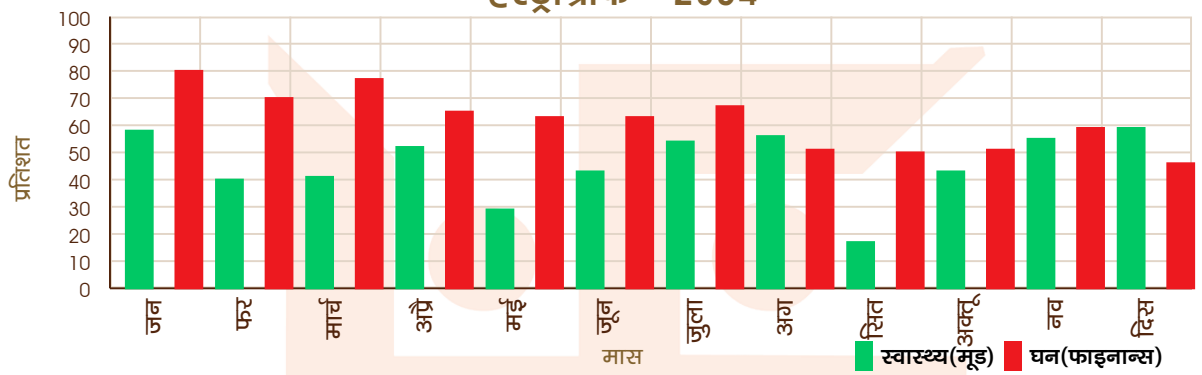

एस्ट्रोग्राफ - 2035

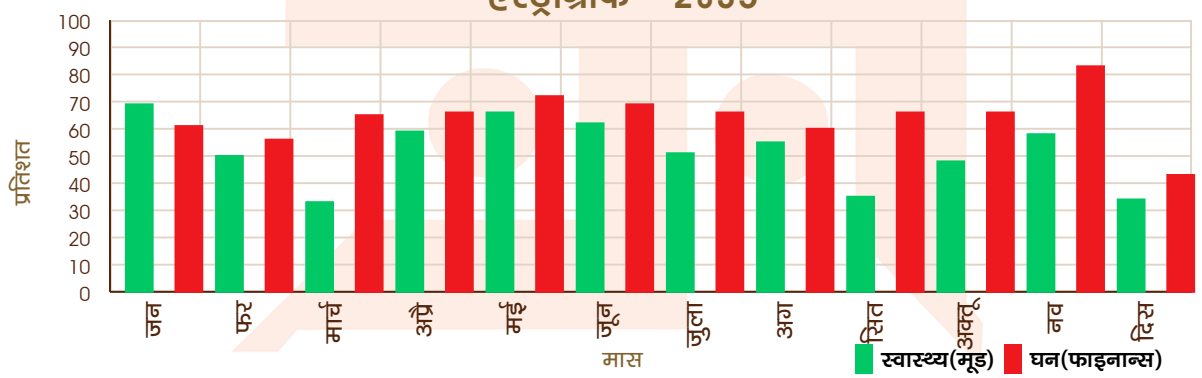

एस्ट्रोग्राफ - 2036

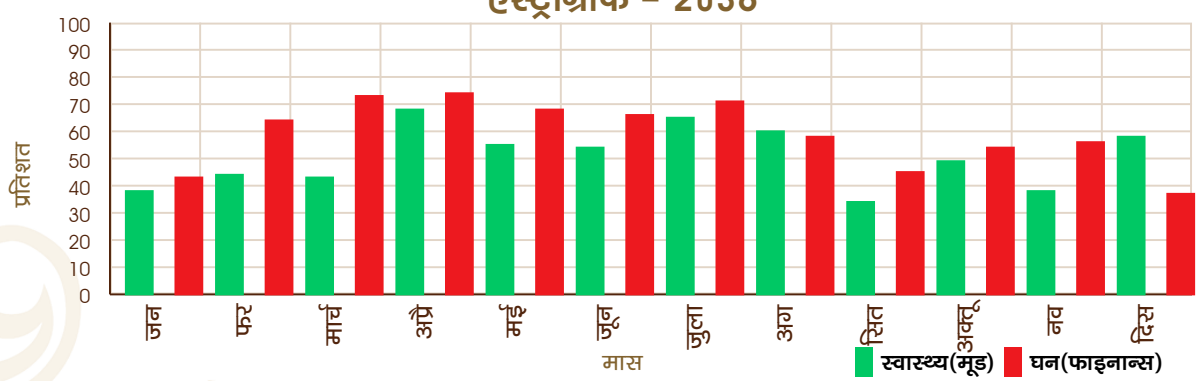

एस्ट्रोग्राफ - 2037

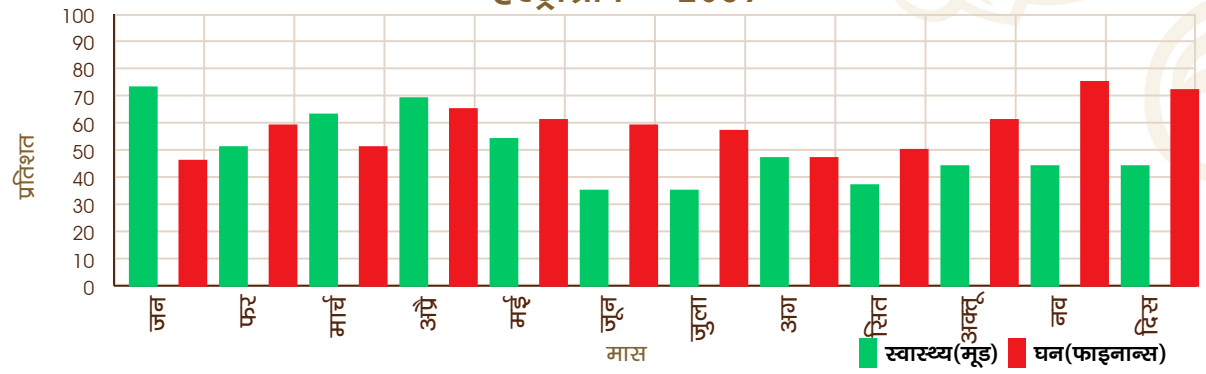

एस्ट्रोग्राफ - 2038

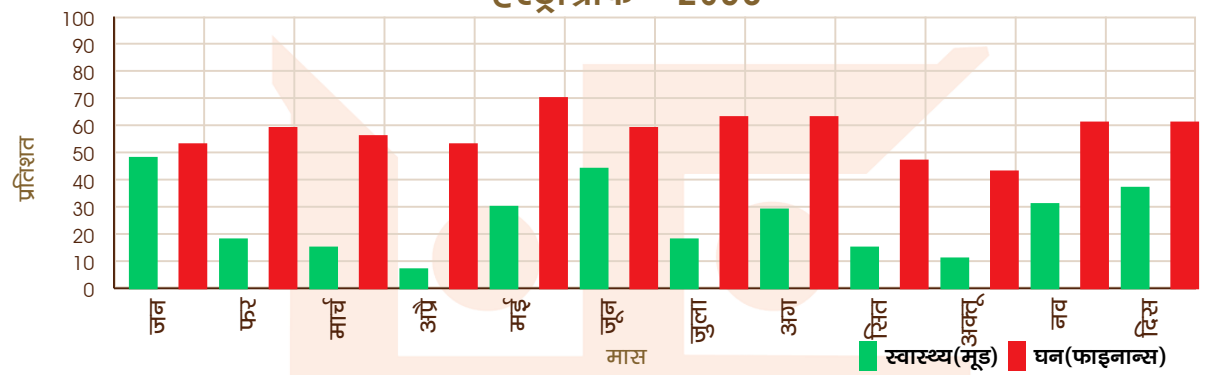

एस्ट्रोग्राफ - 2039

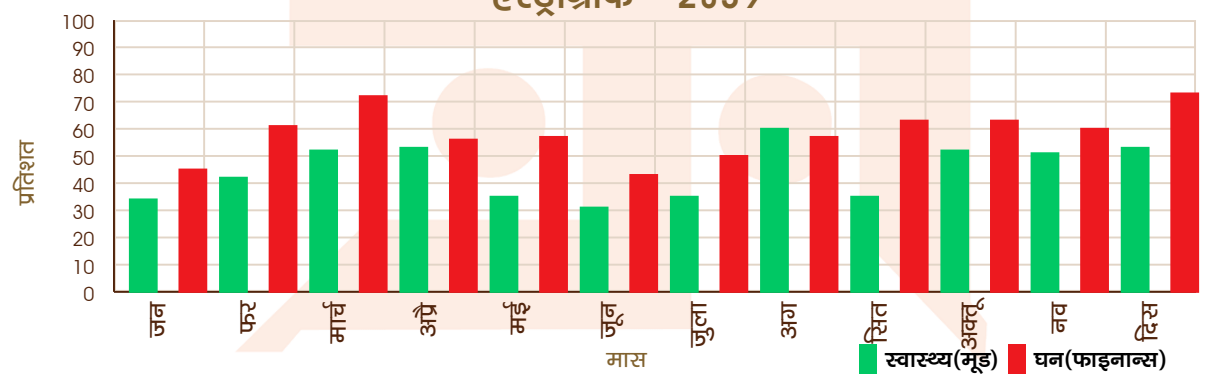

एस्ट्रोग्राफ - 2040

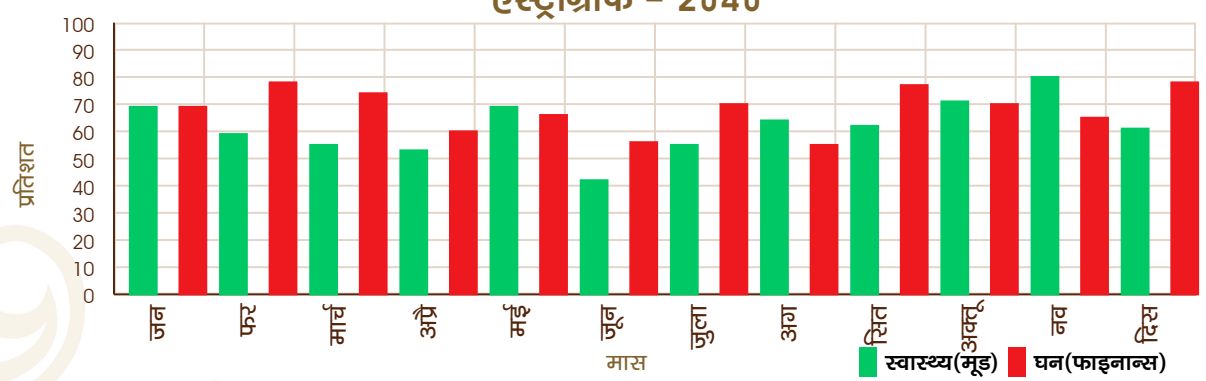

एस्ट्रोग्राफ - 2041

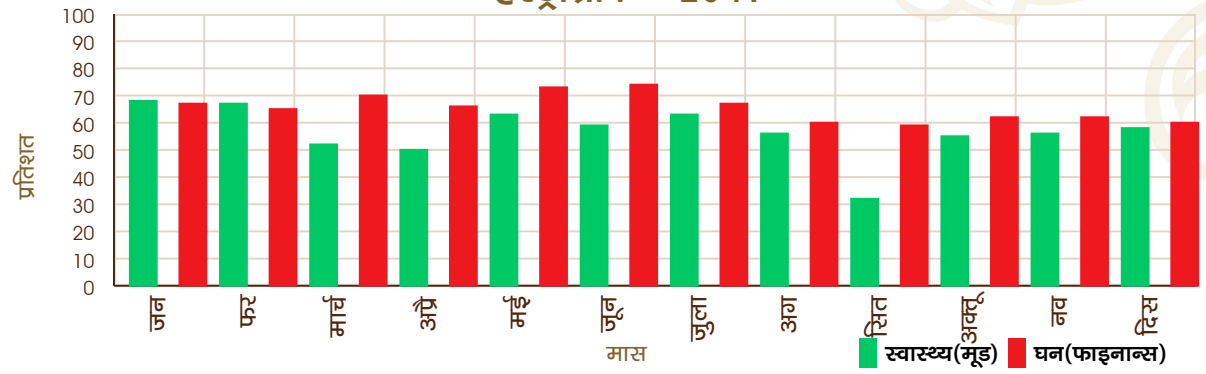

एस्ट्रोग्राफ - 2042

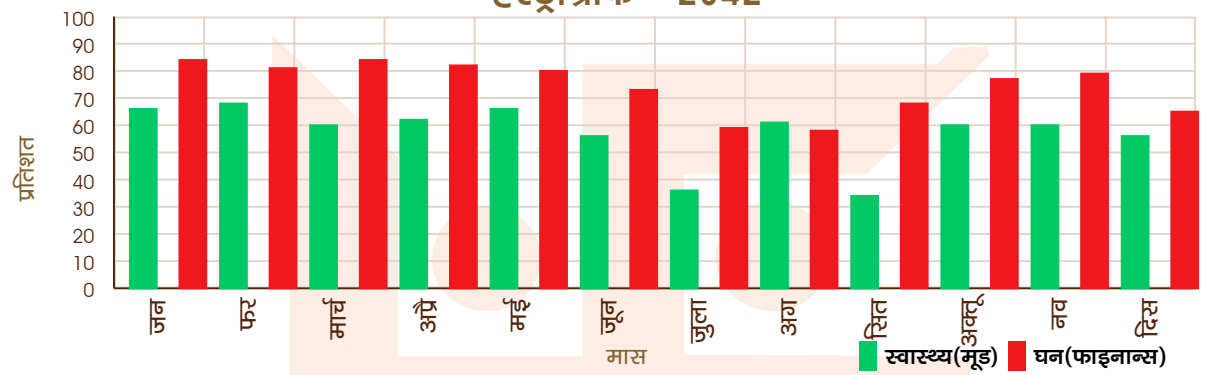

एस्ट्रोग्राफ - 2043

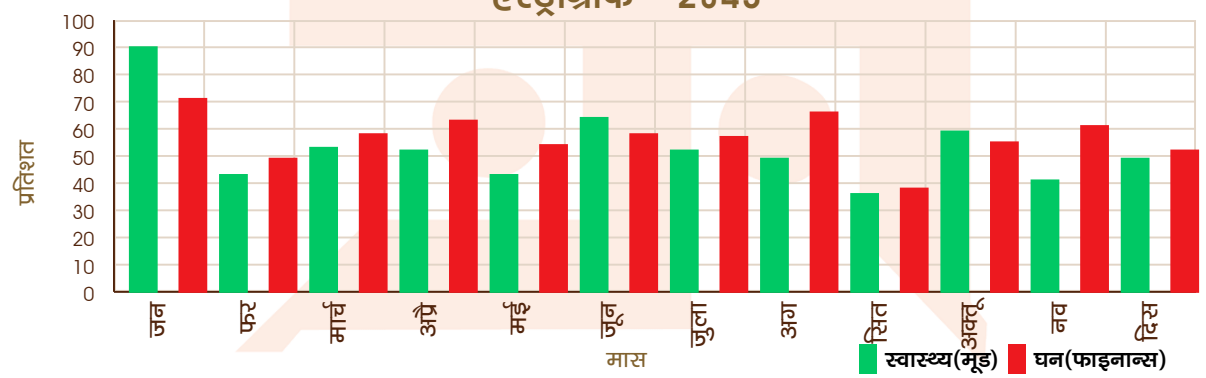

एस्ट्रोग्राफ - 2044

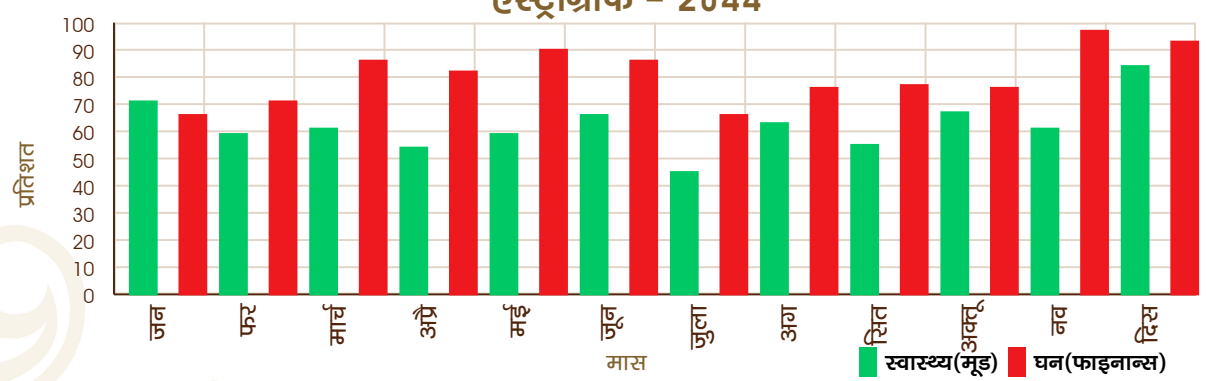

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44-45।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा

लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल पक्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

महादान योग

दानाधिपेन संदृष्टे लग्ने तन्नायकेपि वा ।
तस्मिन्केन्द्रत्रिकोणस्थे महादानकरो भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि।। अ.7/भाव-9/श्लोक-4

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश पर या लग्न पर नवमेश की दृष्टि हो वह नवमेश भी केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक महादानी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,शनि योग की संभावना : 24 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप हाथी-घोड़ा दान, तुलादान तथा महादान करेंगे। आप महादानी होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

भ्रातृवृद्धि योग

भ्रातृपे कारके वापि शुभयोगनिरीक्षिते ।
भावे वा बलसंपूर्णे भ्रातृणां वर्धनं भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो. -16 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय स्थान तथा तृतीय भाव कारक शुभग्रहों से युक्त या दृष्ट हो एवं पूर्णबली हो तो भाइयों की वृद्धि होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र,शुक्र,मंगल योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाइयों में वृद्धि हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धीर पुरुष योग

जीवान्विते धीरतया समेतः सर्वार्थशास्त्रार्थविशारदः स्यात् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-41 ।।

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश गुरु से युक्त हो तो सब अर्थ एवं शास्त्रार्थ पारंगत होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप विद्वान एवं धैर्यवान होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

दीर्घायु भ्रातृ योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभग्रह हो तो दीर्घायु भाई होते हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके भाई दीर्घायु होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

उच्च प्रासाद (भवन) प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गृहेशे स्वबलान्विते ।
तदीशे बलसंपूर्णे हर्म्यप्राकारमण्डितम् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-59 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भवन में शुभ ग्रह स्थित हो, चतुर्थेश अपने बल से पूर्ण हो तृतीयेश बलिष्ठ हो तो विशाल भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको महल (भवन) सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सुन्दर भवन प्राप्ति योग

तृतीये सौम्यसंयुक्ते गेहेशे स्वबलान्विते ।
लग्नेशे बलसंपूर्णे हर्म्यं प्राकारसंयुतम् ।।
।। जातकपारिजात ।। अ.12/श्लो.-148 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में शुभ ग्रह हो, चतुर्थेश बलिष्ठ हो और लग्नेश पूर्ण बली हो तो जातक को सुंदर भवन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शनि,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सुंदर भवन प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री-कुटुम्बी योग

कलत्रे भानौ कुटुम्बी बहुदारसक्तः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-3 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम स्थान में सूर्य स्थित हो तो जातक बहुत कुटुम्ब वाला तथा बहुस्त्री वाला होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बहु कुटुम्बी तथा आपके कई जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विविवाह योग

कारके पापसंयुक्ते नीचराश्यंशकेऽपि वा ।
पापग्रहेण संदृष्टे विवाहद्वयमादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-19 ।।

यदि जन्मकुण्डली में सप्तमभाव कारक ग्रह पाप युक्त हो अथवा नीचराशि नीचांशक में पाप ग्रह से दृष्ट हो तो द्विविवाह योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दो जीवन साथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

सुलक्षणी स्त्री योग

दारेशे शुभसंयुक्ते शुभखेचरवीक्षिते ।
शुभग्रहाणां मध्यस्थे सत्कलत्रादिभाग्भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-40 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश शुभ ग्रह से युक्त, शुभ ग्रह से दृष्ट तथा शुभ ग्रहों के मध्य में हो तो जातक को सुलक्षणी स्त्री प्राप्त होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका जीवनसाथी सुलक्षणी होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ. 303-8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में शुक्र पाप ग्रह के साथ हो अथवा नीच का हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका दो विवाह हो। यह संभाव्य है।

द्विभार्या योग

रन्ध्रेशेंगे अस्ते द्विभार्यः।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 302 ।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश लग्न में अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो द्वि भार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,राहु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

सिंहासनांश योग

''सिंहासनस्थः कुरुते विभूतिम् ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "सिंहासनांश" भाग में ग्रह स्थित हो, तो वह प्राणी ऐश्वर्य देता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "सिंहासनांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप विभूति (धन-दौलत, राज-पाट) से युक्त सभी प्रकार से राजसुख से युक्त होंगे। अर्थात् आप ग्राम प्रखण्ड एवं जिला प्रधान होंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।